तेरह मासा

Prakashika Series
No. 49

General Editor
Prof. Pratapanand Jha

तेरह मासा

अकरम क़ुतुबी

(उत्तर भारत की प्राचीन उर्दू पाण्डुलिपि का हिन्दी रूपान्तरण)

संपादक एवं अनुवादक

अब्दुल हक़

National Mission for Manuscripts

Dev Publishers & Distributors

प्रकाशक:

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

11, मानसिंह रोड,

नई दिल्ली-110001

दूरभाषः 91 11 2307 3387; फैक्स: 23073387

e-mail: directornamami@nic.in

Website: www.namami.nic.in

सह-प्रकाशक:

देव पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

द्वितीय तल, प्रकाशदीप बिल्डिंग,

22, दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन रोड

नई दिल्ली-110002

दूरभाषः 43572647

e-mail: devbooks@hotmail.com

website: www.devbooks.co.in

ISBN 978-93-80829-02-90 (series)

ISBN 978-93-80829-78-4

प्रथम संस्करण: 2020

© 2020, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

मूल्य: ₹ 250.00

Terah Masa

Akram Qutubi

(Hindi edition of Ancient Urdu Manuscript
of North India)

Editor and Translator
Abdul Haq

National Mission for Manuscripts

Dev Publishers & Distributors

Published by:
National Mission for Manuscripts
11 Man Singh Road
New Delhi 110 001
Phone: 91 11 2307 3387
E-mail: directornamami@nic.in
Website: www.namami.nic.in

and Co-published by:
Dev Publishers & Distributors
2nd Floor, Prakash Deep,
22, Delhi Medical Association Road,
Darya Ganj, New Delhi - 110002
Phone: 91 11 43572647
Email: info@devbooks.co.in
Website: www.devbooks.co.in

ISBN 978-93-80829-02-90 (series)
ISBN 978-93-80829-78-4
First published 2020
© 2020, **National Mission for Manuscripts**

All rights reserved including those of translation into other languages. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form, or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the written permission of the publisher.

तालिका

आमुख	ix
प्रस्तावना	1
अपनी बात	5
तेरह मासा	59
शब्दावली	104
संदर्भ	119
अध्ययन स्त्रोत	130
पाण्डुलिपि	133

आमुख

भारत एक ऋतु प्रधान देश है। शरद, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा एवं हेमन्त ऋतुओं के अद्भुत सौन्दर्य से आच्छादित भारत भूमि साहित्यकारों और रचनाकारों की अभिव्यक्ति की एक प्रमुख स्रोत रही है। यहाँ का जीवन-यापन, कृषि एवं संस्कृति इन्हीं ऋतुओं के इर्द गिर्द घूमती है। वर्ष काल के अनुसार बारह महीने हमारे व्यवहारिक जीवन के अंग हैं। हमारे रोजमर्रा के कार्य का आधार भी अब बारह महीने ही हैं। रचनाकारों ने इन बारह महीनों में उठने वाले प्रेम और विरह के भावनाओं को गद्य और पद्य के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाया है। वर्ष के बारह महीने में नायक-नायिका की शृंगारिक विरह एवं मिलन की क्रियाओं के चित्रण को बारह मासा नाम से जाना जाता है। भारतीय साहित्य में बारह मासा की एक लोकप्रिय परम्परा रही है। संस्कृत, हिन्दी तथा उर्दू में इसकी कई रचनायें प्रचलित हैं। बारह मासा मूलत: विरह प्रधान लोकसंगीत है, जिस में बारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन किसी विरही या विरहनी के मुँह से कराया गया हो। मलिक मोहम्मद जायसी कृत पद्मावत में 'नागमती वियोग-वर्णन', विद्यापति रचित पदावली, भिखारी ठाकुर के गीत इत्यादि बारह मासा के कुछ प्रचलित उदाहरण हैं।

लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व रोहतक (हरियाणा) निवासी अकरम क़ुतुबी ने तेरह मासा लिखा था, लेकिन अभी तक यह ग्रंथ प्रकाशित नहीं हो सका था। विषय-वस्तु को देखें तो बारह मासा और तेरह मासा में अन्तर नहीं है। उन्होंने बारह मासा से अलग हटकर तेरह मासा का एक नया विचार लोगों के सम्मुख पेश किया, क्यों कि उनकी प्रेम कहानी के वर्ष में अधिमास (मलमास) लग जाने से उन्हें तेरह महीने का वियोग झेलना पड़ा था। इस पाण्डुलिपि को पढ़ना तथा शब्दावली को समझना बहुत कठिन था। प्रोफेसर (इमीरिटस) अब्दुल हक़ जी ने इस पाण्डुलिपि को गुमनामी से बाहर निकाला, जिसका उर्दू संस्करण का प्रकाशन राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के द्वारा दो वर्ष पूर्व किया गया। विद्वानों और साहित्यकारों ने इस मूल्यवान उर्दू शायरी के

हिन्दी अनुवाद की मांग रखी। अपने अथक परिश्रम से प्रोफेसर अब्दुल ह़क़ जी ने इस पाण्डुलिपि का हिन्दी अनुवाद सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। मिशन, प्रोफेसर अब्दुल ह़क़ जी का अत्यन्त आभारी है कि उन्होंने समयबद्ध रुप में और निपुणता से इस कार्य को अन्जाम दिया।

आशा है कि भारतीय भाषाओं के प्राचीन पाण्डुलिपियों को प्रकाशित कर जनमानस तक पहुँचाने के प्रयास में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन का यह प्रयोग हिन्दी के प्रशंसकों को पसन्द आयेगा।

प्रो. प्रतापानन्द झा

निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

प्रस्तावना

कुरान शरीफ मानव जीवन के मार्गदर्शन की आसमानी किताब है। इसका अध्ययन दैनिक जीवन का हिस्सा है। इसे रुचि से बार-बार पढ़ता हूँ। इस शुभ ग्रन्थ के अतिरिक्त जिस रचना का बार-बार अध्ययन करना पड़ा, वह अकरम क़ुतुबी का **तेरह मासा** है। अपनी दूसरी पसंदीदा किताब (**कलामे इकबाल**) को भी इतनी बार ना पढ़ सका। तेरह मासे को पढ़ने में अत्यन्त कठिनाईयों के साथ आँखों की रोशनी भी बर्बाद होती रही। पाण्डुलिपि को हाथ में लेता तो तबीयत पर बोझ महसूस करता तो इसे अलग उठाकर रख देता, वर्षो तक इससे दिलचस्पी नहीं होती, बहुत ध्यान से पढ़ता तो दो एक शब्द समझ में आते तो खुशी होती, मुझे नई दुनिया पा लेने का आभास होता। फिर इसके मंथन के लिए तैयार होता। एक-एक शब्द को समझने में कई दिन लग जाते फिर भी नाकामी होती और अपनी मूर्खता पर हँसी आती, उत्सुकता का भला हो जैसे तैसे थोड़ी बहुत बात बन जाती - मुझे विश्वास है कई शब्द ऐसे हैं जिनको ठीक से ना पढ़ सका इसके लिए बेहद शर्मिंदा हूँ। पाण्डुलिपि के महत्व और इसकी प्राप्ति ने मुझे मजबूर किया कि इसके सम्पादन और प्रकाशन पर ध्यान दिया जाये।

मगर मैंने दिल में ठान लिया है कि अगर जीवन ने अवसर दिया तो अब किसी पाण्डुलिपि को हाथ नहीं लगायेंगे। शायद यह संभव भी नहीं, कि पाण्डुलिपि को देखकर अध्ययन का शौक मचल ना जाये, प्रार्थना करता हूँ कि अब किसी हस्तलिखित पुस्तक से वास्ता न पड़े ताकि पछताना पड़े।

यह तेरह मासा अद्भूत पाण्डुलिपि है जिसमें ब्रज, पंजाबी, हरियाणवी, सिन्धी, अवधि, भोजपुरी के साथ फारसी और अरबी भाषाओं की

शब्दावली और शैली ने इसे बहुत पेचीदा बना दिया है। जन साधारण और क्षेत्रियों बोलियों के शब्दों ने भी सही पढ़ने में बड़ी रूकावट पैदा की हैं। फिर लिपित शैली ने भी इसे अधिक कठिन बना दिया है। पाण्डुलिपि के लेखक ने दीवाने वली, दीवाने आबरू, दीवाने हातिम भी लिखे हैं। मुझे इन काव्य ग्रन्थों को पढ़ने में इतनी कठिनाई नहीं हुई क्योंकि वह उर्दू का साफ सुथरा रूप है। तेरह मासे की यह सूरत नहीं। यह बहुत ही अनियमित और बहुरूपी शब्दों की ग्रंथावली है, और घसीट लिखाई ने इसे मुश्किल बना दिया है। एक रूपी शब्दों के साथ बिन्दुओं और शोशों ने पहचानने में दिक्कत पैदा की है। शब्दों को मिलाकार लिखने की शैली ने भी पढ़ना दूभर कर दिया है। प्राचीन भाषा के साथ शब्दों की बहुतायत भी आश्चर्यजनक है। अरबी, फारसी और हिन्दी शब्दावली का समागम और बोलने और लिखने में काव्य की आवश्यकताओं के साथ तब्दीली भी की गई है। लेखक को अपनी असफलता स्वीकार है। इसलिए पाण्डुलिपि की स्केन कापी भी प्रस्तुत की है। ताकि गुणवान पाठक संदेहपूर्ण शब्दों को सही करें। लेखक को विभिन्न जगहों पर लिखे हुए शब्दों के अनुकरण पर निर्भर करना पड़ा क्योंकि मैं उन्हें भलीभाँति नहीं समझ पाया। नकल करने में भी मुझसे गलतियाँ हुई हैं। मुहम्मद अफ़ज़ल की बिकट कहानी के बाद यह तेरह मासा लोकसाहित्य की दूसरी कीर्तिमान रचना है। इसकी अपनी अलग विशेषताएँ हैं। जो दूसरे बारह मासों में नहीं है। अब तक के शोध के अनुसार इनकी तीन पाण्डुलिपियों को रेखांकित किया गया है। जिनमें यह सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है। इसकी एक नकल ब्रिटिश म्यूजियम लंदन में है दूसरी लाहौर में है तीसरी अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में हुआ करती थी, जो अब नहीं है। लाहौर और लंदन के नुस्खों तक कोशिश के बावजूद मेरी पहुँच ना हो सकी। मजबूर होकर मुझे अपने व्यक्तिगत नुस्खे पर भरोसा करना पड़ा। कहीं-कहीं प्राचीन लिखित शैली को यथावत रखने की कोशिश की गई है। ताकि उस समय की भाषाई और इमलाई रूपों

के अध्ययन को समझा जा सके लगभग चालीस साल से यह पाण्डुलिपि मेरे पास है। शाह हातिम के प्राचीन दीवान के प्रकाशन के बाद कभी-कभी तेरह मासे को पढ़ता और निराश होता और इसे चुपके से रख देता। अब आयु के अन्तिम पड़ाव में इसके महत्व का अन्दाज़ा हुआ तो थोड़ी सी रुचि पैदा हुई, अब इसे पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करके प्रसन्नता प्राप्त हो रही है।

लेखक उस समय की रचनाओं को दहली स्कूल का शानदार काव्य स्वीकार करता है। विश्वास है उस युग के बुर्जुग रचनाकारों ने स्वाति के बादल बनकर काव्य रचनाओं को सींचा है। बल्कि सच्चाई यह है क़ुतुबी का दौर दहली स्कूल का प्रथम दौर है। जिसकी काव्य परम्परा ने दहली की काव्य रचनाओं को जिन्दगी दी है। यह भी दिलचस्प बात है उस दौर की काव्य शैलियों के स्रोत ने उस युग की काव्य रचनाओं को मूल्यवान बनाया है। दहली शायरी की बहुत सी विशेषताएँ किसी न किसी रूप में प्रारम्भिक कवियों के यहाँ मौजूद हैं।

अकरम क़ुतुबी की यह वर्णनात्मक कहानी आबरू, हातिम वगैरा की लम्बी कविताओं की रचना में बड़ी सहायक हुई हैं। क़ुतुबी के बाद भाषा और शैली के सुधार का रूजहान जन्म लेता है। लोक और क्षेत्रीय शैली भी सफर में साथ देती हैं। यही लोक शैली जन साधारण की बोल चाल में एक आन्दोलन का रूप लेती है। जिसकी बुनियाद पर मीर की काव्य रचनाओं का महलसरा आबाद हुआ। अकरम क़ुतुबी के समक्ष मुहम्मद अफ़जल की बिकट कहानी है उन्होंने उससे भरपूर लाभ उठाया है। दोहों की पंक्तियों और संयुक्त शब्दों के साँचों में जगह-जगह प्रभाव विद्यमान है। बिकट कहानी की भाषा और शैली सरल और धाराप्रवाह है। जबकि क़ुतुबी का कलाम बहुत मुश्किल और झोल से परिपूर्ण है। अफ़जल और क़ुतुबी की रचना में सौ साल का अन्तर है। प्राकृतिक रूप से शताब्दी पश्चात भाषाई विकास में परिवर्तन आवश्यक था। जैसा कि आबरू, हातिम के

समकालीन कवियों की रचनाओं में दिखाई देता है। शायद क़ुतुबी ने लोक कविताओं के कारण इस स्वर को स्वीकार किया है। सच्चाई यह है कि क़ुतुबी की इस रचना को प्राथमिकता प्राप्त है। उत्तरी भारत के अन्य कवियों की रचनाएँ इस प्राचीनता के रूप में सामने नहीं आ सकी है। इस सन्दर्भ में क़ुतुबी का यह तेरह मासा उत्तरी भारत का प्राचीन पूर्ण काव्य ग्रन्थ जो दुर्लभ हस्तलिखित नुस्खा है। दूसरी पाण्डुलिपियों के ना मिलने के कारण मैंने हाशिये नहीं लिखे हैं, जिसमें दूसरे नुस्खों से अन्तर प्रस्तुत करने का अवसर ना पा सका। प्रयत्न किया गया है कि किसी प्रकार सही मूलपाठ (Text) को पेश किया जाए। शब्दकोष में यथार्थ संभव कोशिश की गई है कि Text की शब्दावली को सरल बना दिया जाए। हालांकि गिनती के कुछ शब्द ऐसे भी है जिनके अर्थ तक पहुँच न हो सकी, जिसके लिए संपादक क्षमा चाहता है। मैं व्यक्तिगत रूप से संघ मित्रा बसु का आभारी हूँ। इस पाण्डुलिपि के प्रकाशन में उन्होंने विशेष दिलचस्पी ली। जिसके कारण इस पुस्तक का प्रकाशन संभव हो सका। बीवी, बच्चों और मित्रों का भी हृदय से आभारी हूँ।

अब्दुल हक़
प्रोफेसर इमरेटस
दिल्ली विश्वविद्यालय

अपनी बात

हमारी आलोचना ने लोक साहित्य का आदर न करके बड़ी हानि पहुँचाई है। सुन्दर भाषा की खोज का प्रयत्न अपनी जगह, परन्तु लोक स्तर पर लिखी जाने वाली रचनाओं का बड़ा महत्त्व है। आलोचनात्मक दृष्टि ने लोक साहित्य की अवहेलना की है। उर्दू को नगरीय उच्च कोटि की संस्कृति का प्रतिनिधि करार दिया गया है। गाँव, कस्बे और बाज़ारी भाषा शैली को कमतर समझा गया। जिसके कारण लोक रचना का माध्यम ना बन सकी। मीर ने दकन के रचना साहित्य की पूँजी को कमतर होने की मोहर लगा दी। प्रारम्भिक और प्राचीन काव्यात्मक परम्परा पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया। शैली के सन्दर्भ में कुछ दोहों पर ध्यान दिया गया। उत्तरी भारत में काव्य रचना का प्रारम्भ लोक साहित्य से हुआ जिसमें आम आदमी की निजी भावनाओं को सादगी के साथ प्रस्तुत किया गया। जिसे हम आज लोकगीत या लोक रचना का नाम देते हैं। इस प्रकार की रचनाओं का सबसे प्रमुख उदाहरण बारह मासे का है।

वर्णनात्मक दृष्टि से पूर्ण रचना के नमूने इस विधा में सामान्य रूप से मिलते हैं। अब तक की शोध के अनुसार मुहम्मद अफ़ज़ल (1625 ई.) की बिकट कहानी उर्दू काव्य रचना का प्रथम उदाहरण है जो लोक साहित्य की प्रथम कलाकृति भी है।

परम्परागत साहित्यक विधाओं से अलग यह उर्दू की प्रथम और नितान्त रूप से नई साहित्य विधा है। जो कसीदे, ग़ज़ल और मसनवी से भिन्न है। बारह मासा पूर्ण रूप से स्थानीय लोक साहित्य है। जो इराक़ व फारस से अलग उर्दू शैली का अनुवादक है। स्थानीय भावना के अनुवाद

भी भिन्न है, शब्दावली व प्रस्तुती के माध्यम भी अपरम्परागत है। समय की आवश्यकता ने विवश किया है कि हम पूर्ण रूप से ध्यान केन्द्रित करें और लोक साहित्य की कलाकृतियों के शोधात्मक ग्रन्थों से साहित्यिक पूँजी की बढ़ोतरी का स्वागत करें। संसार का लगभग प्रत्येक साहित्य प्रारम्भिक स्तर पर सामान्य जन बोलियों पर आश्रित है। सामान्य जन की भाषा की यही पूँजी भाषा शैली की अनियमिताओं को दूर करके अच्छी से अच्छी सफलता प्राप्त करता है। यदि हम खुसरो की उर्दू काव्य रचना को स्वीकार करें तो वह परम्परा लगभग चार सौ सालों पश्चात भी बाकी रहती है। हालाँकि यह बात तार्किक रूप से विवेकपूर्ण नहीं लगती। अफजल और अकरम क़ुतुबी का कलाम इस परम्परा की मिसाल हैं। यही उर्दू का प्रारम्भिक ख़मीर है, जो हमारे लिए ध्यान केन्द्रित प्रकाशमय बिन्दु भी है। जिससे प्राचीन संस्कृति व सभ्यता की जीवन शैली का पता चलता है। इस बिन्दु दृष्टि से भी बारह मासा की बड़ी विशेषता है। लगभग प्रत्येक रचना में उस काल के रहन-सहन का थोड़ा बहुत अंश मिलता है। जैसे बरसात के प्रारम्भ से पूर्व मकानों की छत और छप्पर की मरम्मत ग्रामीण और कस्बाती जीवन का मामूल रहा है। भूत-प्रेत, टोने-टोटके, जादू, हकीम वैद्य, इश्क व मुहब्बत पीरी मुरीदी, सावन के झूले, बसंत में बसन्ती रंग के लिबास पहनना, होली के हंगामे, अबीर व गुलाब पाशी, जियारत (दर्शन) और मेले-ठेले में खुशमिजाजो के प्रेम प्रसंग इत्यादि। सामाजिक जीवन के दिलकश पहलू हैं। जिनकी चर्चा होती रही है। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक पहुँच का सबसे प्रभावपूर्ण माध्यम इतिहास नहीं रचनायें हैं।

उर्दू का यही प्राकृतिक स्वभाव था जो बदल कर या प्रगतिशील कार्य की खराद पर काटछांट के माध्यम से सभ्य नगरीय भाषा में ढ़लता गया और नगरीय सभ्यता का आकर्षक सौन्दर्य ठहरा। लोकजन में प्रचलित स्थानीय बोलियों के शब्दों का एक बड़ा ज़खीरा धीरे-धीरे अप्रचलित होकर प्रचलन से बारह होता रहा और वह काव्य रचनाओं से अपमार्जित

होते रहे। भाषाई इतिहास अग्रसर होता रहा। मिर्जा मज़हर जान जानां ने "बमुवाफिक़ मुहावरा शाहजहाँबाद" का नारा दिया। उसके बाद आबरू ने फारसी से अलग होने का ऐलान कर दिया-

वक्त जिनका रेख्ते की शइरी में सर्क है
उन सैती कहता हूँ बूझो सिर्फ मेरा ज़र्फ़ है

जो कि लावे रेख्ते में फार्सी के फेल व हर्फ
लग्व हैं गे फेल उस के रेख्ते में हर्फ हैं।

शाह हातिम ने दीवान के मुकद्में में पुरज़ोर तारिफ की है कि यह उर्दू का फारसी के खिलाफ एक ऐलान था।

उर्दू का भाषाई सफर सामान्य जन से विशिष्ट वर्ग की ओर बढ़ा। फिर लाल किले की दीवारों और द्वार ने स्वागत किया। शाह मुबारक आबरू का फैसला एक भाषाई विधान का चलन स्वीकार किया गया। इस भाषाई विवेक की प्राकृतिक आवश्यकता थी कि उर्दू को प्रत्येक दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर बनाया जाये। भाषाई स्वयं अधिकारिता का ऐलान एक प्रवृति बन कर प्रकट हुआ। सब कवि नई काव्य, और भाषाई परम्परा पर चल पड़े। यह लोकजन का स्वभाव बन गया। उसकी एक बड़ी दलील हातिम की प्रस्तावना है जो दीवान ज़ादा के मुकद्में में सम्मिलित है।

"बन्दा दरी अम्र बमुताबिअते जम्हूर मज्बूर अस्त"

उन्होंने प्राचीन दीवान के मत्न (Text) को बदल दिया और 'दीवान जादा' नाम रखा। शाह हातिम के प्राचीन दीवान और नए संकलन को देखिए तो साफ भिन्नता दिखाई देगी। क़ुतुबी काल के शब्द अप्रचलित करार पाये। तेरह मासा पढ़ने के बाद आभास होता है कि क़ुतुबी के समय में ही यह प्रवृत्ति बढ़ने लगी थी। इसलिए कि Text में बहुत से ऐसे दोहे

हैं जो बहुत ही साफ सुथरी भाषा रखते हैं और लोक मन¨वृत्ति से अवगत कराते हैं। जैसे-

अरे क़ुतुबी करो कुछ फिक्र ऐसा
कि मिट जावे जन्म का दुख अन्देसा

मेरे वाली मुझे दारु बताओ
शिताबी दोस्त का मुखड़ा दिखाओ।

यह भाषा आबरू हातिम के समय की है। यह साफ सुथरी स्वभाविक धारा प्रवाह भाषा के भविष्य का पता देते है।

कोई जाकर कहे मन मोहनी सैं
सलोनी साँवली मन मोहनी सैं

कहाँ तक क्या कहूँ इस राज़ की बात
नहीं आखिर हुआ इस ग़म का तूमार।

दो एक जगह काफिये की पाबन्दी ना करके क़ुतुबी ने छंद के नियमों की अवहेलना की। कहानी में और भी कई पंक्तियाँ हैं जो काफिये की पाबन्दी से आजाद है, कहीं नियमों की अवहेलना अच्छी भी लगती है।

इस काव्य विधा का सम्बन्ध सामान्यजन से था। यह लोग भी स्थानीय थे। स्थानीय कविताओं की परम्पराओं का स्रोत संस्कृत भाषा साहित्य है। वहाँ बारह मासे की ऐसी परम्परा ना थी। परन्तु स्थानीय मौसमों, रहने वालों की भावनाओं से भरपूर काव्य साहित्य मौजूद था। जो हिन्दी साहित्य की मशहूर परम्परा और काव्य विधा बनकर उभरा और प्रचलित

हुआ। इसका एक बड़ा स्रोत मलिक मुहम्मद जायसी की पद्मावत है। इस स्रोत ने रचनाकार को प्रवृत्ति प्रदान की। जिसमें उर्दू भी प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हुई। जन लोक की ध्वनि शैली का भाषाई चमत्कार था, जिसमें रचना का ऐसा अद्वितीय प्रमुख काव्य अस्तित्व में आया। उसे आप भाका कहे अथवा अवधि, परन्तु पद्मावत की भाषा और विषय ने माहिये को प्रभावित किया। पद्मावत का एक भाग मौसमों के बयान के लिए समर्पित है। जिसमें भिन्न-भिन्न मौसमों के प्रभाव की चर्चा की है। जो मानवीय भावनाओं में आवेश और विवेक बन कर जाग्रत होते हैं और प्रेमी को बेचैंन करते हैं। पद्मावत सत्य और असत्य का बड़ा संगम है, जिसमें सभ्यताओं के सौन्दर्य को काव्य शैली में प्रस्तुत किया गया है। यही नहीं बल्कि दो सभ्यताओं के पात्रों की सुन्दरता और प्रेम के मिलन से सुशोभित किया गया है। यह समय की आवश्यकता ही नहीं दूर दृष्टि को प्रस्तुत करने का नाटकीय हस्तक्षेप भी था। पद्मावत अफज़ल की बिकट कहानी से लगभग सौ साल पहले की रचना है। उर्दू का यह प्रथम बारह माहिया पद्मावत से काफी सीमा तक लाभान्वित है। अफज़ल जायसी से लगभग आठ सौ किलो मीटर दूर का रहने वाला है। परन्तु भोजपुरी भाषा का प्रभाव बिकट कहानी में बहुत प्रकट है। क़ुतुबी के तेरह मासे पर भी अवधि के चिन्ह देखकर आश्चर्य होता है कि हरियाणा के रहने वाले दोनों कलाकार पूरब में रचित होने वाले साहित्यिक महान कलाकृति की भाषा और शैली से इतने निकट हैं। बिकट कहानी की रचना के लगभग सौ साल पश्चात अकरम क़ुतुबी ने यह तेरह मासा लिखा है। वस्तुतः उर्दू में बारह मासे की परम्परा की यह द्वितीय सुन्दर कहानी है। और कई पहलू से यह बहुत भिन्न भी है। लेखक की दृष्टि में यह अमूल्य रचना है।

उर्दू में इस साहित्यिक विधा की कई रचनाएँ हैं जिस पर उचित रूप से ध्यान नहीं दिया गया। यह लोक साहित्य की नींव की प्रथम ईंट है। कम से कम बारह मासे की शोध यही कह रही है - यह कथन उत्तरी हिन्द के

सन्दर्भ में है। डॉ. तनवीर[1] अहमद अलवी मरहूम ने बारह मासे के Text की प्रतियों का विश्लेषण करके उसको अपनी पुस्तक में सम्मिलित किया है। उनके अतिरिक्त अन्य शोधकारों ने दूसरी रचनाओं को भी रेखांकित किया है। मेरे गुरु डॉ. अब्दुस्सलाम सन्देलवी ने रेहान गोरखपुरी के बारह मासे का परिचय करवाया है। गफ्फार शकील ने मुस्लिम युनिवर्सिटी के संग्रह में उपलब्ध अकरम क़ुतुबी के तेरह मासे का परिचय कराया। ज्ञात करने पर उन्होंने बताया कि यह पाण्डुलिपि अब पुस्तकालय में मौजूद नहीं है इसका Text डॉ. तनवीर अहमद अलवी को भी प्राप्त ना हो सका। इसी कारण उनकी मुख्य किताब में यह तेरह मासा सम्मिलित न हो सका। निम्नलिखित Text की प्रतियां ही इकट्ठी हो सकी। बारह मासा अफज्ल, बारह मासा इज़लत, बारह मासा जोहरी, बारह मासा वहशत, बारह मासा सुन्दर कली, बारह मासा मक़सूद, बारह मासा नेह, बारह मासा मुफ्ती इलाही बख्श, बारह मासा वहाब, बारह मासा नसीब, बारह मासा रन्ज, बारह मासा अब्दुल्लाह अन्सारी। अफज़ल के पश्चात दूसरा सबसे प्राचीन और विशिष्ट मूलशब्द क़ुतुबी का है। एक और बारह मासा चर्चा योग्य है जिसे अल्लमा इक़बाल ओपेन यूनिवर्सिटी, इस्लामाबाद के प्रोफेसर अब्दुल अज़ीज़ साहिर[1] ने सम्पादित किया है। यद्यपि यह Text प्रथम बार बारह माहिया नज़्म के नाम से 1875 ई. में बम्बई से प्रकाशित हुआ था। दूसरी बार 1372 हिजरी में अजमेर से प्रकाशित हुआ। उसके पश्चात देवनागरी लिपि में तीसरी बार छपा। चौथी बार 2012 ई. में रावलपिंडी से प्रकाशित हुआ। प्रोफेसर अब्दुल अज़ीज साहिर ने बड़े विशेष हाशिया लिखे हैं। यह माहिया भी क़ुतुबी के लगभग सवा सौ साल बाद लिखा गया। इसकी पाण्डुलिपि उपलब्ध नहीं है। यह सामान्य माहियों की तुलना में दीर्घ है। अरबी फारसी दोहे भी सम्मिलित हैं। भाषा काफी साफ और प्रवाहपूर्ण है। क्योंकि 1842 ई. में लिखा गया। लेखक के विचार में यह सबसे दीर्घ माहिया है। जिसमें 707 दोहे हैं। इसमें हम्द् व नात को नियमित रूप से रखा गया है, अरबी फारसी के दोहे भी हैं।

इसके लेखक हाजी मुहम्मद नज्मुद्दीन सुलेमानी हैं। वह चिश्तिया वंश के पूर्वज मुहम्मद सुलेमान खाँ तोन्सवी के शिष्य और खलीफा भी है। खानक़ाह से सम्बन्ध के कारण शिष्यों का विस्तृत क्षेत्र था। प्रसिद्धि के कारण यह बार-बार प्रकाशित होता रहा। मजाज़ी इश्क से अतिरिक्त उनके दिल पर गुज़री कहानी का बयान उनके शिष्यों के लिए विशेष महत्व रखता है। यह भी सत्य है कि अभी बहुत सी पाण्डुलिपि अज्ञात है। जो परिचय और सम्पादन की मोहताज हैं। जिसकी पुनः प्राप्ति से इस संग्रह में बढ़ोतरी हो सकती है। जबकि उपलब्ध संग्रह भी अध्ययन के लिए काफी है। उर्दू के लोक साहित्य पर अब तक कई किताबें नज़र में हैं। फिर भी बारह माहिये की लोक परम्परा पर गम्भीरता से विचार की आवश्यकता है और शोधात्मक आवश्यकताओं का भी तक़ाजा प्राथमिकता पूर्ण है। उर्दू पर दूसरों को एक शिकायत यह भी है कि उसमें स्थानीय और सामाजिक वातावरण के वर्णन नहीं है। इन एतराज़ का सबसे प्रभावपूर्ण उत्तर यह बारह मासे हैं। जो प्रथम रचनाएँ हैं और देश की पृथ्वी और आकाश के साथ हिन्दुस्तानी सामाजिक जीवन के वर्णन के लिए है। यह बात भी ध्यान में रहे कि बारह मासे में प्रेम व मुहब्बत का सम्बन्ध स्त्री पुरुष की भावनाओं से ही होता है। वही बिरह में है और विरह की मारी हुई भी। उसी प्रेमिका को मौसमों की तब्दीली से पैदा होने वाली भावनाओं ने बैचेन किया है।

पूर्वजों के प्रयत्न से उस दौर की खोई हुई रचनाएँ अब हमारे सामने हैं। इसकी प्राप्ति से साहित्यिक इतिहास की खाली कड़ियों और खाली स्थान को भरने में कुछ काम हुआ है। प्रोफेसर मस्ऊद हसन रिज़वी ने 'दीवाने फाइज़' की शोध से नई यात्रा प्रारम्भ की है। प्रोफेसर मोहम्मद हसन ने 'दीवाने आबरू' का परिचय कराया। इसी प्रकार 'दीवाने नाजी' व 'दीवाने यकरू' व यक़ीन इत्यादि के प्रकाशन से प्राचीन Text तक पहुँच सरल हो गई। प्रोफेसर मोहम्मद हसन ने 'दीवाने आबरू' को उत्तरी भारत का सबसे प्राचीन उर्दू दीवान क़रार दिया। प्रोफेसर मस्ऊद हसन रिज़वी ने 'दीवाने फाइज' को उत्तरी भारत का प्रथम उर्दू दीवान बताया।

फाईज़ अपना कुल्लियात, जिसमें उर्दू दीवान भी सम्मिलित है। 1715 ई. में संकलित कर चुके थे। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि फाइज़ का कुल्लियात संकलित हो चुकने के एक साल बाद हातिम ने फारसी में और पाँच साल बाद उर्दू में शेर कहना प्रारम्भ किया। इस प्रकार हातिम और उनके साथ उर्दू शाइरी करने वाले समस्त कवियों पर फाइज़ की प्राथमिकता साबित है। काज़ी अब्दुलवदूद ने दीवाने फाइज पर जो चर्चा की है। उसी की रोशनी में फाइज़ ने 1715 ई. में फारसी कुल्लियात संकलित किया था। बहुत सा काव्य उसमें सम्मिलित नहीं था, क़ाज़ी अब्दुल वदूद ने लिखा है-"कुल्लियात जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है 1729 ई. से पन्द्रह साल पहले संकलित हुआ था। योग्य संकलन करता की दो टूक राय है कि संकलन के समय उर्दू दीवान इसमें शामिल था। मगर यह तय नहीं है। फ़ायज़ ने एक मसनवी में, जिसके कुछ शेर प्रारंभ में प्रस्तुत हैं बादशाहों के दैनिक हालत से सबक़ लेने का वर्णन है। इसमें औरंगज़ेब के देहांत (1707) के 14 साल बाद जितने बादशाह हुए थे, सबके नाम आए हैं, एक पंक्ति में मुहम्मद शाह के राज सिंहासन पर बैठने (1718 ई.) की बात कही गई है।

इससे साफ प्रकट है कि यह मसनवी उस समय कुल्लियात में शामिल न होगी। आक्सफोर्ड के कैटलाग में एक दूसरी कविता का नाम है जो 1721 ई. में लिखी गयी। "दौलत ख़ाना वाला" की रचना तारीख़ से मालूम होता है कि यह नज़्म (मसनवी) कुल्लियात में प्रस्तुत नहीं होगी। जब इन दो रचनाओं का यह हाल है तो उर्दू दीवान का होना असंभव है। इससे निष्कर्ष निकालना दूर की बात है कि 1715 ई. में फायज़ की उर्दू शायरी का आरंभ हो चुका था। 1729 ई. के कितने वर्ष बाद आरंभ हुआ इस विवाद का समाधान प्रस्तुत की हुई सामग्री की सहायता से नहीं हो सकता।"[1]

इन तथ्यों की रोशनी में फाय़ज़ के फ़ारसी कुल्लियात का 1715 ई. में संकलन होना संभव हो सकता है उर्दू दीवान का नहीं क्योंकि इसमें

[1]अयारिस्तान 2

1715 ई. के बाद की रचनाएँ मौजूद है। इस प्रकार उनका उर्दू वाद-संवाद संदेहजनक हो जाता है।

जो कुल्लियात मौजूद है वह 1731 ई. का है, क़ाज़ी अब्दुल वदूद का यह विचार भी महत्त्वपूर्ण है कि फारसी कुल्लियात की रोशनी में 1715 ई. में फायज़ का उूर्द शेर कहना भी शंकाजनक है। इस संकलन से पता चलता है कि उन्होंने 1729 ई. से पहले शायरी शुरू की थी। यह नहीं कह सकते कि कितने पहले? हातिम के बारे में यह साबित हो चुका है कि उनकी उर्दू शायरी का आरंभ 1716 ई. में हो चुका था। प्रोफेसर मसऊद हसन रिज़वी ने दीवानज़ादा और मुस्हफी के बयान की रोशनी में यह विचार प्रस्तुत किया है कि हातिम ने 1716 ई. में फ़ारसी और 1719 ई. में उर्दू शेर कहना शुरू किया यह एक भ्रमात्मक बात है और शोध के अनुसार अनुचित भी है क्योंकि दीवानजादा में 1718 ई. की दो गज़ले मौजूद हैं और अगर रामपुर की पाण्डुलिपि की बात मान ली जाय तो इसमें 1717 ई. की एक ग़ज़ल मिर्जा मज़हर जान जानां के अनुसरण में है।

किया जो फ़ाख़्ता ने सर्व ऊपर आशियां अपना

लन्दन और लाहौर के नुस्खों में 1727 ई. दर्ज है। यह सच है कि हातिम की उर्दू शायरी 1716 ई. में शुरू हो चुकी थी। फ़ायज की उर्दू शायरी के आरम्भ के बारे में कोई सबूत नहीं है। प्रोफेसर मसऊद हसन का विचार सही नहीं है कि फ़ायज़ का कुल्लियात तैयार होने के एक साल बाद हातिम ने फ़ारसी में और पांच साल बाद उर्दू में रचना प्रारंभ की। यह सरासर अनुचित है। फ़ायज़ की शायरी की प्राथमिकता एक भरम है। उनकी यह राय भी ठीक नहीं है कि फ़ायज़ का कुल न सही तो उनकी उर्दू रचनाओं का एक बड़ा हिस्सा 1715 ई. में पूरा हो चुका था। अनुमान है कि फायज़ ने अपना कलाम दोबारा देखनें के बाद 1751 ई. में जमा किया और उसमें उर्दू कविताओं को भी शामिल कर लिया। एक और तर्क भी शंका जनक है।

"फायज़ का जन्म 17वीं सदी हिजरी के अन्तिम वर्षों और मौत 1748 ई. में हुई। हातिम उनसे कुछ वर्ष बाद 1699 ई. में पैदा हुए और

फ़ायज़ के 46 साल बाद 1784 ई. में उनकी मृत्यु हुई। इसलिए वह फ़ायज़ से पहले होना तो क्या वह तो उनके समकालीन भी ना थे।"[2]

क़ाज़ी अब्दुल बदूद के अनुसार फ़ायज़ की जन्मतिथि 1690 ई. के लगभग है।[3] हातिम की आयु में केवल नौ साल का अन्तर है। दोनो समकालीन कहलायेंगे। समकालीन का अर्थ है मौत पर नहीं बल्कि जन्मतिथि से तय किया जाये।

फाइज़ का बड़ा हिस्सा वली के कलाम की पैरवी में है यानि छियालीस में 33 गजलें इशारा कर रही हैं कि फाइज के सामने वली का दीवान है। और वली का दीवान 1719 ई. में दिल्ली आया। इन एक जैसी गज़लों की बड़ी संख्या की मौजूदगी से हातिम के बयान की पुष्टि होती है कि दिल्ली में वली के दीवान के आगमन से हर छोटे बड़े की ज़बान से वली का शेर जारी हुआ।[4]

आबरु, मज़मून, हातिम, यकरंग की भाँति फाइज़ भी वली से प्रभावित हुए और 1719 ई. के आसपास कविता कहानी आरम्भ की। इन संदेह व भरम के प्रकाश में फाइज के दीवान को उत्तरी भारत का सबसे प्राचीन दीवान स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह भी एक भरम है कि उत्तरी भारत में वली के दिल्ली आने के बाद कविता का प्रारम्भ हुआ। इस पूरी बहस के लिए हातिम के दीवान जादे का अध्ययन किया जा सकता है। प्रोफेसर मोहम्मद हसन का सम्पादित दीवाने आबरू जिसे उन्होंने शोध की रोशनी में उत्तरी भारत का प्रथम दीवान संकोच के साथ कहा है कि जब तक हातिम का प्राचीन उर्दू दीवान नहीं प्राप्त हो जाता। आबरू के दीवान को प्राथमिकता प्राप्त रहेगी।

प्रोफेसर मोहम्मद हसन का विचार सही है कि प्राथमिकता की समस्या हातिम और आबरू के बीच है। इसमें फाइज़ शामिल नहीं है। काव्य की

---

[2]दीवाने फाइज़

[3]दीवाने आबरु पृ.-25

[4]दीवाने आबरु पृ.-25

अधिकता के अनुसार फाइज का कलाम 40 गज़लों और चन्द नज़्मों पर आधारित है। यह एक संक्षिप्त दीवान का रूप भी नहीं रखता जबकि हातिम व आबरू का काव्य कई गुणा अधिक है। प्रोफेसर मोहम्मद हसन ने माना कि यदि हातिम का पुराना दीवान मिल जाये तो उन्हीं को प्राथमिकता मिलेगी। पुराने दीवान की खोज के बाद उन्हीं के बयान के अनुसार अव्वलियत समाप्त हो जाती है। हातिम के पुराने दीवान की यह वर्तमान पाण्डुलिपि की प्रति उत्तरी भारत का पहला उर्दू दीवान कहलाने का हकदार होगी। क्योंकि यह साबित है कि हातिम ने अपना पुराना दीवान संकलित कर दिया था। प्राथमिकता की बहस से यह कहना है कि आबरू का दीवान जो 1733 ई. में सम्पादित हुआ था वह अभी तक प्रकाशित नहीं हो सका है और ना ही उसकी प्राप्ति हो सकी है। बाद की प्रतियों से दीवान प्रकाशित हुआ है। हातिम का प्राचीन दीवान भी अभी तक हासिल नहीं हो सका। उस दीवान का चयन मैंने 2010 में प्रकाशित किया जो कि पूरा दीवान नहीं है, परन्तु उत्तरी भारत का इसे पहला दीवान स्वीकार किया गया है। इस पृष्ठभूमि में क़ुतुबी का तेरह मासा उत्तरी भारत का दूसरा सबसे प्राचीन काव्य संग्रह है जो पूर्ण है और प्राचीन है। यह अट्ठारवीं शताब्दी के सबसे प्राचीन कविता संग्रह की खोज है। जो प्राथमिकता का गौरव रखता है। यद्यपि यह दीवान नहीं है बल्कि दीर्घ कहानी का काव्य वर्णन है और यह परिचित तीनो नुस्खों में सबसे प्राचीन है क्योंकि किताब की अन्तिम पंक्तियों से विश्वास होता है कि यह नुस्खा 1745 ई. से पहले लिखा गया। अंदाज़ा है कि यह अपनी रचना के पन्द्रह साल बाद, इस नुस्खे को हस्तलिखित किया गया। अति सम्भव है कि क़ुतुबी के जीवन काल में ही मुसव्वदा लिखा गया। यह भी हो सकता है कि क़ुतुबी के तैयार किये हुए नुस्खे की यह नकल हो। सच्चाई जो भी हो यह मानी हुई बात है कि यह महत्वपूर्ण पाण्डुलिपि है और प्राचीन काव्य के शोध की महान कलाकृति है। वस्तुतः यह तेरह मासा कई पाण्डुलिपियों के संग्रह में सम्मिलित है। वली, क़ुतुबी, आबरू

और हातिम के कलाम को एक ही लिपिकार ने लिखा है। रहमत खाँ पुत्र फिरोज़ खाँ ने इसे नकल किया है। आबरू का कलाम कई पृष्ठों पर लिखा गया है। हातिम का कलाम 8 पन्नों पर और क़ुतुबी का तेरह मासा मात्र चार पन्नों पर लिखा गया है इसमें एक कलम एक प्रकार की रोशनाई और एक जैसी लिखावट है। कागज़ मोटा है, रोशनाई काली है। पुरानी घसीट की लिखावट है। आबरू के दीवान के अन्त में यह लिखा हुआ है-

> "आबरू का यह पूरा दीवान उन्तीस तारीख रबी उस्सानी के महीने में रहमत खाँ पुत्र फिरोज खाँ के कलम से लिखा गया। 28 जुलूस मुताबिक 1745 ई. में लिखा गया। जो भी इसको पढ़े। वह मुझे अपनी दुआओं में याद रखे।"

इस लिखावट की गवाही पाण्डुलिपि के सबूत के लिए काफी है। विश्वास है कि पूर्ण काव्य की लिखाई कुछ महीनों में पूरी हो गई। कई ऐतबार से यह पाण्डुलिपि अनमोल रतन की भांति है क्योंकि यह उत्तरी भारत के उर्दू कविताओं की प्राचीनतम लिखावट का मूल्यवान नमूना है। क़ुतुबी का तेरह मासा बिकट कहानी से लगभग सौ वर्ष पश्चात की रचना है और रचना के पन्द्रह साल बाद का यह प्राप्त मुसव्वदा उपलब्ध है। यह विश्वास है कि स्वयं कलाकार के जीवन में इसकी लिखाई हुई है। जबकि सौ साल पूर्व रचित होने वाली बिकट कहानी का कोई मुसव्वदा या पाण्डुलिपि इतनी पुरानी प्राप्त ना हो सकी। मुहम्मद अफज़ल की रचना के जितने मुसव्वदे या पाण्डुलिपियाँ है वह बहुत बाद की लिखाई के नमूने है। बिकट कहानी की सबसे प्राचीन प्रति 1824 ई. की है। जो हैदराबाद में मौजूद है। यह पाण्डुलिपि अफज़ल के देहान्त के लगभग 90 साल बाद लिखी गई। मुहम्मद अफज़ल की मौत 1035 ई. (1625 ई.) में हुई। क़ुतुबी के तेरह मासे की रचना और अफज़ल की बिकट कहानी के लेखक में सौ

साल का अन्तर है। वली के काव्य की प्राचीनतम पाण्डुलिपि का लेखन भी इसी काल की यादगार है। वह दकन के कवि हैं। यह सत्य है कि यह प्रति प्राचीन और सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

हिन्दुस्तान के मौसम, मन्जर और माह व साल के भिन्न-भिन्न वातावरण ने प्रत्येक रचनाकार को प्रभावित किया है। इसी कारण यहाँ की कलाकृतियों में भावना और सौन्दर्य का हर प्रभाव और अनगिनत रूप मौजूद है। रचना केवल आकाश में परवान नहीं चढ़ती और ना ही सितारों के पथ पर कमन्द डालने का साहस कर सकती है। वह आकाश की ऊँचाई को जमीन पर उतारती है। वह तो विचारों के अनुसार कला के भवन निर्माण करती है। फूल व फल जमीन पर लहलहाते हैं। भावनाओं की कोमलपूर्ण शक्ले भी मुट्ठी भर मिट्टी की मोहताज होती हैं। हिन्दुस्तान के वातावरण में पनपने वाली साहित्य रचनाएँ व विवेकात्मक रूप में अलग नहीं हो सकती। उर्दू काव्य साहित्य का प्रथम चिन्ह इसी मिट्टी के खमीर से तैयार हुआ है। उसके शरीर और नसों में गर्म रक्त बन कर जारी हुआ। उसका सबसे प्रतिष्ठित उदाहरण बारह मासे की दृढ़ परम्परा है जिसमें हिन्दुस्तान केवल हिन्दुस्तान प्रतीत होता है। यह संस्कृत और हिन्दी की शानदार परम्परा से लाभान्वित है। परन्तु उनके बराबर भी है। भला हो डॉ. तनवीर अहमद अलवी मरहूम का जिन्होंने 1988 में उर्दू में बारहमासे की परम्परा जैसी चर्चा योग्य किताब लिख कर इस काव्य विधा को मूल्यवान बना दिया। उस समय तक उन्हें यह पाण्डुलिपि प्राप्त न हो सकी थी। इसलिए उनकी किताब में इसका हवाला ना आ सका।

क़ुतुबी के हालात तारीख और वृत्तांत में नहीं मिलते। दकन के क़ुतुबी के बारे में कुछ किताबों में बहुत कम चर्चा मिलती है। और दोहे प्रमाण के तौर पर लिखे गए हैं। दोनों क़ुतुबी के बीच में संदेह भी है। धन्य है कि अब 'तोहफा' के रचनाकार कुतुब राज़ी को क़ुतुबी दकनी से अलग कवि साबित किया जा चुका है।

डॉ. जमील जालबी की शोध को डॉ. सैयदा जाफर इत्यादि ने भी स्वीकार किया है। उत्तरी भारत के क़ुतुबी से हम भलीभांति परिचित नहीं है। इतिहास चुप है। "निकातुश्शुआरा" के लेखक 'मीर तक़ी मीर' किसी सीमा तक क़ुतुबी से निकट हैं। वह भी चुप हैं। आबरू और हातिम की चर्चा तो है परन्तु उसमें क़ुतुबी की चर्चा नहीं करते। हाफिज़ महमूद शीरानी मरहूम ने पहली बार अपने 'लेख' हरियाणी भाषा संदर्भ में क़ुतुबी के तेरह मासे की चर्चा की है-

> "उसकी प्रतियाँ बहुत दुर्लभ है। मुझे केवल दो का हाल मालूम है पहला इंडिया ऑफिस की लाइब्रेरी में सुरक्षित है। और पाण्डुलिपियों की लिस्ट में 93 शुमारा-7 में लिखा है। दूसरा नुस्खा मेरे पास है, जिसको इनायतुल्लाह वल्द हाफिज इमाम बख्शं 1862 ई. का मुकाम रोहतक नकल करता है।"

इस तेरह मासे के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि वह रोहतक के रहने वाले और शेखज़ादा हैं और अकरम नाम है। वह शेख कुतुबुद्दीन हबीब के मुरीद थे। शेख हज़रत अबू सालेह कुतुब के तीसरे बेटे हजरत कमीस की औलाद है। कस्बा साधोड़ा में उनकी खानक़ाह मौजूद है। यह दिल्ली से लगे हरियाणा प्रांत में है जिसका क़ुतुबी ने कलाम में जिक्र किया हैः

कुटिया में बहरे कुतुब के पास दौड़ा
कि जिनका है वतन हज़रत सा धोड़ा

अबू सालेह कुतुब के तीसरे पूत
कमीस आज़म जी के औलाद और होत

मुझे उन्होंने मेरे घर में बताया
ऊहाँ से में घरों कूँ है आया

हवा पल्टा गह आखिर आवते घर
अगर च उड़ चला था लाये कर पर

अरे क़ुतुबी सुबह कूँ होय मैला
सब्र कर एक शब और फिर अकेला

क़ुतुबी तेरे दुल्हा घर में पाइया
कुतुबुद्दीन हबीब हुसैन मंगल गाईया

ऐसा प्रतीत होता है कि आस्था के रूप में अकरम ने यह उपनाम रखा। वह अपने काव्य में जगह-जगह शेख कुतुबुद्दीन से अपने भावनात्मक लगाव को प्रकट करते हैं। उनके अनुयाइयों में सम्मिलित हो शायद मुरीद भी हों क़ुतुबी की शाइरी गालिबन पहली मिसाल है कि वह अपनी गहरी आस्था और बेपनाह विश्वास की चर्चा करते हैं। इस प्रकार का वर्णन दूसरे कवियों के यहाँ शायद ना मिले।

कुतुब के चरनों पर बलिहार क़ुतुबी
जाँऊ में जीव सैं वारी वार क़ुतुबी

अरे क़ुतुबी कुतुब के हो है कुरबाँ
कि जिन दिखलाया जान जानाँ

उसी के लुत्फ सूँ कश्ती हुई पार
नहीं तूने रखा बीच मँझदार

तसद्दुक हो नबी के और अली के
दिगर असहाब हर चारों वली के

क़ुतुबी हातिम व आबरू के समकालीन हैं और दिल्ली के पास के रहने वाले हैं। रोहतक दिल्ली से अधिक दूरी पर नहीं है। उनके जन्म और मृत्यु के बारे में भी कोई पता नहीं हैं।

गँवाऐं सोन्च और गफ़लत का अठतीस
फँसा दर दाम आँ शैताने इब्लीस

इस दोहे से प्रमाणित किया जा सकता है कि तेरह माहिये की रचना के समय क़ुतुबी अड़तीस बरस के थे। यह 1730 ई. में पूर्ण हुआ। यदि इसमें अड़तीस साल कम कर दें तो 1692 ई. या 1693 ई. में उनका जन्म हुआ होगा। वह हातिम से सात साल बड़े थे। क्योंकि शाह हामित की जन्मतिथि 1699 ई. है। आबरू के बारे में कहा जाता है कि वह 1095 हिजरी (1663 ई.) में पैदा हुए-

जो सन अठतीस में दूल्हन मिलाव
लाख बन्दी को छुड़ाउँ

डॉ. अब्दुल गफ्फार शकील ने 'फिक्र ओ नजर' अलीगढ़ में 1971 ई. के शुमारे जिल्द में 'बिकट कहानी' का लेखक और उसका वतन के शोध लेख के अन्तिम भाग में इस दीर्घ कविता का हवाला दिया गया है। डॉ. अब्दुल गफ्फार शकील ने किसी दूसरी पाण्डुलिपि का प्रमाण नहीं दिया। हाफिज शीरानी के शोध निबन्ध से सहायता लेते हुए जो दोहे नकल किये है। उनके बारे में भी ज्ञात न हो सका कि वह किस पाण्डुलिपि की प्रति से नकल किये गए हैं। क्योंकि इन छपे दोहे और मेरी निजी प्रति के Text में कहीं-कहीं अन्तर मौजूद है। शायद उनकी दृष्टि में कोई और प्रति हो। उन्होंने इस तेरह मासे की मद्द से बिकट कहानी के लेखक का नाम और

वतन का मामला तय किया है। जिससे इस पाण्डुलिपि की प्रति का महत्व अनिवार्य हो गया। मुहम्मद अफ़जल के असली नाम और वतन के बारे में इतिहासकारों और आलोचकों में बड़ी विचारात्मक दुविधा रही है, जिसका न्याय क़ुतुबी के काव्य में सम्भव हो सका है।

ऊ से अफ़जल कि जिसका नाव गोपाल
कहा है नार नौले साहबे हाल

क़ुतुबी का यह बयान अफ़जल के सिलसिले के सारे विवाद के लिए एक न्यायपूर्ण दस्तावेज़ है। क़ुतुबी ने अफ़जल के बारह मासे से लाभ लेते हुए यह तेरह मासा इसी प्रकार नक़ल किया है। अफज़ल के बारे में क़ुतुबी का यह सब से प्राचीन सबूत है। जो प्रमाणित है और विश्वसनीय भी। क़ुतुबी ने यह तेरह मासा 1143 हिजरी यानि 1731 ई. में लिखा। यह शाह हातिम के दीवान के एक वर्ष पश्चात लिखा गया। ऐतिहासिक रूप से इसका बड़ा महत्व है। मुहम्मद शाह के राज तिलक की भी चर्चा कविता के अन्त में मौजूद है। यानि जुलूसे मुहम्मद शाही का तेरहवाँ साल हैः

मुहम्मद शाह की रहे बादशाही
लगा सन तेरह अज़ फज़ले इलाही।

कुतुब मेरे का जुग जुग राज रहियो
गंगा जमना में जब लग नीर बहियो।

ये तेरह मासा शाह मुबारक आबरु के संकलित दीवान से कई साल पूर्व लिखा गया है। आबरू के दीवान के बारे में कहा जाता है कि वह 1733 ई. में संकलित किया गया। यद्यपि अभी तक पाण्डुलिपि की प्रति प्राप्त ना हो सकी है। अन्य शब्दों में यह बारह मासा शाह हातिम के उपरान्त दूसरा काव्य संग्रह या दीर्घ कविता है। जो 325 दोहो पर समाविष्ट है और उत्तरी भारत की शायरी के प्रथम काल की काव्य पूँजी में चर्चा योग्य महत्वपूर्ण

योगदान है। यह एक दीर्घ वर्णनात्मक कविता है। जो बिकट कहानी के उपरान्त सबसे बड़ी कविता है। हातिम और आबरू ने भी दीर्घ कविताऐं लिखी है। परन्तु वह उनकी तुलना में कम है।

'इन्तखाबे हातिम' (दीवाने हातिम) सम्पादन 1977 ई. में लेखक ने मुकद्दमे में इस पाण्डुलिपि का परिचय कराया था। यह अलग से जिल्द बन्द पाण्डुलिपि नहीं है बल्कि चार कवियों के चयनित काव्य का संग्रह या डायरी है। जिसमें हातिम, आबरू, वली और कुतबी का काव्य सम्मिलित है। उसे इन्तखाब या डायरी कहना मुनासिब नहीं है। क्योंकि आबरू और वली का लगभग पूरी दीवान उपलब्ध है और क़ुतुबी का तेरह मासा भी पूर्ण है।

डॉ. हनीफ नकवी ने आबरू (24 रजब 1146 हिजरी 20 दिसम्बर, 1733) की एक डायरी को रेखांकित किया है जो उनके व्यक्तिगत संग्रह में मौजूद है। उन्होंने इस पर एक शोध लेख लिखा जो मासिक पत्रिका 'आजकल' में (अप्रैल 1986 ई.) प्रकाशित हुआ।

इस डायरी में फारसी, उर्दू और हिन्दी के बहुत से कवियों की कविताओं और दोहों का चयन सम्मिलित है। क़ुतुबी की ग़जल के पाँच दोहे भी सम्मिलित हैं। इस प्रमाण से क़ुतुबी पर एक नया प्रकाश पड़ता है। वह आबरू, हातिम के समकालीन थे और समकालीन कवियों में उनकी गिनती होती थी।

आबरू ने अपने कलाम के साथ वली, अशरफ, क़मर, शाकिरनाजी मिसकीं, नक्श बंदी, मरहून, मम्नून, अहमदी, अब्दुल, आशिक, मदन, रज़ी इत्यादि के साथ क़ुतुबी की गज़ल का चयन किया है जिससे उनके प्रमाण का पता चलता है और समकालीन सौंदर्य दृष्टि का भी ज्ञान होता है। यहाँ पर क़ुतुबी की ग़जल के अश्आर नक़ल किये जाते हैः

नेना पलक कटारी यह किसको मारता है
शोखी सजन की देखो माता गुमान का है

पगड़ी के बीच बिक के गुलबीच पड़ी है सीली
बाँकी अदा सूँ आता दिलबर पठान का है

हर तीर उस निगह का लगता निशाने दिल पर
हाथों में खुश रंगीला कब्ज़ा कमान का है

इस जुल्फे नागिनी सूँ हरगिज़ नहीं खलासी
होंटों की लाली देखो प्यासा वह जान का है

क़ुतुबी फक़ीर दाइम दीवाना है दरस का
तुझ वास्ते निकारा खूबी जहान का है।

इस गज़ल की भाषा और वर्णन तेरह मासे से कितना मिलता है। क़ुतुबी की यही गज़ल अब तक मिल सकी है। इससे उनकी ग़ज़ल या शायरी का भी प्रमाण मिलता है और जीवन काल का भी संकेत मिलता है।

सामान्य रूप से साल के बारह महीनों में उत्पन्न होने वाले मानवीय विरह और मिलन की विभिन्न भावनाओं का प्रकटन होता है। यह तेरह मासा है जो हिन्दी कलंडर के अनुसार लोन्द/मलमास लगने से साल में एक माह की संख्या बढ़ जाती है। क़ुतुबी का दुर्भाग्य था कि उन्हें मित्र के वियोग में तेरह महीने बर्दाश्त करने पड़े।

हमारे समक्ष पाण्डुलिपि की यह प्रति बहुत महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि हाफिज़ महमूद शीरीनी का नुस्खा 1862 ई. का लिखा हुआ है। जब कि मेरा यह नुस्खा सवा सौ साल पहले का लिखा हुआ है। मत्न (Text) भी ज्यादा दुरुस्त है। इण्डिया आफिस की पाण्डुलिपि मेरी पहुँच में नहीं है। लेकिन यह विश्वास है कि वह भी बाद की लिखी हुई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा नुस्खा स्वयं कवि के अर्थात् अकरम क़ुतुबी के जीवनकाल का

लिखा हुआ है। इसका महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि यह उर्दू के पहले बारह मासे अफ़जल की 'बिकट कहानी' का एक समकालीन हवाला भी इस पाण्डुलिपि में मौजूद है। मुहम्मद अफज़ल के बारे में बड़े विवाद रहे हैं कुछ लोगों ने बिकट कहानी की भाषा शैली को देखकर अफजल को गुजरात का रहने वाला बताया है। कुछ शोधकारों का कहना है कि अफ़जल झनझाना (यू.पी.) में पैदा हुए। कई लोगों ने अज़ीमाबाद (पटना) को जन्मस्थल बताया। कुछ दिनों तक यह उर्दू साहित्य में भी विवाद का विषय रहा। परन्तु अकरम क़ुतुबी की इस पाण्डुलिपि ने इस विवाद का निर्णय कर दिया कि अफज़ल नारनौल (हरियाणा) के रहने वाले थे। उन्होंने जगह-जगह भ्रमण भी किया। इस प्रकार उत्तरी भारत की यह अनमोल साहित्यिक पूँजी है और उत्तरी भारत की काव्यपूँजी में एक बड़ा शुभदायक योगदान है।

शाह मुबारक आबरू के दीवान के आखिर में लिखा है कि इसकी किताबत 1745 ई. में पूरी हुई। इसके बाद मशहूर नज़्म "मसनवी आराइशेमाशूक" की किताबत हुई। इसके आखिर में 1748 ई. लिखा हुआ है। इससे साबित होता है यह तेरह मासा 1745 ई. से पहले लिखा गया। सम्भव है कि 1737 ई. और 1742 ई. के बीच इसकी किताबत हुई हो। इस प्रकार यह पाण्डुलिपि लाहौर और लन्दन के नुस्खों में काफी पुरानी है। और अलगीगढ़ के नुस्खा ना पैदा हो चुका है। निसंदेह यह भी वर्तमान पाण्डुलिपि से पहले का होगा। इसलिए डॉ. अब्दुल गफ्फार शकील ने कोई तारीख नहीं बताई है। हमारा साहित्यिक शोध अग्रसर हो सकता है कोई प्रति इससे पहले की लिखी हुई मिल जाये। इस प्रकार अफज़ल की 'बिकट कहानी' का नुस्खा भी अपने समय का लिखा नहीं मिल सका। लगभग सौ साल बाद हाथ का लिखा मिल सका है। संक्षेप में कह सकते हैं मुहम्मद वली की पाण्डुलिपियो के काल की लिखी हुई यह भी रचना है जो वर्णात्मक शायरी की लोककथा के रूप में बहुत अच्छी मिसाल है।

बारह मासे की परम्परा में यह पहलू बहुत आकर्षक है कि बारह मासे का आरम्भ आषाढ़ के महीने से होता है। पदमावत में जायसी का हीरो अपनी प्रेमिका की खोज में दर-दर भटकता है। नागमति के वियोग का प्रारम्भ भी आषाढ़ के महीने से होता है। ऐसा प्रतीत होता है बरसात का प्रथम महीना प्रेमिका के वियोग आदि उसके आभास का प्रारम्भ रहा है। अफ़ज़ल ने कई चीजों की अवहेलना की है। यहाँ भी उसकी रूचि बारह मासे की परम्परा से भिन्न है।

चढ़ा सावन बजा मारो नकारा
सजन बिन कौन है साथी हमारा

चला सावन मगर साजन न आये
अरे किन दूतियों ने टोने चलाये।

यह भी दिलचस्प बात है वहशत ने भी अपने बारह मासे की शुरूआत फागुन महीने से की है।

चला आता है फागुन का महीना
मुझे दूभर नज़र आता है जीना।

अकरम क़ुतुबी ने तेरह मासे का आषाढ़ महीने से प्रारम्भ किया। आषाढ़ के आगमन से पहले क़ुतुबी ने एक बहुत अच्छी भूमिका प्रस्तुत की है। वह स्नान के लिए गये थे वहाँ वह एक परिरूप अति सुन्दर स्त्री को देखकर बेहोश हो गये और प्रेमिका के प्रेम में बीमार हो गये और अपनी बिगड़ी हुई दशा और बेचैनी का करूणात्मक वर्णन करते हैं। यह वर्णन इक्यावन दोहों पर फैला हुआ है। तेरह मासे के प्रारम्भ में उन्होंने प्रेम गाथा को अतीत से जोड़ दिया है कि सृष्टि की रचना के समय से ही प्रेम की कहानी शुरू होती है। पहले ही दोहे से दार्शनिक और धार्मिक बनाने की कोशिश की है और

मुहब्बत को ब्रह्माण्ड के सृजन से प्रलय तक की एक बड़ी सच्चाई बताई है। वह कहानीकार के रूप में प्रेम कथा सुनाने के लिए मित्रो को सम्बोधित करते हैं-

शुनो ए दोस्ताँ किससा हमन का
जो क्या भारी होता है दूख लगन का

गया था एक दिना में नहान के थान
हुस्न तीरथ ऊपर अश्नान के थान

वहाँ एक सर्वसीम अन्दाम महबूब
ना आवे वस्फ जिसके मुख सेती खूब

बिरह का मैं अचानक तीर खाया
करेजा हाथ पकड़ें घर को आया

कोई बोला कि इसको नाग खाया
कहें इसके बदन में डंक लाया

अरे यह तीर कारी जिसके लागे
न जीवे ना मरे सोवे न जागे

चाँदी जैसे शरीर के प्रेम में पागलपन बढ़ता गया। प्रेमिका की खोज में इधर-उधर भटकना भाग्य का लिखा बन गया। मित्र की तलाश करता रहा। इसमें उसके दुख और वियोग का वर्णन है।

थका अब हार कर बैठा हूँ यह ठाँव
न पाया शहर शहर व गाँव दर गाँव

ऐसी हालत में रूत बरसात आई
करी थी क्या बुरी मैं ने कमाई

आया मास असाढ़ फौज सिंगारें नेह की
कैसी घड़ा सुहात सिद्ध नहीं अपने ग्रहकी

बारह मासे की एक प्रचलित परम्परा रही है कि प्रत्येक माह के आने पर दोहे का स्वरूप बदल जाता है। अकरम क़ुतुबी ने भी हर महीने के लिये दोहरा प्रयोग किया है। अकरम क़ुतुबी ने भी दोहरा कहकर आषाढ़ मास का स्वागत किया है। जो पूरी कविता के छंदों में अलग है। पाण्डुलिपि के लेखक ने एक चिन्ह भी लगा दिया है। हो सकता कि कवि की तैयार की हुई पाण्डुलिपि में ऐसा निशान लगा हो।

क़ुतुबी ने छंद के चयन में अपने पड़ोसी मुहम्मद अफ़ज़ल का अनुसरण किया है। यही नहीं बल्कि दोहों की संख्या में उनकी परम्परा हृदय से स्वीकार की है। यानी दोनों जगह 325 दोहे हैं। मुहम्मद अफ़जल ने मसनवी के प्रचलित बहर यानि बहर हज़ज मुसद्दस महजूफुल अखरब को अपनाया है। यह बहर मसनवियों के लिए सामान्य रूप से प्रसिद्ध है। इसमें वर्णन के अतिरिक्त आहंग का सुन्दर संग्रह और प्रवाह भला लगता है। अकरम क़ुतुबी ने मुहम्मद अफज़ल से भी बहुत लाभ उठाया है। शब्दावली के अतिरिक्त कई जगह उनके संयुक्त शब्दों से सहायता ली। किन्तु अपनी व्यक्तिगत रचना में प्रतिभा के चिन्हों को प्रकट किया है। अरबी (वाक्यों) आयात और कलमात की तज़मीन में वह व्यक्तिगत है। काव्य शैली में अपनी विशेषता को बनाये रखा है। दोनों के किस्से भी काफी भिन्न है। बिकट कहानी कुमारी के वियोग से प्रारम्भ होती है। जबकि क़ुतुबी ने एक नौजवान का चन्द्रमुखी के प्रेम बंधन से आरम्भ किया है। जो धीरे-धीरे वियोग की मारी हुई स्त्री की भावनाओं के वर्णन में परिवर्तित हो जाता है।

अन्ततः वह सांसारिक प्रेम से सत्यता का रूप धारण कर लेता है। और स्वः ज्ञान का माध्यम बन जाता है। यह एक रूचिपूर्ण अध्ययन है जो विशेष रूप से सूफियाना विचारों का केन्द्र बिन्दू (धूरी) और स्रोत रहा है। सत्यता के अस्तित्व तक पहुँच का यह एक मनमोहक विचार था। जो एक विशेष समूह में सामान्य रूप से प्रसिद्ध था। गागर व सागर का विचार भी उसी सोच का दूसरा पहलू है। बूँद का सागर से जुदाई का वर्णन भिन्न-भिन्न रूपों में होता रहा है। मौलाना रूम ने आरम्भ किया था कि हुस्ने अज़ल से अलग होकर प्रकृति की प्रत्येक वस्तु रोने पीटने में व्यस्त और हुस्ने अज़ल में विलीन होने के लिए व्याकुल है। बाँसुरी की आवाज उसी का प्रकटन है। जो अस्तित्व से दूर होने के कारण है। अस्तित्व से दूरी का दुख सांसारिक है। यह विचारधारा दार्शनिक तर्क वितर्क का केन्द्र बिन्दु समझा जाता है। क़ुतुबी की विचारधारा तेरह मासे से मेल खाती है। यह प्रेम कथा आदर्शवाद की मिसाल से भरपूर है। जिसका अन्त एक सूफी बुर्जुग की मुलाकात से होता है। इस सन्दर्भ में मौलाना रूमी की कविता का यह अंश बहुत ही स्वभाविक है। उनकी इन पंक्तियों में धर्म दर्शन और सूफी परम्परा की परछाईयाँ मौजूद है।

तेरा तो अर्श कुर्सी तक मकाँ है
क़दीमी घोंसला असली ऊहाँ है

जो असली घर को छोड़ा तब पड़ा दुख
बिना ऊस घर कहाँ अत पाये सुख

इससे सम्बन्धित दूसरे विषय भी क़ुतुबी ने बयान किये हैं जो सूफी विचारधारा के अनुकूल है। जो कविताओं में बयान होते रहे। जिसे विशेष दो शब्दों से अत्यधिक रूप से उल्लेख किया गया है। उसे हकीकी और मजाज़ी नामों से याद किया जाता है। अर्थात् परमात्मा से प्रेम के लिए

सांसारिक प्रेम एक सीढ़ि की भांति है। इस विचारधारा पर बड़ा विवाद भी रहा है। परन्तु उर्दू फारसी कवियों ने इस पर बहुत कुछ लिखा है। और भाँति-भाँति रूप से विचार प्रकट करने का प्रयत्न किया है। क़ुतुबी के शेर देखिये तो अनुमान होगा कि काव्य रचनाओं के प्रारम्भ काल में इस विषय पर भरपूर चर्चा होती रही है-

गया है इश्क में दीवानगी सैं
मजाज़ी के बिनाँ फरजानगीं सैं

करो नहनू अकरब को सही रे
वही है सब जगह हाज़िर वही रे

मेरा दिलदार था मेरे ही घर में
बैठा एक बात के ऊँही सुना था।

उर्दू में कई बारह मासे लिखे गये, जिसमें बारह महीनों के विरह की चर्चा की गई है। परन्तु क़ुतुबी ने बारह मासे की परम्परा की उपेक्षा करते हुए उन्होंने तेरह महीने के दुख दर्द को अपना प्रसिद्ध विषय बनाया। जेठ के महीने में लोन्द या मलमास लग गया और इस प्रकार विरह के एक महीने के अधिक दुखदर्द सहने पड़ेः

महीना तेरहवाँ जब जेठ लागा
मेरा दुख लिखते है उस मास भागा

क़ुतुबी की यह विशेषता दूसरे रचनाकारों से भिन्न है। समकालीन रचनाकारों ने देहली स्कूल को बहुत विकसित किया। और यहाँ की भूमिस्थल को हराभरा कर दिया। वास्तव में क़ुतुबी का समय देहली स्कूल का प्रारम्भिक काल है। जिसने मीर और मिर्जा के दौर की शायरी की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रारम्भिक काल की रचनाओं का

आंकलन और विश्लेषण किया जाना बाकी है। जिसके फलस्वरूप उस दौर की रचनाओं के अध्ययन और निष्कर्ष पर नया प्रकाश पड़ेगा।

कुरान पवित्र धार्मिक पुस्तक है। यह आसमानी किताबों में सबसे अन्त में उतरी। और पूरे मानव समाज के उपदेश का स्रोत बनी है। मानवीय विचार के पूर्ण पहलू इसी पवित्र किताब से प्रकाश प्राप्त करते हैं। ज्ञान और विज्ञान का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसने लाभ ना उठाया हो। साहित्यिक रचनाओं को भी इसने अधिकतम रूप से प्रभावित किया है। रचना का महत्व स्तर भी इसने तय किया है। विशेष रूप से अरबी, फारसी, उर्दू साहित्य पर जहाँ-जहाँ इसका प्रभाव पड़ा है। उन कलाकृतियों को महानता प्राप्त हुई है। दकन से अलग आश्चर्य होता है कि उत्तरी भारत के प्रारम्भिक काल की कविताओं में भी इस पवित्र किताब के हवाले मौजूद है। क़ुतुबी का कलाम इस सन्दर्भ में बहुत ही आश्चर्यपूर्ण रचनात्मक उदाहरण है। दूसरे कलाकारों की तुलना में क़ुतुबी की यह मुख्य विशेषता है कि उन्होंने कुरान की आयतों से अपनी मसनवी को दिव्यपूर्ण बनाया है। उनसे पूर्व की रचना मुहम्मद अफ़जल की बिकट कहानी में यह विशेषता मौजूद नहीं है। ना इस प्रकार के हवाले है और ना उनमें यह प्रकाश है। लगता है कि शायद उनका कुरान का अध्ययन कम हो या गोपाल कहलाये जाने के कारण उसे उचित ना समझा हो। बाद के शायरों में शाह हातिम के यहां कुछ संकेत है। शाह मुबारक आबरू के यहाँ यह संकेत नहीं मिलते। कारण मालूम नहीं जबकि उनके समकालीन कवि शाकिर नाजी के यहाँ कई जगह हवाले मिलते हैं। कलाकार के रूप में क़ुतुबी ने अपनी कविता में गहरे विचारों के लिए कुरान की आयतों को शामिल करके अपनी कलाकृति को बहुत ही अर्थपूर्ण व दार्शनिक बना दिया है। आश्चर्य की बात है कि क़ुतुबी ने पवित्र किताब की इन आयतो को इश्क व मुहब्बत और प्रेम भाव को अपनी कविता में शामिल करके अपनी रचना को सुशोभित किया है। इन आयतों के सहारे कला में विचारों की एक शानदार दुनिया आबाद की है। मसनवी

का आरम्भ सृष्टि रचना के प्रारम्भ से होता है। क़ुतुबी ने इस धार्मिक आस्था को अपने दोहों में ढ़ाला है कि सृष्टि की रचना के समय ईश्वर ने सारी रूहों से सवाल किया था कि क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ। इस प्रश्न के उत्तर में सभी रूहों ने स्वीकार किया था कि बेशक आप ही हमारे रब हैं। क़ुतुबी ने इसको बड़ी खुबसूरती से धार्मिक और दार्शनिक रूप दिया है। सृष्टि का पहला दिन और किताब का पहला शेर दोनों में एक रचनात्मक इशारा मिलता है। इसी हवाले से क़ुतुबी ने एक और संकेत दिया है जो बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि एक अरब दुनिया है तो दूसरा भारत देश का सुन्दर मिश्रण है। इस्लाम और हिन्दू दोनो धर्मों के समागम से वह अपनी रचना को शुरू करता है। एक तरफ सृष्टि है जिसमें मालिक और बंदों के बीच अटूट बन्धन का बयान है तो दूसरी तरफ प्रेमी और प्रेमिका के बीच अटूट रिश्ते का बयान है। क़ुतुबी यह कहना चाहते हैं कि प्रेम बंधन भी सृष्टि की तरह प्रारम्भिक और प्रलय तक कायम रहने वाला है।

पीतम प्रीत की रीत बिधना रची अलस्त सैं
कालू बला अतीत कह छूटे हैं सब सैं

यह सूरह अल ऐराफ की एक सौं बहत्तरवीं आयत का अंश है-

अलस्तु बिरब्बीकुम कालू बला शहिदना

(क्या मैं नहीं हूँ तुम्हारा रब- बोले हाँ है हम स्वीकार करते है।)

इसके बाद दूसरी आयत प्रस्तुत है-

तुइज़्ज़ु मन तशाऊ हुक्म दीना
तुज़िल्लु मन तशाऊ लिख जो दीना

यह सूरह आले इमरान (पारह-3) की छब्बीसवीं आयत का अंश है (और इज़्ज़त देवे जिसको, चाहे और ज़लील करे जिसको चाहे)

इसके बाद दूसरा शेरी हवाला है जो पवित्र किताब की प्रसिद्ध आयते करीमा से लिया गया है। दोनों पंक्तियों में अलग-अलग आयत हैः

जिक्र अज़ फज़कुरूनी प्यार कीना
ज नहनू व अकरबम नज़दीक लीना

यह सूरह अलबकरा (पारा-2) की एक सौ बावन वीं आयत है।

फज़कुरूनी अजकुर कुम वश्कुरूली वला तकफुरून

(सो तुम याद करो मुझको मैं याद करूँ तुझको और अहसान मानो मेरा और नाशुकरी मत करो)

इस शेर की दूसरी पंक्ति में दूसरा इशारा है पूरी आयत इस प्रकार है-

व नहनू अकरबू इलैही मिन हब्लिलवरीद
(और हम उसके नज़्दीक है धड़कती रग से ज़्यादा)

यह सूरह क़ाफ छब्बीस की आखरी आयत है। दर्शन हो या धर्म और ज्ञान, ईश्वर की मौजूदगी का आभास होता है। इस्लामी दर्शन शास्त्र की चर्चा का एक स्रोत है। क़ुतुबी ने एक दूसरे शेर में इस प्राकृतिक अनुभव को कविता का रूप दिया है।

करो तुम नहनू अक़रब को सही रे
वही है सब जगह हाजिर वही रे

एक और हवाला पेश किया गया है। जो मानव जाति को निराश न होने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है।

किया है मुझ कूँ इन आयत ने आगाह
पढ़ा ला तकनतु मिर्रहमतिल्लाह

यह सूरह अज़्जुमुर (पारा 24) की बावनवीं आयत का हिस्सा है-

(मायूस मत हो अल्लाह की रहमत से)

एक और शेर पर नज़र पड़ती है जिसमें हजरत इब्राहीम से सम्बन्धित ईश्वर के अस्तित्व के ज्ञान की बहुत ही तर्कपूर्ण घटना का वर्णन किया गया है। रोशन चाँद और चमकते हुए सूरज को देखकर उन्हें पृथ्वी और आकाश के रचेता समझ लेना और फिर उनके गायब होने से विश्वास का धोखा साबित होना बताया गया है। हज़रत इब्राहीम को सूरज चाँद के छुप जाने पर विश्वास हुआ कि यह रब नहीं हो सकतेः

खलील आशा दर मुल्के ख़तन ज़न
नवाये ला युहुब्बुल आफ़लीं जन

कुरान पाक की आयत की तरफ़ इशारा है जिसका अर्थ होता है कि

"फिर जब वह ग़ायब हो गया तो बोला- मैं पसंद नहीं करता छुप जाने वालों को।

सूरह अनआम पारह 7 की 76 आयत का अन्तिम भाग है। एक और दोहा देखिए-

हुवल अव्वल हुवल आख़िर हुवल्लाह
हुवज़्ज़ाहिर हुवल बातिन हुवल्लाह

वही मालिक सबसे पहले है और सबसे अन्तिम भी। वही बाहर है और वही अन्दर भी है। वही सब कुछ जानता है। सूरह हदीद पारह 27 आयत 3 का यह एक टुकड़ा है जिसे क़ुतुबी ने प्रयोग करके अल्लाह की महानता को स्वीकार कराने की कोशिश की है। वह अन्तर ज्ञानी और सर्वव्यापी है, वही अतीत है, सदैव रहने वाला है हर चीज़ का विनाश होने वाला है परन्तु वह हमेशा-हमेशा रहेगा।

क़ुतुबी की कला की यह विशेष पहचान है कि वह धार्मिक पृष्ठभूमि का वर्णन करके अपनी रचना का एक वातावरण बनाता है जो काव्य शैली को अत्यधिक रोचक और रचनात्मक भाव देता है। इस आसमानी किताब के हवालों को शेर की भाषा में परिवर्तित करना सरल काम नहीं है। इसके लिए दिव्य दृष्टि चाहिए और कला पर पूरा अधिकार जब तक ना हो यह साहस सफल नहीं हो सकते। क़ुतुबी की यह विशेष पहचान है उर्दू के दो एक बारह मासों के अतिरिक्त यह काव्य शैली नजर नहीं आती। रचना की यह शैली क़ुतुबी की विशेष रूप से व्यक्तिगत पहचान है। इससे लगता है कि वह सिर्फ कवि नहीं है बल्कि धार्मिक आस्था में गहरा विश्वास भी रखता है। चूँकि इस नज़्म का विषय सूफियाना है इसलिए इस भाषा शैली का प्रयोग उचित लगता है। वरना क़िस्से कहानियों में आस्था से सम्बन्धित हवालो का बयान बहुत अच्छा न ही समझा गया है। फिर भी क़ुतुबी की यह कोशिश एक राह की ओर मार्गदर्शन का काम करती है। इसका महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि उर्दू की प्रारम्भिक रचनाओं में अपना विशेष स्थान रखती है। यह तेरह मासा अभी तक अंधकार में था। इसके प्रकाशन के बाद साहित्यिक इतिहास और आलोचना की नजर से इसका अध्ययन किया जाएगा। और दूसरे बिन्दुओं को पाठकों के सामने पेश किया जायेगा। इस संदर्भ में यह इशारा भी आश्चर्यपूर्ण है कि क़ुतुबी ने केवल कुरान के हवालों से अपनी कविताओं को रोशनी प्रदान की है। और

मसनवी में रहस्यात्मक बिन्दुओं को उजागर किया है। बल्कि हदीस पाक अर्थात् मुहम्मद साहब के कथन को भी कविताओं में पेश किया है। केवल एक उदाहरण पेश हैः

पढ़ो ला होल इस्तग़फार कीजे
सिद्क़ दिल सैं खुदा का नावँ ली जे।

जिसका अर्थ होता है कि अपने गुनाहों की माफी के लिए सच्चे दिल से मालिक का नाम लेते रहना चाहिए। एक दूसरे दोहे में भी अरबी का एक टुकड़ा प्रयोग किया है। बल्कि यहाँ अरबी के साथ फारसी का सुन्दर समावेश भी मौजूद है जो क़ुतुबी के भाषा ज्ञान के अतिरिक्त दोनों भाषाओं के प्रयोग पर कमाल हासिल है। यह उदाहरण उर्दू साहित्य के प्रारम्भिक रूप की भी पहचान है जो बहुत पहले से प्रचलित थी अमीर खुसरो के दो सुखनो की परम्परा कई सदियों तक दोहराई जाती रही है। जिसकी बड़ी मिसाल वह गज़ल है। जो दुराएँ नैना और बनायें बतियाँ के नाम से बहुत मशहूर है। यहाँ क़ुतुबी ने निम्नलिखित शेर में अरबी फारसी के शब्दों का प्रयोग किया है जिसमें एक महत्वपूर्ण उपदेश है और सफलतापूर्वक जीवन गुज़ारने का रहस्य भी है।

अगर अस्सइये मिन्नी खाँदई
ज़ महनत पस चिरा दरमाँदह ई तू

सारांश यह है कि अगर तुमने परिश्रम करने का सबक पढ़ा है तो फिर महनत करने से जी क्यों चुरा रहा है? यह एक उपदेश का केन्द्र बिन्दु है जो धार्मिक पुस्तकों के अलावा सफलता प्राप्त करने की कुन्जी भी है। क़ुतुबी ने

अपनी कविताओं को नैतिक विचार का रंग दिया है। तेरह मासे के आरम्भ में एक शेर इसी सन्दर्भ में बहुत ही विचारपूर्वक हैः

सर्रफनल उम्र फी लहू लईब
मा हा सुम्मा आहा सुम्मा आहा

यानि बड़े दुख की बात है कि जीवन को खेल तमाशे या व्यर्थ कामों में गँवा दिया। यह भी एक उपदेश है।

इस विस्तृत वर्णन का यह तात्पर्य है कि क़ुतुबी ने अपने कलाम को इस्लामी इशारों और हवालों के प्रयोग से और ज्ञानात्मक आकर्षक बनाया है और नये अर्थों से सम्पन्न किया है। इनका सद उपयोग बहुत सार्थक है। जहाँ कहीं भी उन्होंने जरूरत समझी शेरों में जगह दी। इन हवालों से क़ुतुबी की धार्मिक आस्थाओं का अन्दाजा होता है। और उनके भाषा ज्ञान का भी पता चलता है। यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आसमानी किताब के ज्ञान को रचना की रूह में कैसे बोला जा सकता है। इस बिन्दु को इक़बाल ने भी भलीभाँति समझा और प्रयोग किया। इसी कारण तेरह मासे के रचनात्मक वातावरण में सौन्दर्य का आभास होता है। शायद सांसारिक और अध्यात्मिक प्रकटन में इस केन्द्र बिन्दु को महत्व दिया गया है। आश्चर्य और भी बढ़ जाता है कि भाषा का स्तर दार्शनिक न होने के बावजूद इन गहरे विचारों को सामान्य बोलचाल में प्रयोग किया गया है। यह एक लोक कहानी है जो लोक भाषा में बयान की गई है। अर्थात् यह भाषा पढ़े लिखे लोगों की शैली नहीं है। और न ही भाषा ज्ञान के स्तर पर कोई मान्यता रखती है। काव्य रचना के स्तर पर भी उच्चकोटि की नहीं। स्वयं कवि भी कोई मशहूर व्यक्तित्व नहीं रखता। समकालीन पुस्तकों और रचनाओं में नज़रअंदाज़ किया गया है। कुछ ही वर्षों के बाद पहला तज़किरा (काव्य साहित्य का इतिहास) निकातुश्शोरा 1751 ई. में लिखा

गया। जिसके लेखक बड़े प्रसिद्ध कवि मीर तक़ी मीर है। जिन्होंने क़ुतुबी के जमाने में जन्म भी लिया और दिल्ली के रहने वाले थे क़ुतुबी का नाम भी अवश्य सुना होगा। क्योंकि क़ुतुबी का दिल्ली आना जाना लगा हुआ था। दिल्ली से रोहतक अधिक दूर भी नहीं है। उनके दिल्ली आते रहने की पुष्टि भी होती है। इन सब वास्तविकता के बावजूद मीर ने अपने तज़किरे में उनकी चर्चा नहीं की है। और ना ही किसी और जगह भी हवाले मिलते। सिवाये आबरू की डायरी के। भला हो शाह मुबारक आबरू का जिन्होंने अपनी डायरी में इनका जिक्र किया है। वही एक केवल प्रमाण है।

अभी क़ुतुबी के भाषा ज्ञान का वर्णन किया गया है। फारसी के हवालों की भी कमी नहीं है। फारसी के कई शेर इस कहानी में नक़ल किये हैं। शेरों के अलावा उनके टुकड़ों को भी अपनी कविताओं में ढाला है और उनसे बहुत लाभ भी उठाया है। उचित स्थान पर फारसी की इन पक्तियों के प्रयोग से कविताओं में सुन्दरता पैदा हुई है। और शेर का प्रभाव भी बढ़ गया है। क़ुतुबी की कविता कहने की यह विषेशता है कि उससे उनके अनुभव का ज्ञान होता है। चूंकि फारसी ने उर्दू भाषा की सरपस्ती की है और भाषा शैली में उसका बड़ा योगदान भी रहा है। यह वास्तविकता है कि उर्दू भाषा और साहित्य में फारसी और अरबी की बड़ी सहायक रही है। फारसी की उर्दू पर बाहरी छाप पड़ना जरूरी भी था। प्राकृतिक रूप से यह बहुत जरूरी था। फारसी और हिन्दी के मिलाप से उर्दू का जन्म हुआ। बहुत दिनों तक इसके निशान भी रहे और काफी समय तक मिलीजुली भाषा का प्रयोग भी होता रहा है। ख़ान आरजू ने इसकी आलोचना की। आरजू और शेख अली हजीं में भाषाई जंग शुरू हो गई और भारत की फारसी में शेर कहने वालों को कमतर स्तर का कवि कहा गया जिसे वह सबके हिन्दी (हिन्दुस्तानी शैली) का नाम भी दिया गया, आरजू के बाद शाह मुबारक आबरू ने इस मोर्चे को संभाला और उन्होंने शायरी में फारसी शब्दों और व्याकरण के प्रयोग को अनुचित करार दिया। इस सन्दर्भ में यह कहना उचित होगा कि क़ुतुबी

के जमाने में ही भारतीय भाषाओं की आज़ादी का रूजहान पैदा हुआ। इस सच्चाई के बावजूद फारसी का चलन जारी रहा। इसका ज्वलन्त उदाहरण क़ुतुबी की इस मसनवी में मिलता है। जैसे कि अरबी के हवालों से अपने कलाम को सुशोभित किया है ऐसे ही उन्होंने फारसी कविताओं का प्रयोग करके उनकी मान्यताओं को प्रमाणित किया है। यह परम्परा फारसी के गहरे प्रभाव से प्रचलित जो उन्नीसवी और बीसवीं सदी तक देखी जा सकती है। ग़ालिब और इकबाल जैसे फारसी शायर भारत की जमीन ने पैदा किये। निम्नलिखित कुछ मिसालों से इस विवाद पर भरपूर रोशनी पड़ती है-

कमान इश्क हर जागह कुनद तीर
सिपर दारी बिना कार तद्बीर

इलाही गुन्चाए उम्मीद बक्शाइ
ग़ले अज़ रोजाए जावेद बनमाइ

तबीबे इश्क रा दोकाँ क़दाम अस्त
इलाजे जाँ कुनद ओर चे नाम अस्त

एक दूसरे अरबी टुकड़े के साथः

अगर अस्सई मिन्नी खानदाह तू
ज़े महनत पस चिरा दर मानदाह तू

एक और रूप देखिए-

सर्व सीम अन्दाम महबूब

इनके अतिरिक्त फारसी तरकीबें भी शेर को संगीत और लय से भरपूर करती हैं। क़ुतुबी कलाम को सुन्दर और सार्थक बनाने की शैली से भलिभांति परिचित थे। कलात्मक सौन्दर्य के समावेश में संकेतिक रूप

उपमा और रूपक से बड़ा काम लिया है। ऐतिहासिक पस मन्ज़र या घटना के दृश्य को आँखों के सामने प्रस्तुत करने के लिए यह ऐतिहासिक इशारे बड़े प्रभावशाली होते हैं। केवल एक शब्द के प्रयोग से भूतकाल की पूरी कहानी आँखों के सामने घूमती है। और किस्से के प्रभाव में बढ़ोत्तरी करती है। समक्ष पाण्डुलिपि के अध्ययन से इस सन्दर्भ में कुछ उदाहरण पेश करना उचित होगा। एक तलमीह (ऐतिहासिक संकेत) के इशारे को ध्यानपूर्वक देखें।

तेरा जलना होवे गुलज़ार प्यारे
अंगारे सब होवें फुलवार प्यारे

पात्र और घटना का नाम लिये बिना सामान्य बयान में केवल एक बहुत सटीक संकेत को देखिए। क्योंकि इस शेर में इस्लामी किताब कुरान के सन्दर्भ में एक बहुत बड़ी घटना का उल्लेख है। जब हज़रत इब्राहीम को नमरूद बादशाह ने दहकते हुए अंगारों में डाला था। मालिक ने उन दहकते हुए शोलों को ठंडा करके फुलवारी में बदल दिया और हज़रत इब्राहीम सही सलामत निकल आये। इस ऐतिहासिक इशारे को क़ुतुबी ने बड़ी सार्थकता के साथ अपनी कहानी के प्रेमी को यह सबक दिया है कि तुम प्रेम के अंगारों में गुज़र कर सलामती के साथ सफल होंगे। शर्त है कि तुम सारी कठिनाइयों को सहन करते रहो। एक दूसरा विचार भी देखिये जो केवल परम्पराओं के अन्तर्गत बयान किया जाता है। यहाँ हातिम का बयान है जो एक पात्र है-

अचम्भे का नया यह नेह लागा
जिसको सुन के हातिम इश्क त्यागा

एक दूसरे शेर में कुरान पाक की मशहूर घटना का जिक्र है। जो हजरत यूसुफ ओर जुलेखा से सम्बन्ध रखता है। कहा जाता है कि हज़रत यूसुफ

अपनी सुन्दरता में अनुपम थे और बादशाह की बीबी ज़ुलेख़ा उनको बहुत चाहती थी। ज़ुलेख़ा की यह प्रेम कहानी पूरे देश में चर्चा का विषय बन गई थी। हज़रत यूसुफ जो बादशाह के ग़ुलाम थे उनके बारे में बहुत सारी झूठी बातें फैल गई थी। परन्तु ईश्वर ने उनकी पवित्रता को बरकरार रखा और ज़ुलेख़ा को झूठा साबित किया। और हजरत यूसुफ को मिस्र का बादशाह बनाया। इस रोशनी में नीचे लिखे शेर को इसी संदर्भ में देखिए-

ज़ुलेख़ा बार बहुता ख़ार कीनाँ
मेरे यूसुफ ने कैसा बार कीनाँ

ज़ुलेख़ा की तरह बॉरी कहाई
हुआ मजनू तब लैला जो पाइ

इन इशारों का कविता में सदैव महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इससे बड़ी से बड़ी घटना को केवल कुछ शब्दों में बयान करके पूरे वाके को पेश किया जाता रहा है। और कवियों ने इनसे बड़ा लाभ उठाया है। इसे संक्षिप्त रूप देकर इसके प्रभाव को दुगना कर दिया जाता है। क़ुतुबी ने जहां इस्लामी या अरब व ईरान के पात्रों का वर्णन किया है। वहीं उन्होंने भारत के पात्रों का भी सम्मान करते हुए अपनी शायरी में बहुत ही सार्थक स्थान दिया है। एक उदाहरण देखिये-

फागुन रंग गुलाल लाऐ फूल बसन्त के
घर नहीं मथुरा लाल यूँ हेंगे दिन तन्त के

आये फिर इन्द्र बजाये नकारा
पिया बिन हाल क्या होगा हमारा

इसके अतिरिक्त कहानी का सम्पूर्ण वातावरण भारत देश को ही समर्पित है। दो सभ्यताओं के मिश्रण से इस कहानी का ताना बाना बुना

गया है। सूफी विचारधारा के समन्वय का यह एक अदभुत उदाहरण है। इसमें भारतीय भाषाओं का मिला जुला रूप इस बात का प्रतीक है कि लोक भाषा का यही समन्वय बहुत समय तक जारी रहा। जो बाद में भाषाई शुद्धिकरण के नाम पर दो ख़तरनाक विचारों के आधीन होकर लोक भाषा और साहित्य का गला घोंट देता है क़ुतुबी की इस शैली का बहुत दिनों तक आचरण होता रहा। विशेषकर बारह मासा जैसे लोक साहित्य के लिये यही अन्दाज़ मान्य रहा। इस शब्दावली से भी इसकी पुष्टि होती है-

पीतम पीत की रीत बिधना रची अलस्तसैं
हुस्न तीरथ ऊपर अश्नान के तार

लगा तड़फन जैसें मछली बिना आब
तबीब ओर बेद कीधर के बुलाऊं

तजा रुबकों चुना गोपाल अपना
दुआ मांगू पसारूं हक़ ऐती बांह

कि मिट जावे जनम का दुख अन्देशा

ऐसे सरल और सादा शब्दों के साथ साहित्यिक भाषा का भी उपयोग मिलता है-

हुआ बोसो किनार आख़िर मुयस्सर
वलेकिन ई गरीब अन्दर ख़ता है

लगा सन तेरह अज़ फज़्ले इलाही

भाषाओं के इस संगम में शब्दों का समावेश कहीं-कहीं नहीं अकसर बड़ा मनमोहक लगता है। कठिन या अजनबी शब्द भी दूसरे शब्दों के साथ

मिलकर सरल और स्वभाविक बन जाते हैं और अपनी दूरी खो बैठते हैं। शब्दों के प्रयोग में क़ुतुबी को बड़ी दूरदर्शिता प्राप्त है। इससे कहानी की कड़ी नहीं टूटती और प्रवाह भी नहीं रूकता। पाठक आगे बढ़ता रहता है और कहानी के अन्त तक पहुंचने की चेष्टा करता है। शब्दों के अर्थ न भी समझ में आये भावार्थ का ज्ञान या आभास हो जाता है। कुछ उदाहरण पेश हैं-

मेरे वाली मुझे दारू बताओ
शिताबी दोस्त का मुखड़ा दिखाओ

तेरी बाज़ी को कौन है साज़ यारब
गंवाया यार प्यारा हाथ के जब

तमाशा मुल्क मुल्कों का जो देखो
हैं दिन परवाज़ के परवाज़ सीखो

फारसी के यह शब्द हिन्दी के साथ घुलते और पिघलते महसूस होते हैं। आश्चर्य है कि कुतुबी ने अधिक प्रयत्न नहीं किया, नहीं तो वह एक महान काव्यकार हो सकते थे। संभव है कि उन्होंने कुछ और भी रचना की हो जो हमारी पहुँच में नहीं है।

क़ुतुबी ने फ़ारसी व्याकरण को हिन्दी शब्दावली के साथ खूब प्रयोग किया है। और कोई संकोच नहीं जताया है। व्याकरण की दृष्टि से यह सही नहीं है कि किसी दूसरी भाषा के शब्दों के लिये दूसरी भाषा का व्याकरण प्रयोग किया जाय। जैसे बात और फूल हिन्दी के शब्द हैं। इनका बहुवचन बनाने के लिये फारसी क्वायद के नियमों का पालन किया जाय। जब कि हिन्दी में नियम है और हम बात या फल का बहुवचन बातों और फूलों से करते हैं। फारसी में बहुवचन बनाने के लिए न और आ यानी अ और

न अन्त में जोड़ देते हैं। जैसे गुल से गुलाँ, चिराग़ से चिरागाँ, किताब से किताबाँ। कुतुबी ने फारसी के इस नियम को बदल दिया। फल से फलां, बात से बातां, कुतुबी ने कुछ शब्दों को बनाया भी है। दो शब्दों के मिलाप के भी उदाहरण मिलते है।

बसा कर सुख नगर अब क्यों उजाड़ा ख़ाक पाँ, दुख अन्देशा, अजायब रूत वग़ैरह

इन विशेषताओं के साथ यह भी एक महत्त्वपूर्ण बात है कि क़ुतुबी ने फ़ारसी के प्रयोग से अपनी लम्बी कहानी को बोझल नहीं बनने दिया। फिर भी किस्से या कहानी में कहीं-कहीं यह बाधा या पेबन्द पसन्द नहीं किया जा सकता। सूफी विचारों को अधिक गहरा या दार्शनिक बनाने के लिये शायद ऐसा किया गया हो। पूरी कहानी में गिनती के चार पांच दोहे ऐसे हैं जो पूर्णतः फ़ारसी के हैं।

यह बिन्दु भी दृष्टि में रहे कि अकरम क़ुतुबी ने फारसी दोहों के अधिक प्रयोग से मसनवी को बोझल नहीं बनने दिया है। आवश्यकता के अनुसार प्रयोग में लाये हैं जबकि अफजल ने बिकट कहानी में फारसी दोहों का अधिक से अधिक प्रयोग किया है। दोनों बारह मासो के दोहे की संख्या बराबर है। परन्तु अफ़ज़ल ने फारसी के इक्कीस (21) शेर हैं जिससे उर्दू दोहों का प्रवाह बधित होता है। बाद के दूसरे सब शायरों ने अकरम क़ुतुबी की पैरवी करते हुए फारसी दोहों की अधिकता से परहेज़ किया है। कुछ ने तो बड़ी सख्ती के साथ उपेक्षा की है। यह बात भी उचित है कि बिकट कहानी अकरम क़ुतुबी के तेरह मासे से एक शताब्दी पूर्व की रचना है। उस काल में फारसी का अधिक प्रचलन था और उर्दू की शब्दावली अभी इस योग्य नहीं हुई थी और अमीर खुसरो की परम्परा का चलन जारी था, जिसमें फारसी व उर्दू दोनों साथ-साथ प्रचलित थीं। अकरम क़ुतुबी तक आते-आते उर्दू, फारसी से काफी सीमा तक दूरी बना चुकी थी।

कई प्रकार से इस मसनवी को बड़ा महत्व प्राप्त है। यह लगभग सवा तीन सौ साल पुरानी रचना है। यह उत्तरी भारत में कविता के प्रारम्भ का प्रथम रूप है। इसका सबसे अधिक भाषाई मूल्य भी है। भाषाई इतिहास का यह एक मुख्य दस्तावेज है और साहित्यिक रचना केन्द्र बिन्दू भी है। यह उर्दू भाषा का अस्थाई दौर है। जो चन्द बरसों या अर्द्धशताब्दी के गुज़रते ही हर प्रकार की रचना के योग्य बन जाती है जिसमें मीर और मिर्जा जैसे बड़े कलाकार को स्रोत मिला। अकरम क़ुतुबी कोई बड़ा रचनाकार नहीं है। जिसे हम उस समय का रोशन प्रतीक कह सकें। परन्तु भाषा और साहित्य के महत्व में उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। उनकी प्राचीनता मान्य है। यह प्राचीन साहित्य की बहुमूल्य रचना है। जिसमें काव्य रचना की अद्भूत मिसालें मौजूद है। इनके अतिरिक्त भाषाई सभ्यता के बहुत से रूप मौजूद है जो उस समय की काव्य शैली की परम्परा को दर्शाते हैं तेरह मासे में शब्दावली का एक भाग ऐसा मौजूद है जो उस दौर की बोलचाल का पता देता है। जैसे सैं, सौ, सूँ, सीस, प्रीत, रीत, अतीत नाँव, गाँव, मुख, पिया, दिया, दरस, वैध, कारण, मास रैन इत्यादि - जगह जगह इन्हें बहुत ही सादगी के साथ प्रयोग किया गया मुझ, तुझ, अंखिया, नैना, अरे, री, ऊजाड़ा, ऊठाया, मल्हम, धाम, चाम, तड़फूं इत्यादि शब्द ऐसे हैं जो सब के प्रयोग होते थे। और गांव देहात में तो अधिक प्रयोग में थे। अरबी व फारसी के शब्दों के उच्चारण को ही किसी गांव की बोली में तब्दील किया गया है। लरजा, गुस्ल, अन्देसा, जैसे बहुत से शब्दों की मिसालें मौजूद हैं। लिखने की शैली भी अलग दिखाई देती है। उस समय लिखने के लिए नस्तालीक और शिकस्ता को काम में लाया जाता था। नस्तालीक ईरान की देन है। जिसे अरबों की लेखन शैली से मिलाकर आविष्कार किया गया था। यह बहुत साफ और अति सुन्दर लिखने की कला थी जिसे लिखने पढ़ने में आसानी होती थी। शाहजहाँ के समय में दफ्तरी कामों में वृद्धि के कारण जल्दी-जल्दी लिखने की परम्परा पड़ी और शिकस्ता खत

का आविष्कार हुआ। धीरे-धीरे यह रोजाना की लिखावट में भी प्रयोग होने लगा। पाण्डुलिपियों की भी लिपि बदल गई। अधिकतर पाण्डुलिपियां शिकस्ताख्त (टूटी-फूटी लिखावट) में पाई जाती है। अरबी की लिपि नस्ख कहलाती थी जो कुरान लिखने के लिए विशेष रूप से प्रयोग में थी। शब्दों या अक्षरों की इमलाई सूरतों में बड़ी आज़ादी बरती गई। ज़बर ज़ैर का अन्तर भी बाकी नहीं रहा और कविता की आवश्यकता के अनुसार लफ्जों में परिवर्तन किये गये जैसे - ऊस, कीधर, आवना, आवन, ऊँहाँ, ईंहाँ, पढ़ना, कीनाँ, नाँह, बाँह, जाँह।

बहुत से ऐसे शब्द भी है जो अब प्रचलन में नहीं है। जिन्हें मतरूक (छोड़ा हुआ) कहा जाता है। उस समय यह बहुत प्रचलित थे और रचनाओं में भेदभाव भी नहीं था। वह सामान्य रूप से प्रयोग होते थे। और रोजाना की जिन्दगी का हिस्सा थे। यह शब्द शेर की रवानी में रूकावट ना थे। जरूरत के अनुसार प्रयोग किये जाते। और कविता की आवश्यकता के अनुसार मात्राओं की अवहेलना की जाती। तेरह मासे की शब्दावली का अध्ययन बड़ा दिलचस्प है। आश्चर्य होता है कि इन शब्दों के स्थानीय स्रोत अलग-अलग हैं। इनके स्रोत अलग-अलग होने के बावजूद अकरम क़ुतुबी की वहाँ तक पहुँच है। इस रहस्य का पता लगाना मुश्किल है कि तेरह मासे में हरियाणा से लेकर पटना तक के कुछ शब्द मिलते हैं जो गाँव और देहात में भी प्रयोग किये जाते हैं। क़ुतुबी के बारे में नहीं मालूम कि उन्होंने देहली से पूरब की ओर सफर भी किया या नहीं। कुछ लोगों ने अफ़ज़ल को भी पूरब का बाशिन्दा बताया है। क्योंकि बिकट कहानी में अवधि भाषा के बहुत से शब्द शामिल है। यह भी विश्वास करना पड़ता है कि मध्यमकालीन भारत के एक बड़े भाग की बोल चाल की भाषा एक जैसी थी। पद्मावत की चर्चा या उसकी भाषा में भी अवधि के साथ दूसरी बोलियों का समन्वय दिखाई देता है जिसमें भाषा का सरल रूप अति आकर्षक है और बोलने में कोई कठिनाई नहीं होती।

भारत एक बड़ा देश है। महाद्वीप की भाँति नाना प्रकार की भाषाओं का संगम भी है। भाषाई बहुरूपता के साथ धर्म, संस्कृति और रहन सहन में बड़ी विभिन्नताएँ हैं। इनमें लगभग हर रंग, हर प्रकार की सुगन्ध मौजूद है। यहां भौगोलिक सुन्दर दृश्य में पेड़ पौधे पत्थर, माहव साल की स्थितियों के साथ मौसमों में भाँति-भाँति के प्रभाव है। सामान्य रूप से तीन मौसमों को याद किया जाता है। जाड़ा, गर्मी और बरसात, में मौसम की तब्दीलियों पर नज़र रखने वालों ने इनको छः मौसमों में विभाजित किया है। बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर। कवियों की संवेदना और मनोवैज्ञानिकता ने साल के बारह महीनों को अलग-अलग परिस्थितियों का आधार करार दिया है। अर्थात् यह अन्तर बहुत ही कम दिखाई देता है। जैसे सावन भादो के महीने एक जैसे है और फागुन में भी कड़ाके की सर्दी पड़ती है। परन्तु कवियों ने इनमें भी भिन्न मौसमों की तब्दीली का वर्णन किया है। यद्यपि यह सब लगभग एक जैसी विशेषता रखते हैं। इस प्रकार बारह महीनों को ऋतुओं के अनुसार नहीं बाँटा जा सकता। परन्तु यह कवियों की अपनी-अपनी कल्पना है। वह तरह-तरह से प्रभावित होते हैं और आनन्द उठाते हैं। विशेष रूप से बरखा ऋतु का वर्णन बारह मासों में बहुत ही आनन्दमय होता है। घनघोर घटा चारों तरफ छायी होती है। मोर, पपीहे, झींगुर की आवाज काली रात के सन्नाटे को तोड़ती है। बादल की कड़क बिजली की चमक प्रेम के सन्दर्भ में बड़ी भयानक होती हैं। झूले कुवाँरियों के गीत गान भले लगते हैं। हरियाली, सावनी रिमझिम की बारिश बड़ी नशीली होती है। प्रकृति के इस वर्णन में भारतीय मौसम का हर पहलू शामिल है। लेकिन प्रेमिका का वियोग इस सारी सुन्दरताओं को कष्ट में परिवर्तित कर देता है। अन्य भी इससे उन्मोदित होते हैं। मगर बारह मासो का यह पात्र बड़ी व्यथा के साथ दिन गुज़ारता है। क्योंकि उसके प्रेम भाव को पहचानने और समझने वाला प्रेमी उसकी बाँहों से बहुत दूर होता है। इसी व्यथा का वर्णन बारह

मासे का बहुमल्य विषय है। इस प्रकार भारतीयता का जो स्वरूप बारह मासे में मिलता है वह दूसरी रचनाओं में कम दिखाई देता है।

अकरम क़ुतुबी ने अपनी कल्पना शक्ति का भरपूर प्रयोग करके एक नई परम्परा का आविष्कार किया। उनकी कल्पना प्रशंसा की पात्र है कि उन्होंने एक नई सोच की नींव रखी। किसी अन्य रचियता का ध्यान इस तरफ नहीं गया। भारत में बारह महीनों के बयान में एक सच्चाई इसी देश में तेरह महीने का भी साल होता है। क़ुतुबी ने अपनी कल्पना की उड़ान से परम्परा से अलग तेरह महीने के सन्दर्भ में तेरह मासा लिखा अर्थात् क़ुतुबी का दोस्त वियोग के तेरह महीने सहन करता है और अपनी दुरदर्शिता का बयान करता है। यह एक हैरत की बात है कि क़ुतुबी को बड़ी दूर की सूझी। और बारह मासे की परम्परा में एक नयापन पैदा किया। मेरी जानकारी के अनुसार किसी भी भाषा साहित्य में तेरह मासे के नाम से कोई काव्य संग्रह मौजूद नहीं है। इस सन्दर्भ में उर्दू साहित्य को क़ुतुबी की बदौलत भारतीय साहित्य में एक अनोखा और प्रतिष्ठित स्तर प्राप्त है। हम क़ुतुबी के आभारी है कि उन्होंने हमें नयी दृष्टि से विचार करने की शक्ति दी। क़ुतुबी ने अपने भाग्य पर बड़ा व्यंग्य किया है कि मैं क्या बद किस्मत हूँ कि मेरे पूर्वजों को तो बारह महीने का वियोग सहन करना पड़ा। परन्तु मुझे तेरह महीने का वियोग, मेरे भाग्य की रेखा बन गई। उत्तरी भारत में हर तीसरा साल लोंद या मलमास का होता है क्योंकि हिन्दी जन्त्री के अनुसार अंग्रेजी कलेंडर में दस दिन का अन्तर पड़ता है। तो हर वर्ष के दस दिन की कमी को पूरा करने के लिए तीन वर्ष में लौंद का एक महीना बढ़ा देते हैं। देहली के आसपास लौंद और उत्तर प्रदेश में मलमास भी कहते हैं। क़ुतुबी का यह दुर्भाग्य था कि उसे तपती धूप और जलती रेत के साथ वियोग को जेठ के महीने तक भुगतना पड़ा। क़ुतुबी बड़ी सुन्दरता के साथ अपने कष्ट को वर्णन करता है कि अन्य को बारह महीने का वियोग मिला मगर मुझे तेरह महीने सहन करने पड़े।

महीना तेरहवाँ जब जेठ लागा
मेरा दुख लिखते हैं उस माँस भागा

प्रेम किस्सा हुआ आखिर ए यारों
तेरह मासा है इसमें बिचारों

बारह मासा होय था और सबसे
तेरह माँसा जा कर कुतुब के

बिकट अफसाना है यह तो मोहिया
दोनों का नाँ दोई मियाना

बाद के काव्य में भी क़ुतुबी की इस परम्परा की पैरवी ना हो सकी। उस काल की दूसरी काव्य शैली भी इसमें मौजूद है, तो उर्दू या रेख्ता का विकसित रूप भी इसमें दिखाई देता है, जो उनके समकालीन शाइर है। उनकी रचनाओं से बहुत कुछ मिलता जुलता स्वरूप भी इसमें दिखाई देता है। जैसे आबरू हातिम, मजमनू, यकरू वगैरा। जिसकी बुनियाद पर भाषा के साथ काव्य शैली भी आगे बढ़ती है। और दिन प्रतिदिन प्रगतिशील होकर अग्रसर रहती है।

फिदा क़ुतुबी ऐसे महबूब पर है
कि मारे फिर जिलावे खूब तर है

बिरह का मैं अचानक तीर खाया
करेजा हाथ पकड़े घर को आया

दिखा कर एक झमक हँस कर सिधारा
मुझे ऐसी अदा करकर पिछारा

कोई बोला कि इसकूँ नाग खाया
कहीं इसके बदन में डंक लाया

थका अब हार कर बैठा हूँ एक थाँव
न पाया शहर शहर वह गाँव दर गाँव।

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी ने दो हजार पाँच में बारह मासा नेह प्रकाशित किया। जिसमें दो सौ उन्सठ अश्आर हैं। यह मौलवी हिफ्जुल्लाह कादरी की एक छोटी रचना है। कादरी मरहूम हिन्दी में तखल्लुस (लेखक का शायराना नाम) नेह करते थे। उर्दू में बन्दा और फारसी में हिफ्ज़ का प्रयोग करते रहे। 1860 में उनका देहान्त हुआ। उनका बारह मासा क़ुतुबी के तेरह मासे के बहुत पश्चात लिखा गया। फिर भी क़ुतुबी के तेरह मासे की विशेषता उसमें नहीं मिलती।

अस्थाई काल में भाषा का सन्तुलित होना अधिक सम्भव नहीं हो पाता और ना ही संतोष जनक और प्रभावशाली शब्दकोष ही होते हैं। जो रचना की कल्पना को और सफलता के साथ कागज पर उतार सकें। शब्दों की कमी के कारण भाव को पूरी तरह बयान नहीं कर सकते। कभी-कभी रास्ते में रूकावट बन जाते हैं। और रवानी में अवरोध उत्पन्न करते हैं। जिससे बयान की कड़ियों में बाधा दिखाई पड़ती है। क़ुतुबी के यहाँ भी यह सूरत है मगर कम है जिससे कविता का स्वाभाविक बहाव बाकी रहता है। निम्नलिखित शेरों को देखियेः

बूझे हर एक आकर क्या हुआ रे
कहें तुझ पर किन्हें जादू किया रे

कोई बतलावे या छाया हुई है
नजर डाईन की उसकूँ ले गई है

बोला एक प्रेत के देखे में आया
किन्हीं ने कुछ किन्हीं ने कुछ बताया

न दिखे घाव न कुछ दर्द पांव
जिसकूँ पर मरहम क्या लगाँव

तेरे कारण विरह किस देस जाँव
तबीब और बैद कीधर के बुलाँव

अरे यह तीर कारी जिसके लागे
न जीवे न मरे सोवे न जागे

वही मारे वही आखिर जिलावे
वही दारू देहे वही मरहम लगावे

फिदा क़ुतुबी ऐसे महबूब पर है
कि मारे फिर जिलावे खूबतर है

इन दोहों में किस्से का रचाव है और एक शेर दूसरे से जुड़ता है। इनमें सादा बयानी है और शब्दों में कहीं कोई रूकावट नहीं है। लोक भाषा के यह बड़े अच्छे उदाहरण है। जो रोज़ाना की बोलचाल और लबो लहजे का आभास कराते हैं। उर्दू का यह प्रारम्भिक रूप बड़ा आकर्षक है। और सीधी सादी जबान में कोई बनावट नहीं है। बल्कि स्वभाविक धारा प्रवाह है। जैसे इन दोहों को देखियेः

ऐसी हालत में बरसात आई
करी थी क्या बुरी मैने कमाई

तुम्हारे हुस्न का बाज़ार लागे
तमाशे कूँ तमामी ख़ल्क भागे

बारह मासे का ख़मीर सोन्दर्य और प्रेम भाव से मिलकर तैयार हुआ है। यह विषय मानव जीवन और मृत्यु का प्रारम्भिक और अन्तिम बिन्दु भी है। इसकी व्याख्या समाज़ और हकीकत (सांसारिक और अध्यात्मिक सत्य) के वर्णन के भिन्न-भिन्न रंगों की शैली से सजाया गया है। मित्र संगति से प्रेम और सौन्दर्य का आत्मज्ञान प्राप्त होता है। प्रेमिका की सुन्दरता का वर्णन काव्य सौन्दर्य का सबसे दिलचस्प विषय रहा है। विशेषतः बारह मासे की आधारशिला इसी स्त्री सोन्दर्य पर निर्भर है। वियोग का वर्णन सुन्दरता के माध्यम से कवियों के लिए खास विषय रहा है। अकरम क़ुतुबी ने भी सौन्दर्य वर्णन में बहुत ध्यान दिया है। कहीं-कहीं उनका बयान बहुत ही दिल को छूता है। निम्न दोहों को देखियेः

मुझे उन नयन खूनीं खार कीना
पराये हाथ मुझको बेच दीना

मकर कर जुल्फ और नयना लूभावें
अदा कर कर पराया घर लूटावें

मीठी दो बात कर चित चुरावें
कमाँ और बान कर पन्छी चुरावें

वहाँ एक सर्व सीम अन्दाज महबूब
न आवे वस्फ़् जिसके मुख सैती खूब

इन मिसालों से सौन्दर्य वर्णन का भलीभांति ज्ञान होता है और नारी के बदन के विभिन्न अंगों के वर्णन से उसका सरापा (नकसुख वर्णन) की तस्वीर कागज पर उतारी जाती है। पाठक भी कवि की भावनाओं में बराबर शरीक हो कर महबूब (प्रेमिका) की सुन्दरता को आँखों के सामने देख सके। इस तस्वीर के बहुरूप को इस छोटी सी कहानी में बड़े प्रभावशाली शब्दों में बयान किया गया है।

इस प्रकार सौन्दर्य वर्णन भारतीय साहित्य का ही नहीं बल्कि संसार की दूसरी भाषाओं के साहित्य में भी एक स्तम्भ की हैसियत रखता है। यहां इसका भी उल्लेख अवश्य है कि क़ुतुबी ने इससे दूरी रखी है। वह इस सुन्दरता से कोई साँसारिक सम्बन्ध नहीं रखता और ना वह इसके निकट जाता है, बल्कि वह इसे एक दार्शनिक या अध्यात्मिक रूप देता है, जो संसार के मालिक की बात से प्रेम भाव उत्पन्न करता है। इसमें भोग विलास का कोई अंदेशा या कल्पना नहीं होती है। बल्कि मालिक के ज्ञान ध्यान की ओर मनुष्य का ध्यान केन्द्रित होता है और वह अपने नैतिक आचरण के सुधार की ओर प्रेरित व अग्रसर होता है। दूसरे शब्दों में यह प्रेम भाव प्रकृति का एक मूल्यवान जज़्बा है। जो हर रचना में विद्यमान है।

क़ुतुबी के स्वभाव में समर्पण की अत्यधिक भावना थी वह अपने को बड़ा कलाकार नहीं समझते और ना ही वह किसी गर्व या गौरव के शिकार हुए। कला और ज्ञान में वह अपनी योग्यता का खण्डन करते रहे और अपने को अनजान बताते रहे। जबकि ऐसी सूरत नहीं है। वह पवित्र स्वभाविक रूप से, पवित्र चरित्र के मनुष्य थे। वह नैतिक गुणों से भरपूर व्यक्ति की भांति व्यवहार करते रहे। जिससे उनके मानवीय मूल्यों से गहरा लगाव और स्वस्थ विचारों का अन्दज़ा होता है। मसनवी के कई दोहों में इसका आभास होता है। एक शेर में उन्होंने स्वीकार किया है कि उन्हें न शायरी आती और ना ही ज्ञान प्राप्ति हैः

अरे क़ुतुबी अकरम गर है मशहूर
ज़ शेर-ओ-इल्म दो हस्त माज़ूर

इसका अर्थ यह है अकरम क़ुतुबी अगर चः मशहूर है। मगर कविता और ज्ञान दोनों चीज़ो में कुछ भी नहीं है। मसनवी के अन्तिम चरण में इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद साहब और चारों खलीफा से गहरी आस्था का

बयान है। जिससे उनके धार्मिक चिन्तन पर प्रकाश पड़ता है। और धार्मिक विचारों से गहरे विश्वास का भी पता चलता है। यह चिन्तन के ऐसे पहलू हैं जिन्हें नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता क्योंकि यह दीन धर्म के ऐसे बिन्दू है जिनसे व्यक्तित्व को बनाने और सँवारने का अवसर मिलता है।

तसद्दुक़ हो नबी के और अली के
दिगर असहाब हर चारों वली के

क़ुतुबी की इस मसनवी में एक नया मोड़ मिलता है कि लगभग हर बारह मासें की शुरूआत हम्द व नांत (ईश्वर और नबी की प्रशंसा) से होती है। लेकिन क़ुतुबी ने ऐसा नहीं किया। बल्कि अन्त में जिक्र किया है। हाँ यह जरूर है कि तेरह मासे के प्रथम शेर में श्रृष्टि के रचनाकार को याद किया गया है। इन बातों के अलावा क़ुतुबी ने अपने अस्तित्व के बारे में सूफियाना या दार्शनिक बिन्दुओं को भलीभांति याद किया है। और मानव जाति के लिए संदेश भी दिया है। मालिक जो सब का पालनहार है। उसकी प्रशंसा करने में कसर नहीं छोड़ी है। लगता है कि यह उसका विश्वास ही नहीं बल्कि अर्न्तआत्मा का गहरा अहसास है। जो कविता के रूप में कागज़ पर अंकित किया गया है। कुछ दोहों को देखियेः

मेरा दिलदार था मेरे ही घर में
बैठा एक बात के ऊल्हे था पिन्हाँ

खता मेरी तुम्हीं सैं सब अता है
वले किन ईं गरीब अन्दर खता है

वहीं मारे वही आखिर जिलावे
वही दारू देहे वही मरहम लगावे

इस तेरह मासे की लेखन शैली एक विशेषता रखती है कि यह लोक साहित्य का अद्भुत नमूना है जिसमें कला के विभिन्न रूप और शैली मौजूद है। साथ ही शेर को संगीत की सुरीली आवाजों से संजोया गया है। कला के महत्वपूर्ण अंगो और आवश्यकताओं का भी पूर्ण ध्यान रखा गया। इसमें उपमा के अद्भुत उदाहरण भी है। सादगी और शब्दों के चयन में बारीक बातों का बड़ा ध्यान रखा गया है। जिससे शेरों में एक चमक पैदा होती है और वह दिल व दृष्टि को खुशी प्रदान करती है। कुछ उदाहरण देखियेः

पड़ा धरती ऊपर बे होश व बेताब
लगा तड़फन जैसे मछली बिन आब

नैनों से यूँ छूटे लोहू फव्वारे
गोया उमड़ी नदी अज़ हर किनारे

हुए बरसात में ठंडक करेजे
मेरे सीने लगे आतिश के नेज़े

इस कहानी में क़ुतुबी ने कहीं-कहीं मुहावरों का भी प्रयोग किया है। जो रोजाना की बोल चाल का भाग समझे जाते है। हथेली पर सरसों जमाना, यह मुहावरे केवल दिल्ली के आसपास नहीं बोला जाता है, बल्कि भारत के बड़े भाग में प्रचलित है।

अरे क़ुतुबी यह दर्द कान्जी किन रूलाई
हथेली बीच यूँ सरसों जमाई

एक दूसरा शेर भी अधिकता के साथ प्रयोग किया जाता है। दो एक शब्दों का अन्तर है। मगर भाव बहुत ही आकर्षक है जो हमारे दैनिक जीवन में बोला जाता है। यह मसनवी का अन्तिम भाग है जिसमें क़ुतुबी सम्पूर्ण संसार के लिए प्रार्थना करता है।

कुतुब मेरे का जुग जुग राज रहियों
गंगा जमना में जब लग नीर बहियों

इस कविता में केवल कल्पना नहीं है और ना यह दर्शन शास्त्र का उल्लेख है। यह केवल एक प्रेम कहानी नहीं है बल्कि संक्षिप्त में भारत दर्शन का एक अनमोल नमूना है जो काव्य शैली के रूप में पेश किया गया है। कहानी मेले ठेले से आरम्भ होती है जहाँ तीर्थ, नहान, भीड़ भाड़, का बयान है। वही विभिन्न मौसमों का भी प्राकृतिक सुन्दर दृश्य भलीभाँति प्रस्तुत किया गया है। वर्षाकाल बड़ा भयानक होता है। बादलों की गरज बिजली की कड़क से दिल धड़कता है और एकाग्रता की भावना बड़ी कष्टदायक होती है। अन्धेरी रातों का सन्नाटा भयानक ही नहीं बल्कि मित्र के वियोग में सबसे अधिक बेचैनी का कारण बन जाता है। फिर कुवारियों के मलहार गाने, हिन्डोले, झूले भी पछतावे में वृद्धि करते है। सावन भादों घायल करने वाले महीने हैं। प्यारियां, मिलन के राग और हरे वस्त्रों से सुसज्जित होती है। सर्दी का मौसम भी वियोग के दुख दर्द में अर्द्धरात्रि की आहें बन कर प्रकट होता है, जो पीड़ा बन कर स्वप्न हीन रातें गुजारने पर मजबूर करता है। यह सम्पूर्ण परिस्थितियां शाइर के अनुभवों का संग्रह बन कर अवतरित होती हैं। क़ुतुबी के दोहों में इन अनुभवों की कमी नहीं है। वह एक सामान्य जन के कार्यकलाप की भी चर्चा करते हैं।

लगा साँव मचाई बादरों ने शोर
छवाये बन्गले घर घर में हर ठोर

भारतीय समाज का यह सामान्य कार्य है जो कवि के दिल में भी सुरक्षित है।

पपीहा पीव पीव मेरे पुकारे
बने में मोर और तन में झिन्गारे

कलाकार को स्वाभाविक और यथार्थपूर्ण स्थिति का ज्ञान होता है। एक कोमल विचार भी देखियेः

जो में होती नहीं यह दुख न होता
अदा ग़म्ज़े न दिखते ताना रोता

प्रत्येक भारतीय जानता है कि बरसात के बाद पूरा वातावरण धुल जाता है। धूप की तेज़ी कुवार के महीने में खाल को झुलसाने लगती है। क़ुतुबी का अनुभव देखियेः

कभी बरसे कभी तेज़ी करे घाम
मुबरावे मुज्द कूँ के माँस और चाम

यानि कठोर परिश्रम करने वाले मज़दूरों के बदन झुलसने लगते हैं। यह अनुभव भी ग्रामीण सामान्य जीवन का परिणाम है। इस प्रकार के व्यक्तिगत अनुभव भी इस कविता में देखने को मिलते हैं। और वर्तमान समाज में अपने महत्व की माँग भी करते हैं। भारतीय समाज में मौसमों के अनुसार त्यौहारों के माध्यम से खुशियां मनाने की रीतियाँ बड़ी सुखदायी है। और इनका एक सम्बन्ध धार्मिक आस्थाओं से मिलता है, तो दूसरी ओर सामाजिक बन्धनों से त्यौहारों की खुशियों को आमंत्रित किया जाता है। जिसमें हर छोटा बड़ा मिलजुल कर खुशी में शरीक होता है। चाहे वह दीवाली हो या होली यह त्यौहार भी विभिन्न मौसमों में मनाये जाते हैं। मौसमों के अनुसार पकवान कपड़े और मेलों के रूप भी बदलते हैं। सावन में सावनी मलहार के गाने होते हैं तो होली के गाने और पकवान भी अलग होते हैं। इन अवसरों पर खेल तमाशे, मेल मिलाप के बहाने के लिए, मेले आयोजित किये जाते हैं। जिससे पूरा समाज आनन्द उठाता है। क़ुतुबी भी इसी समाज में पैदा हुए थे। उनका पालन पोषण भी इसी समाज में हुआ

था। यह सम्भव नहीं था कि वह इस प्रेम कथा की रचना में इन्हें भूल जाते। उन्होंने बड़ी सच्चाई के साथ दीवाली, होली जैसे त्यौहारों का वर्णन किया है। निम्नलिखित पंक्तियों को देखियेः

दीवाली मचाई धूम घर घर
बटें सालोनिया खील भर भर

बिना तुम खील मेरे कील लागें
दीवाली के जो देव और भूत भागे।

होली से सम्बन्धित दोहे भी देखिए।

करेजा फूकने फागुन जो आया
कुवरयां बावरी ने मुख दिखाया

रंगीला घर नहीं किस पर रँगू रंग
खेल होरी कहो अब किसके प्रसंग

सँमझ एक ढ़ोल मुह बोली सँमझ रे
स्याना हो मत हो अन सँझ रे

जिससे होरी जराई यूँ जराया
नये सिर जींवँ जींवँ कू बिप्ता लगाया

अकरम क़ुतुबी ने प्रेम कहानी के अन्त में अफ़ज़ल की प्रेम कहानी का हवाला देकर अपनी कहानी को एक प्रसंग दिया है। और अपने रूहानी गुरू कुतुबशाह को अपना मार्गदर्शक बताया है। जिनका मज़ार साधौड़ा में है। उनकी औलाद में एक कमीस आजम हैं जिनसे क़ुतुबी को बड़ी आस्था है। बिकट कहानी के पात्र अर्थात् क़ुतुबी जगह-जगह भटकने और परेशान

होने के बाद अपने पीर ओ मुर्शिद के मज़ार पर हाजिरी देते हैं। वहाँ उन्हें ज्ञान प्राप्त होता है कि तुम कहाँ-कहाँ अपने प्रेमी को खोजने में भटक रहे हो। वह तो तुम्हारे बिल के अन्दर मौजूद है। अबू सालह जो कुतुब के तीसरे बेटे थे। उन्होंने ज्ञान दिया कि तुम अपने अन्दर झाँक कर देखो। तुम्हारे चाहने वाला तुम्हारे अन्दर ही विराजमान है। उसको देखने और गले लगाने की चेष्टा करो। क़ुतुबी ने अपनी शुक्रगुज़ारी का इस प्रकार वर्णन किया है शेरः

अरे क़ुतुबी, कुतुब के हो है कुरबाँ
जिन दिखलाया जाने जानाँ

उसी के लुत्फ सैं कश्ती हुई पार
नहीं तू ने रखा बीच मंझधार

यह भी हमारे किस्से कहानियों की परम्परा रही है कि अन्त में अपनी आकाँक्षा का बयान करता है। और अपने खुशहाल जीवन को अधिक मूल्यवान बनाने की दुआ भी करता है। इस प्रकार कहानी के बहुत से नियमों का पालन करते हुए क़ुतुबी ने काव्य आदर्शों का भरपूर सम्मान किया है। जिसमें हर एक दृष्टिकोण से कई संस्कृति, सभ्यता, समाज और भाषाओं का महत्त्वपूर्ण संगम का सबूत दिया है। वह बड़े कलाकार नहीं परन्तु समकालीन साहित्यकारों के समूह में ऐसी हैसियत रखते हैं, जैसे आकाश में चमकते हुए सितारों के बीच कुतुब तारे की भाँति रोशन तारा होता है। उनकी मध्यम रोशनी हमारी काव्य रचनाओं को प्रकाश देती है। आज के पुस्तक पठन और पाठन के व्यर्थ विवाद में अलग प्राचीन साहित्य की पाण्डुलिपियों के हर शेर और सतर की पुनः प्राप्ति किसी दैविक उपहार से कम नहीं है।

तेरह मासा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम[5]

पीतम प्रीत की रीत बिधना रची अलस्त[6] सें
क़ालू बला[7] अतीत[8] कह छूटे थे सब सें

यूँ ही बना बनाव दहर[9] सें क़ुतुबी पीत का
आच्छा है सब दाव्विया[10] दिया मान चीत का

शुनो ए दोस्ताँ[11] किस्साऐ[12] हमन का
जो क्या भारी होता है दुख लगन का

गया था एक दिनाँ मैं नहान के थान[13]
हुस्न[14] तीरथ ऊपर अश्नान के थान

---

[5]शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बड़ा ही दयालु है
[6]ऋष्टि रचना का पहला दिन
[7]कहा तू ही है
[8]पुराना, भूतपूर्व
[9]दुनिया, संसार
[10]तरीका
[11]मित्रो
[12]कहानी
[13]स्थान, ठाँव
[14]सुंदरता

वहाँ यक सर्व[15] सीम[16] अन्दाम[17] महबूब[18]
ना आवे वस्फ[19] जिस के मुख सैती खूब

दोनों ओर से जो नागिन जुल्फ[20] छोड़ें
दोलाए की अंबरी[21] के सिर पे ओढें

दिखा कर यक चमक हँस कर सिधारा
मुझे ऐसी अदा कर कर पिछारा

नैनो के कोर से जीवरा लिया चोर
पुराने चल बसे बाक़ी रहे घोर

ब्रह्म का मैं अचानक तीर खाया
करेजा हाथ पकड़े घर को आया

पड़ा धरती ऊपर बेहोश व बेताब[22]
लगा तड़फन जैसे मछली बिना आब[23]

नैनो से यूँ छूटे लोहू फव्वारे
गोया[24] उमडी नदी अज़[25] हर किनारे

---

[15]लम्बा
[16]चान्दी
[17]बदन
[18]प्रेमिका
[19]गुण, ख़ूबी
[20]बाल, केश
[21]सुगंध में बसा काला पदार्थ
[22]तड़पता
[23]पानी, जल
[24]मानो
[25]से

भरे मुहँ में जैसे मस्त ऊँट के झाग
ऐसा कहूँ मो जानो खाया कही नाग

बूझें हर एक आकर क्या हुआ रे
कहें तुझ पर किन्हें जादू किया रे

कोई बोला कि उस कूँ नाग खाया
कहीं उसके बदन में डन्क लाया

कोई बतलावे था छाया हुई है
नज़र डायन की उस कूँ ले गई है

बोला एक प्रेत के देखे में आया
किन्हीं ने कुछ किन्हीं सें कुछ बताया

न दिखे घाव कुछ दर्द पाऊँ
कि जिस कूँ पर मरहम क्या लगाऊँ

नहीं पाये पड़े हों किसी सें
कि थक कर चूर हुआ है सबी सें

सियाने सब तरह के दूर रो हारे
जन्तर मन्तर सबो अपने चलाये

तेरे कारण ब्रह किस देस जाऊँ
तबीब[26] और बेद कीधर के बुलाऊँ

[26]हकीम, वैद्य

कमाने[27] इश्क हर जागह कुनद तीर
सिपर दारी बिनाँ कार ए तदबीर

अरे यह तीर कारी जिस के लागे
न जीवे ना मरे सोवे न जागे

जिन्ने मारा उसी से होये फिर सार
नहीं कुछ कर सके उस का जो अग़यार[28]

वही मारे वही आखिर[29] जिलावे
वही दारू[30] देहे मरहम लगावे

फिदा[31] क़ुतुबी ऐसे महबूब[32] पर है
कि मारे फिर जिलावे खूब[33] तर है

रहा दिन तीन तक बेहोश ब बेखुद[34]
आये थी जिस के पाछे सुरत और सुद[35]

बैठा उठ कर देखा अहवाल[36] अपना
तजा[37] सब कूँ चुना गोपाल अपना

---

[27]प्रेम का बाण हर जगह घाव करता है। उपाय या उपचार के लिये सावधान रहना चाहिए
[28]प्रतिद्वन्दी
[29]अन्त में
[30]दवा, इलाज
[31]निछावर
[32]प्रेमी
[33]बहुत अच्छा
[34]देशा, हाल सुध बुध
[35]दशा
[36]छोड़ा
[37]आग

ब्रह्म की दूँ[38] करेजे माँह लागी
मुहब्बत ग़ैर की जीव दिल सें त्यागी

अब कोई जो लालन को मिलावे
खुदा के वास्ते[39] यह दूँ बुझावे

कहीं देखा हो तो बतलाये दी जो
जमीं[40] का जस ब्रादर[41] हाल ली जो

कमर हिम्मत की बाँधी लाल के ख्याल
चला ढूँडन के है मानो भूँचाल

बूझूँ हर एक सूँ महबूब की बात
फिरूँ मजनू[42] होय के यूँ दिन रात

कहाँ तक क्या कहूँ इस राज[43] की बात
नहीं आखिर हुआ इस गम[44] का तूमार[45]

बड़ी महनत से पाया मैंने दिलदार[46]
सीने उनके होय काँटे सूँ गुलज़ार[47]

---

[38]लिये
[39]द्वारा
[40]भूमि
[41]भाई
[42]पागल, दीवाना
[43]भेद
[44]तकलीफ़
[45]सिलसिला, छोर
[46]प्रेमी
[47]खिले हुये फूल

चरण को चूँब कर आँखो लगाये
रतन और गोहर[48] को फिर देख पाये

पाऊँ से गिर पकड़ कर मुझ उठाया
मुहब्बत कर गले अपने लगाया

हमन उस का रहन तक ठोर पाया
जन्म का दुख ऊने यक पल में खोया

खेले हम तो उल्फ़त[49] के कई साल
मिटे श़श पन्ज[50] दिल के दर हमा[51] हाल

अज़ां[52] पस ईं फलक[53] मक्कार[54] मुकरे[55]
उठाया तूतिया कर्द आह किकरे[56]

मेरा उस का रक़ीब[57] एक ठोर में था
करे था दाव निस दिन दूर में था

हमन ग़ाफिल[58] किये थे काम कुछ ओर
पाया जब दाद उन परी ने उस ठोर

---

[48]मोती
[49]प्रेम
[50]दुविधा
[51]हर तरह से
[52]इसके पश्चात
[53]आकाश
[54]धोखेबाज
[55]धोखा दिया
[56]चिन्ता
[57]प्रतिद्वन्दी
[58]भुलावा

कहा महबूब[59] सें तो क्या भुलाना
तेईं ने उस का फिक्र[60] अब कुछ न जाना

ऊने यक ओर सेती प्रीत जोड़ी
तेरी उल्फत[61] जो अपने दिल सें तोड़ी

न मिल कर बात दो कैती प्यारे
अरे ढूँडूँ कहाँ अब उस दुवारे

अरे यारो डरो शैतान[62] सेती
सँभालो झूठ और तूफान[63] सेती

न थी कुछ बात झूटे ने बढ़ाई
अचानक आसमा[64] लुक[65] कां लगाई

जो आई उस की खातिर[66] दोस्त की बात
रहा जीव में गुस्सा कर के कीती रात

फिरूँ हूँ वे सर्व वपा[67] जोहता लाल
जो कुछ बीती है जान लूँ अहवाल

---

[59]भिन्न
[60]ध्यान
[61]प्रेम
[62]दुष्ट
[63]आपदा
[64]आकाश
[65]तक
[66]लिये
[67]सर से पाँव तक

निपट मरे गा बदला हक़[68] ने दीना
दुल्हन की वस्फ[69] बगायत[70] जो कीना

थका अब हार कर बैठा हूँ यक ठाँव
न पाया शहर शहर व गाँव दर गाँव

बाँधा है झोंपड़ा मैदाँन[71] के बीच
बैठा उसके तसव्वुर[72] में आँखें मीच

ऐसी हालत में रूत बरसात आई
करी थी क्या बुरी मैं ने कमाई

सुनो क़ुतुबी का ग़म बरसात सारी
हुई बारह महीनों की बोहतारी

आया माँस[73] असाढ़ फौज़ सिंगारे मेह की
कैसी घड़ी सुहात[74] सुद्ध नहीं अपने ग्रीह[75] की

धौला फिरें बिदेस हूँ बैठा लाचार हूँ
खोलूँ लट लट केस क़ुतुबी आपा मार हूँ

झड़ी दल बादलों की माँस असाढ़
मेरा जीवरा किया इन परियों ने काढ़

---

[68]दशा
[69]ईश्वर
[70]प्रशंसा
[71]अत्यधिक
[72]ध्यान
[73]महीना
[74]भला लगना
[75]घर

सबों पहलें आकर कोयल कूकाई
जो सोता साराँ प्रन जगाई।

आये फिर इन्द्र राजा दे नक़ारा
पिया बिन हाल क्या होगा हमारा

अचानक तोप की जींव राद[76] गरजा
कड़क उस की जो सुन कर जीव लरजा[77]

अरी यह रूत कहाँ से निकस आई
मुझे ब्रहन कूँ दूनी आग लगाई

होवे बरसात में ठन्डक करेजे
मेरे सीने ले आतिश[78] के नेज़े[79]

उधर से रिन्द[80] ने नाले चलाये
इधर आँखिया ने दो दरया बहाये

उधर उमडी घटा बादल चहूँ ओर
इधर बाँधा मेरे नेनो ने घनघोर

अजब हालत हुई है पीव प्यारे
कहूँ किसके जो आगें नेह तुम्हारे

---

[76]बिज़ली की कड़क
[77]कांपा
[78]आग
[79]तीर, माला
[80]शराबी

इधर असाढ़ परी झुन्ड के आया
उधर दुहलन ने घर परदेस छाया

कोई जा कर कहे पीव सें कहानी
मुझे है गी नहीं कुछ बात सियानी

जोगन दूनी ने आ कर दूत लाया
मेरे तेरे भीतर टोना चलाया

अरे ये दर्द कांजी किन रूलाई
हथेली बीच यूँ सरसों जमाई

न जाने किस तरह अब होय मेला
लगी थी किस घड़ी और कोन बेला[81]

अरे क़ुतुबी कहाँ तक होय ज़ारी[82]
बिते नाहीं तमामी उम्र खारी[83]

जो बे परवाह से यह पीत लागी
लगी ऐसी लगन जो सब सें त्यागी

समझता अन समझ अब हो गया पीव
अन्देशे[84] में चला अब जात है जीव

[81]समय
[82]रोना, विलाप
[83]परीशानी, दूरदशा
[84]दुविधा, शंका

क्या बेरी लोगों का पीव ने हान
पहनाया हंस कर पीव ने गले में फान[85]

न आये आप ना पतियां पठाई
न दो बातें ज़बानी[86] कह कहाई

अरे आखिर हुआ आसढ़ सारा
मिला नाहीं अझूँ[87] लक[88] पीव प्यारा

साऊँ सोरा महीना बरसें पानी टूट कर
ईधर लेकिन ब्रह्म की तेग़[89] कीमा[90] कूटकर[91]

लागी बूँद प्रेम थोर थोर बहे भीग ले
कहाँ गुस्ल[92] और खेम[93] जब तक क़ुतुबी एक ले

लगा साँवन मचाई बादरों ने ज़ोर
छवाए[94] बंगले घर घर में हर ठोर

पपीहा पीव पीव मेरे पुकारे
बने में मोर और तन में झिंगारे

---

[85]फन्दा
[86]ज़बानी
[87]अभी
[88]तक
[89]तलवार
[90]टुकड़े-टुकड़े
[91]नहान
[92]नहान
[93]पकवान
[94]मरम्मत किया

सबों इस रूत सुरत घर की जो लेनी
हमारे लाल ने सुद्ध नाँह लेनी

ओरों के बंगले हैं जिन गले बाँह
दुआ माँगो पसारों हक़ सेती बाँह

इलाही गुन्चा-ए-उम्मीद बक्शा
गुले अज़ रोज़ा-ए-जावेद बन्माई[95]

कैसे होवे आवे घर का बसावन[96]
सरन का हो मेरा ये माँस सावन

सबों संग बैठे में और रंग राचूँ
हिन्डोले झूलों और सब खेल नाँचू

अरे क़ुतुबी कहाँ ऐसे बने भाग
कि प्यारे के आवन के गायें राग

आये साजन ने घर से गँवाई
तनिक[97] में अन समझ बालम रूठाई

नहीं कुछ दोस[98] उस मन मोहनी का
सलोनी साँवरी सब सोहनी का

उनों कृपा मिया सें कम न कीना
तुझे अपने करी से लाये लीना

---

[95]ऐ मालिक आशा को खिला और अपने सदाबहार चमन से फूल बरसा
[96]बासी
[97]ज़रासी
[98]अपराध

सबों से तुझ ऊपर ईता किया प्यार
कि बहुते आफरीनिश[99] के जो है ख़ार[100]

तेरे रंगों में रंग कर हो गया एक
तेरी सूरत[101] में सूरत कर लिया एक

अरे ग़ाफ़िल[102] समझ सब खोट तेरा
नहीं कुछ दूर वह गुल[103] जोत तेरा

सर्रफ़नल[104] उम्र फ़ी लहव लइब
माहा सुम्मा आहा सुम्मा आहा

ऐसे सावन मने भानों नहीं घर
उड़ूँ उस देस कों लेकिन नहीं पर

क्या सांवन को अखियों पर ज्वाला
कि जिनका मुंह किया है दहर[105] सें काला

जो मैं होती नहीं यह दुख न होता
अदा[106] ग़मज़े[107] न दिखते ता न रोता

---

[99]ऋष्टि की रचना का समय
[100]दुखदायी
[101]शक्ल
[102]लापरवाह, भूला हुआ
[103]फूल
[104]खेल तमाशे में जीवन व्यर्थ कि अफसोस
[105]युग, काल
[106]चाल
[107]बनावट

बढ़ा सांवन बिछें यह ग़ैब[108] से बून्द
बिपत से कहां गए डरते मेरे चौन्द[109]

मैं जाना था कि दुख कुछ कम रहेगा
ना जाने था कि यह दूना रहेगा

ज़माने[110] का कहूं क्या दांव यारो
भरा है ज़ुल्म[111] से सरपाव[112] यारो

किन्हीं काटे उपर लाया कहीं लोन[113]
देखो इन ज़ालिमों ने क्या क्या किया गोन[114]

मेरे ज़ख़मों[115] के ऊपर लोन[116] लाया
सारे आलम[117] को मुझ ऊपर उठाया

लोगों का हंसना और मेरा होया मरन
पड़ूँ बिन पीव किसके जायकर सरन[118]

अरे पीतम प्यारे तुम कहां रे
सबों के बोल तुझ बिन हम सहारे

---

[108]आकाश, रहस्यमय स्थान
[109]चांद, प्रेमी
[110]समय
[111]अत्याचार, कष्ट
[112]सर से पाँव तक
[113]नमक
[114]चाल, उपाय
[115]घाव
[116]नमक
[117]संसार
[118]शरण, पनाह, छत्रछाया

किया है यक तरफ़[119] मुझ पर फ़लक[120] ज़ोर[121]
तरफ़ दीगर[122] ऊठाया परयों ने शोर

हमे कीना तेरे ग़म[123] ने दिवाना
कोई ऐसा करे है ए सियाना[124]

मोहब्बत लायकर फिर यूं बिसारा[125]
बसा कर सुखनगर अब क्यों उजाड़ा

तेरा है घर तेरा है बार प्यारे
मैं होता कौन हूँ बीच में दुलारे

तोइज़्जो[126] मन तशाओ हुक्म कीना
तोज़िल्लो[127] मन तशाओ लिख जो दीना

नहीं जो ख़ाक[128] पाओ के हुआ था
तेरी उलफ़त[129] सें मैं मस्त हुआ था

---

[119]ओर
[120]आकाश
[121]अत्याचार
[122]दूसरे
[123]दुख, पीड़ा
[124]चालाक
[125]भुला दिया
[126]तू चाहे तो सम्मान दे
[127]तू चाहे तो अपमान दे
[128]मिट्टी
[129]प्रेम

तुम्हीं कृपा करी हस्ती[130] चढाया
तुम्ही ग़मज़ों[131] सेती मुझकों लुभाया

अरे क़ुतबी करो कुछ फ़िक्र[132] ऐसा
कि मिट जावे जनम का दुख अन्देशा[133]

चलो अब के कुतुब के फेर चरनों
जियें जगवे सुरूर[134] के जो सरनों

तेरे महबूब[135] को अब वह बतावें
बता कर फिर दोनों को गल[136] लगावें

कुतुब[137] महबूब का कुतबी दिवाना
रहे उसके दरसबिन[138] जीव ना माना

कुतुब के चरनों पर बलिहार क़ुतुबी
जाऊं मैं जीव सें वारीवार[139] कुतबी

भादो हुइया दो दाव लई प्राकमचित के
कभी दिलावे ताव कभी डाले सेत के

---

[130]संसार, सम्मान
[131]हाव भाव, चाल, नख़रा
[132]विचार
[133]डर
[134]मालिक
[135]मित्र
[136]गले
[137]कुतुब प्यारे
[138]दर्शन
[139]बारमबार वालिहार

क़ुतुबी रखे उम्मीद जलते के ठन्डक करे
है ऐसा कोई बेद काटे पर मलहम करे

लगा भादों कहें जिसको जो तिलिया
मेरा दुख बिरह ने कीता करे क़लिया[140]

कभी बरसे कभी तेज़ी करे घाम[141]
मबरावे[142] मुज़्दको[143] के मांस और चाम[144]

दुल्हन परदेस मुझ मुर्दे का क्या हाल
पड़ा तडफूं जैरो मछली भीतर जाल

कोई जा कर कहे मनमोहनी सें
सलोनी सांवरी दिल जोहनी सें

करे था बैठकर जोर कुतबी
तेरा हर दम ग़ुलाम[145] और चोर क़ुतबी

सड़ाओ नाह मुझ मुर्दे का अस मांस
मेरे आओ गह[146] अपने पीव तुम पास

---

[140]मरा हुआ
[141]धूप
[142]जलावे
[143]मजदूरों
[144]खाल
[145]दासी
[146]कभी

जिक्र अज फ़ज़कुरूनी[147] प्यार कीना
ज़े नहनो अक़रबम[148] नज़दीक[149] लीना

ऐसे प्यारे कों यूं नाहीं बिसारो[150]
ऐसी मुद्दत जुदाई[151] सें न मारो

करम[152] कर कर जो आओगे हमारे
नहीं घर जाहंगे से लखन तुम्हारे

तुम्हारे हुस्न[153] का बाज़ार लागे
तमाशे[154] को तमामी[155] ख़ल्क़[156] भागे

कि यह आया कहां ऐं साहिबे ज़ात[157]
इती ग़मज़े[158] अदा इति सुघड़ बात

सूरज शरमींन्दा और चन्दा हो बन्दा
तेरे बिन जोत कुल आलम[159] है मन्दा[160]

---

[147]मेरा और तुम्हारा याद करना
[148]हम तुमसे बहुत निकट है
[149]निकट
[150]भुलाओ
[151]दूरी, वियोग
[152]कृपा
[153]सौन्दर्य
[154]देखना
[155]सबका सब
[156]संसार
[157]आदर योग्य
[158]लोभावन
[159]संसार
[160]फीका

मेरे घर आओ दूल्हन करम[161] यारे
मुझे नाहक़[162] तू मत इतना जला रे

मेरे जलने में तेरे हाथ क्या रे
तेरे सों मुज माँ अब कुछ नां रहा रे

अरे कोई इस सन्देसे[163] कों ले जावे
दुल्हन कीतां सरासर कह सुनावे

मोरे पीछें नहीं कुछ बात प्यारे
जो कुछ अब है सो फिर कल कों कहां रे

गया भादों यह दुख मां रोवती है
जनम की यां अखारत[164] खोवती है

आया मांस असवज दे दिया मान इन्दर जूँ
आंगन चढ़े जो फ़ैज नौशा[165] बनकर चन्दर जूँ

घट गया बरखा मेंह बढ़ गया जोर महीना का
हुऐ मुसाफ़िर मेंह क़ुतबी जा को और ग्रीह का

गया भादों लगा अब मासं असोज
चढ़ाये अपने बल के अत बड़ी फ़ौज

---

[161]कृपा करके

[162]बिना कारण के

[163]पूरा

[164]व्यर्थ, बेकार

[165]दूल्हा

अरो इन फ़ौज क्यों कीनी चढ़ाई
बिरह की झोंपड़ी कों आग लगाई

चलन लागी बिरह की बान किसके
कमर हिम्मत की मैं बांधी है कसके

अगर तलवार या ख़ुद तीर आवे
व या नेज़ा[166] व या जमघर[167] चलावे

ख़ुदा के सों नहीं मरना है मुज कों
ना यू दुखड़ा सदा भरना है मुज कों

नहीं कुछ डर रहा नीडर है हूं
मरन से पहले मैं तो मर रहा हूँ

मुझे कोई क्या डरावे मौत सेती
ख़ुशी है जीव कों हर दम फ़ौत[168] सेती

मेरा मरना मेरे पीव का मिलन है
फ़राग़त[169] जीं पै घाव दुख जलन है

बिना पीव किया है जीवं का सवादा
मरूं तो पीव कों देखूं शाद[170] शादा

[166]छोटे तलवार
[167]एक भारी औजार गरांसा
[168]मौत
[169]छुटकारा
[170]ख़ुश ख़ुश

अरे मरना मेरे जियो हो नसीबे[171]
मैं तो मरने का ढूढ़न हूं तबीबे

तबीबे[172] इश्क़ रा दूकां कुदाम अस्त
इलाजे जां कुनद ऊ रा चे नामअस्त

अरे कोई बेद दारू मौत की दे
ऐसी दारू जो पीव अपनी तरफ ले

किजिए दारू सें क़ुतबी फ़ैज[173] पावे
सदा उस शाह[174] कों गल सें लगावे

अरे कुतबी ना कर यू सोच भारी
कुतुब से बेद की जब खात दारी[175]

ऐसे नब्बाज़[176] ने पकडी तेरी बाँहं
कि जिस आगे तूनो नाड़ी कहां जाहं

मेरे वाली[177] मुझे दारू बताओ
शिताबी[178] दोस्त का मुखड़ा दिखाओ

---

[171]भाय

[172]प्रेम रोग का इलाज करने वाले वैद्य की दुकान कहां है? जो जीवन बचाने का इलाज करता है उसका क्या नाम है?

[173]लाभ

[174]प्यारे

[175]दोस्ती

[176]नाड़ी देखने वाला वैद्य

[177]मालिक

[178]जल्दी

यूं ही जा है यह बीती उम्र क्यूँ हैं
दरस[179] हो जीवन अति बेद क्यँ हैं

करूं क्या फ़िक्र[180] जो आसोज हाला
नहीं पीतम अझूं[181] कीना संभाला

यूं हैं उम्मीदवारी में लगा मरन
किया है उम्र का पट्टा सवा क़रन[182]

जो सन अठतीस दुल्हन मिलाओ
गोया[183] सौ लाख बन्दी कों छुड़ाओ

कातिक मास सुजान रितु नेकी सब बात कों
पानी पान कहां सों सुख कहात कों

मनमोहन परदेस कित बरमे[184] रे कुतबा[185]
यह दुख रहा हमेशा बहुत ऐसा तनहा जिया

अजायब[186] रूत जो कातिक ने दिखाई
नई नई हिस[187] नई नई बात लाई

---

[179]दर्शन
[180]चिन्ता
[181]आंसू
[182]दस वर्ष
[183]कदाचित
[184]गऐ, भ्रमण किये
[185]अकेला
[186]आश्चर्यजनक
[187]लालच

मेरी छोरी को सुख की परवरिश थी
सदाबहुभांत की अच्छी खुरिश[188] थी

बिना दिलदार[189] अब कैसे जो बीते
होवेंगे हासिदों[190] के मन के चेते

चले बूंदी फ़रमा[191] रूतके सुरतके
कहां गए अब मेरे प्रीत सुन के

कि जिसको छील कर बूंदी जो नसाऊं
मुझे दें मैं उन्हों कों नां खिलाऊं

यूं हीं जा है चली रूत आह सद[192] आह
देखो नित बात पर ऊठे सिवा राह

जी ऐसा हो कि साजन आये जावें
मुझे निर्भाग[193] को गल सूँ लगावें

अरे ले फिर न सुनियो कूक मेरी
पुकारे है तेरे बिन दाम[194] मेरी

दिवाली मचाई धूम घर घर
बटें सालोनियां और खील भर भर

---

[188]पालन पोषण
[189]मित्र
[190]ईष्या रखने वाले
[191]कहके
[192]अफसों बहुत अफसोस
[193]अभाग्य
[194]सांस, जाल

बिना तुम खील मेरे कील लागें
दिवाली की जो देव और भूत भागें

अरे ख़्याल में चैपड़ किस से खेलूं
अपनी बिपता कों किसी कर जो बेलूं

सदा चैपड़ जो खेलू थे तेरे संग
गहे[195] बाज़ी[196] गहे चैपड गहे रंग

तेरे जाए से मेरा जग जो फूटा
बिरह ने नर नरदों के जो कूटा

जुदाई[197] ने बाज़ी[198] कों रद्द कीना
हराय कर मुझ को एक घूंसे जो दीना

अरे क़ुतबी बना यह खेल कैसा
खोया नई हाथ अपने दाव वैसा

तेरी बाज़ी कों कौन है साज़[199] यारब[200]
गंवाया यार प्यारा हाथ सें जब

गई बाज़ी कों भूला है थोड़ी
ऐसे तोते कों नबी[201] जी कों जोड़ी

---

[195]कर्मा
[196]खेल
[197]वियोग
[198]खेल
[199]बनाना, उपचार
[200]ऐ मालिक
[201]रट लगाना

घड़ी गुज़री नही थी बिन प्यारे
महीनन मुंह बिपत मे यूं गुज़ारे[202]

करूं क्या बरु नहीं चलता है यारो
करेजा पूर ज्यों जलता है यारो

सरतका मांस कातिक कहां गया रे
नक़ारा[203] आन मंगसर ने दिया रे

लगी बिरहन की बान[204] आया संकर मंगसर
मुकत होइये परान रहा मंगसर

कुतबी करो सम्मान अपने जी से लड़न का
एक दिन घरा निदान अन्त सभो के परन का

नई रूत मांस मंगसर[205] ने निकाली
मिल के ओढ़े रज़ाई और निहाली[206]

अचानक आनकर जाड़ा झमका
मेरे ऊपर बिरह का भेजा गतका[207]

बिना दुल्हन मुझे मुशकिल बनेगी
पड़ोसन कौन दुख मेरा सुनेगी

---

[202]बिताये

[203]नगाड़ा

[204]तीर

[205]माघ महीना

[206]मोटी चादर

[207]चोट डालने वाला

अपन अपने सोवेंगे कोठरी मांह
कहो अब हम भी जो किसकी कोठरी जांह

बनेगी मुझ अली[208] के बीव मैदां
बिरह और मुझ बिदा होए गा मेहमां[209]

बने कों सोहनी के झूजायें
कौन रखिया को तेरे कब बुझायें

मेरा जावा[210] तो पहले ही गया है
मैं बौरी फ़िक्र[211] क्यों नाहक़[212] किया है

कहूं यूं कौन आए कुंज कश्मीर
मेरी छाती उठे अन देख कर पीर[213]

मेरी वह कुन्ज है है किस दयारे
कहां के खेत पर होगा दुलारे

ईहां मैं कुंज कीजो गोरी को रुलावँ
नहीं हैं पंख जो उस देश जावँ

तमाशा मुल्क मुलकों[214] का जो देखो
है दिन परवाज़[215] के परवाज़ सीखो

---

[208]बहादुर
[209]अतिथि
[210]प्रेमी
[211]चिन्ता
[212]बिना करे
[213]पीड़ा दर्द
[214]देश देश
[215]उड़ान

तेरा तो अर्श[216] कुरसी[217] तक मकां[218] है
क़दीमी[219] घोसला असली ऊंहा है

जो असली घर को छोड़ा तब पड़ा दुख
बिना उस घर कहां इति पाय सुख

ऊंहा है तुम ऊहां है होय महबूब
लपेटो दुख का अब तूमार[220] मकतूब[221]

गंवाई सोच और ग़फ़लत में अठतीस
फंसा दर दाम आं शैतान इबलीस[222]

पढ़ो लाहौल इसतेग़फ़र[223] कीजे
सिदक़[224] दिल सें ख़ुदा का नाव लीजे

उबारा जा सका ऊंट लदे असबाब[225] के
बिरह सतावे मोह में दिन मदह कबाब[226] के

---

[216]आकाश के भी ऊपर

[217]स्थान

[218]पुराना

[219]बहुत लम्बा

[220]लेख

[221]चिटठी

[222]पिशाच

[223]ईश्वर से मोक्ष प्राप्ति की विन्ती करो

[224]सच्चे

[225]सामान, बोझ

[226]जलाना, कूटना

थर थर कंपे देह[227] जाड़ा पड़े बिछोह का
ऐसा लगा सनेह भूल गए दुख लूह[228] का

अरे ऐ पोह घौला दहो कीनां
कीन्हीं प्यारा किन्हीं नैन मोह लीनां

हुवा ग़म सें तेरी नगरी सबिस्ताँ[229]
सभों से बाहर रोगन मैं जो कीनाँ

जुदाई ने बहुत कीनां मुझे ख़ार[230]
हुई है चहार[231] तरफो[232] सें मारी मार

कहां जाऊं मैं किस आगें पुकारूं
लगन की बात का परदा उखाडूं

नहीं कुछ दोस[233] पीव का दोस मेरा
कहां जाय कर करूं तीरथ कों फेरा

मुझे उन नेन खूनी ख़ार कीनां
पराए हाथ मुझ को बेच दीनां

लुभा कर मुझकों होजा अब प्यारे
मेरे जीव कों लगावें अब बलिहारे

---

[227]शरीर
[228]गर्म हवा
[229]दुर्बल
[230]बदनाम, बरबाद
[231]चारों
[232]ओर
[233]दोष

मैं अपने घर में बैरी आप पाली
जिन्हों ने आशिकों के घर जो खाली

घवन्डी हुआ है हूं उनकी बाहों
पाया अत जो दुख में चलकर उनके साथों

मुझ पीव के दरस का फ़िक्र[234] है गा
दुल्हन के आवने का ज़िक्र[235] है गा

किया है मुझकों इन आयत[236] ने आगाह[237]
पढ़ा लातक़नतू[238] मिन रहमतिल्लाह

दरस गर कराये गी उनकी पहरों
नई फिर पीत काहू सें न जोडों

पकड़ कों कनाअत[239] का जो बैठूं
कानों को चोर के ज़ोरी से ऐठूं

अरे कुतुबी न लजे[240] लाज खोई
हया ग़ैरत[241] कों मुतलक़[242] ज्यों सैं धोई

---

[234]चिन्ता

[235]याद, स्मरण

[236]कुरान के वाक्य

[237]चेतावनी

[238]ईश्वर की कृपा से निराश मत हो।

[239]सन्तुष्ट

[240]शर्म

[241]स्वाभिमान

[242]सर्व, कुल

रहेगा माह लजमा ऐ सवादी
तुझ है इश्क़ का चस्का फ़सादी[243]

मुफ़्त में कौन हज़ारो बीच होए ख़ार[244]
न लेजाहू हंसारे कोन जो संसार

बिरह कारन तैं नें सब उम्र खोई
नहीं तू रह सकेगा लाल कोई

तेरी यह ख़ूये[245] न पीछे पड़ी है
इश्क़ की तू तेरी मूरत खड़ी है

बिरह है इश्क में एन्डा है एन्डा
बिना मरने नहीं छूटेगा पेन्डा[246]

लगा महीना माघ मेरा शाह[247] न आया
नित उठ देखूं राह खोज नाहिं पाया

किन परचाए[248] लाल कित बरमे ख़्याले पिया
मेरा कौन अहवाल[249] मन्दिर सूना बिन दिया

अरे यह किस तरह का माह आया
मेरी छाती के भीतर दाह[250] लाया

---

[243]झगडालू
[244]बरबाद
[245]आदत
[246]साथ
[247]प्यारा, राजकुमार
[248]लुभाये
[249]समाचार, हालत
[250]जलन, आग

बिना ऊस माह यह किस काम का माह
ना देखन पाय है आह सद आह

अरे तू माह किस बादल में आया
कि इतनी मुद्दतों में भी ना पाया

कहाँ किस देश के बिरवा बुलाऊं
कि इस बादल जुदाई के रूवाऊ

चकोर अब मस्त दीवाने का क्या हाल
क्योंकर जींव में बिना देखें तेरे लाल

अरे वह चन्द की घर छुप गया रे
कि जिनका देखना दूभर हुया रे

कोई भेदी कि जिसकों पीर[251] होय
इश्क़ का उसके जीव में तीर होय

कहीं ढूंढे ख़बर उसकी ले आवे
मुझे दो बात उसकी कह सुनावे

पाँव पड़ उसके वारी वार जाऊं
पलक सें झाड़ कर आखों लगाऊं

अरे सितमी[252] मेहर कर आव घर रे
फिरावे मत मुझे तू दर[253] बदर रे

[251]दर्द, पीड़ा
[252]कष्ट देने वाले
[253]इधर उधर

जोगन हो के फिरूंगी देस देसा[254]
ढूंढों आकास सें ता नाग सीसा[255]

अरे कुतुबी चलो दुल्हा को ढूंढन
निकट गंगा जमन के सेती गूंधन

तीरथ बिरहे तुम्हों ने तीर खाया
गिरह का जनेउ कौन फान[256] पहनाया

चलो अब फिर तीरथ पर नहायें
मेले मां जी मिले कोई लुभायें

जहां मेला वहां मेला[257] कभी होय
खिलाड़ों खेल का खेला कभी होय

बड़े शौक़ी[258] खिलाड़ों सों पड़ा काम
न जानूं किस तरह होवेगा आन्जाम[259]

लगे जो शुभ घड़ी होय तो सब खूब[260]
बखा सब भूल जा देखें सें महबूबं

चलन की अब तुम्हन दिल में जो ठानी
मेरे तो जीव में यूं ही जोसानी[261]

---

[254]देश विदेश
[255]सर
[256]फन्दा, रस्सी
[257]मुलाकात, दर्शन
[258]शौक़ीन, रंगीन
[259]अन्त
[260]भली भांति
[261]उमंग पैदा हुई

तकूं अब शुभ घड़ी ओर शुभ महूरत
कि देखूं जान जाना[262] की मैं सूरत

फागुन रंग गुलाल लाये फूल बसन्त के
घर नहीं मथुरा लाल यूँ हैगे दिन तंत के

रंगीन सब्ज़[263] और ज़र्द[264] सब काहू के चाव है
किससे कहे में दाद[265] मेरे सीने घाव है

करेजा फूंकने फागुन जो आया
कुवरियां बावरी ने मुख दिखाया

रंगीला घर नहीं किस पर रंगूं रंग
खेलूं होरी कहो अब किसके पर संग

समुझ ऐ ढ़ोल मुंह बोली समुझ रे
सियानां हो मत हो अन समुझ रे

अरे नादान[266] फिर यह रूत कहाँ रे
ऐसी रूत में खोये है कहां रे

अरे मल्लाह खेवा पार कर रे
ख़ुदा के वास्ते[267] अब आव घर रे

---

[262]प्रेमी
[263]हरा
[264]पीला
[265]बदला, पुकार, फरियाद
[266]नासमझ
[267]लिये

उधर माशूक़[268] दरया पार है रे
ईधर आशिक़[269] पुकारे दूर है रे

चढ़ाया जी तेने ने अब नाव पर रे
अधम[270] में मुझे मत ख़ार[271] कर रे

फागुन आया कि उठ तूफ़ान[272] आया
परे पलकों था आन मुतलक़[273] जलाया

जिसने होरी जराई यूँ जराया
नए सर[274] जीव को बिमता लगाया

बिरह ने सब तरह कर ख़ार कीनां
दुखों पर और यह ताज़ा[275] जो दीनां

अरे कुतुबी कहां तक दुख भरेगा
कहां तक इन्तेज़ारी[276] में मरेगा

मरन इस इन्तेज़ारी में भला है
वरस सारा यह दुख भर में पला है

---

[268]प्रेमिका

[269]प्रेमी

[270]बीच

[271]निराश, कष्ट, छोड़

[272]आपत्ति

[273]सबक

[274]फिर से

[275]नया

[276]प्रतीक्षा

बिना ढूंढे न आवे हाथ दिलदार[277]
ना हो इस इन्तेज़ारी में पड़ा ख़ार

प्यासा पास कूए की क्या जा है
कुवा प्यासे के पा नाहीं आया है।

कमर हिम्मत की कसकर बांध भाई
दुल्हन को लाओ घर तब हो भलाई

ख़लील आसा दर मुल्के ख़ुतन ज़न
नवाए ला युहिहुब्बुल आफ़ली ज़न[278]

तेरा जलना होवे गुलज़ार प्यारे
अंगारे सब होवे फुलवार प्यारे[279]

चैत मांस गुलज़ार यार बिना सब जार है
बरछा हो गया पार कूँ करे अब सार है[280]

कौन दस है मीत आए इन बतिया लिखे
क़ुतबी भई अतीत घायल कहूं में अब दिखे[281]

लगाई चेत ने इत जीव को चिन्ता
अझूं तक है नहीं आये हैं मनता[282]

---

[277]प्रेमी

[278]हज़रत इबराहीम की तरह ख़तन देश की ओर चलो और पुकारों कि मैं गा़यब या छुपने वालो को पसन्द नहीं करता। यह क़ुरान की एक आयत की तरफ इशारा है।

[279]फूलवारी

[280]जल रहा है

[281]माला

[282]प्रेमी

दरख़्तों[283] पर नई सर[284] शाख़[285] फूटी
बहुता हाल तब सब्र से ना छूटी

मुझी में ढूंढ कर पाया है अनचोर
ग़रीब ऊपर देखो थावा[286] करे ज़ोर

जुलेख़ा[287] वार बहुता ख़ार कीनां
मेरे युसुफ़[288] ने कैसा वार कीनां

उन्हों सपने में इता नेह लाया
मेरे दिलदार को दूल्हे लुभाया

अचंमभे का नया यह नेह लागा
कि जिसको सुन के हातिम[289] इश्क़ त्यागा

होवे माशूक़[290] की क्या बेवफ़ा[291] जात[292]
पराया मन जलाकर नाहं बूझे बात

मकर कर ज़ुल्फ़[293] और नैनां को लुभावें
अदा कर कर पराया घर लुटावें

---

[283]पेड़ों
[284]उपर, सर पर
[285]टेहनी, डाली
[286]भक्तिमान
[287]मिस्र की रानी
[288]हज़रत युसूफ जो बहुत सुन्दर थे
[289]एक बहुत दानी का नाम
[290]प्रेमिका
[291]वचन को तोड़ने वाला
[292]लोग, समूह
[293]बाल, केश

मीठी दो बात कर चित चुरावें
कमां[294] और बान कर पंछी चरावें

बिलल्ले[295] बावरे[296] यूं ज़ात आशिक़[297]
हुई मन्ज़ूर[298] नाहीं बात आशिक़

कहें हर एक उसको बावरा रे
मरन को आह भूला बावरा रे

अरे कुतुबी हजो[299] दिलबर की मत कर
आशिक़ की बिपत की तू सिफ़त[300] कर

बिपत आशिक़ की कोई माशूक़ जाने
वही आख़िर जी भूले तो पहचाने

क़दम अज़ सिदक़ दिल बेरू मनहरे[301]
वह तो हैं पाक[302] तूं लायक़ गुनह[303] रे

मना कर लाओ उस को ढूंढकर जग
पकड़ रह उस की सारी उम्र तक पग[304]

---

[294]तीर और कमान
[295]लापरवाह
[296]दीवाने
[297]प्रेमी
[298]स्वीकार
[299]बुराई
[300]बड़ाई
[301]पाँव सच्चे दिल से बाहर मत निकाल
[302]पवित्र
[303]पापी का पाव
[304]पाँव

कही माशूक़ गुस्से कर ना पाया
जिन्हें पाया पर आजिज़[305] हो के पाया

आ गई बैसाख सुन चैबीस पाख हैं
जरबर हो गयी राख मेरी नहावें लाख हैं

होली बारह मांस उन्हों ना ज़ालिम[306] बाहू[307] रे
देह[308] रहा ना मांस पीव की होय नसा रे

बौरी बैसाख मन मोहन कहां रे
गये हैं क्या वह कोई बर[309] लामकां[310] रे

अरे बर लामकाँ हो के तू गया है
मुझे उसमें हैं जाना पता है

करूं क्या मैं देखे कलह[311] कों जो मरजाऊँ
न हो दो जग में फिर मुज को नहीं ठाऊं[312]

हसीन[313] यूसुफ कै बुअद मोहिया हो खरीदार
हुये मशहूर इति की लईं नार

---

[305]विनम्र
[306]निर्मोही
[307]बाह
[308]शरीर
[309]आकाश के उपर
[310]कष्ट
[311]स्थान
[312]स्थान
[313]सुन्दर यूसुफ़ का कौन खरीदार है?
कुरान में वर्णन है कि डाकू हज़रत यूसुफ को कुऐं से निकालकर मिस्र के बाज़ार में बेचने के लिये लाये। मिस्र की रानी ज़ुलेख़ा ने उनकी सुन्दरता पर आकर्षित होकर यूसुफ़ को खरीदा।

ख़रीदारों में उन ने नाँव पाया
मैं तो आशिक़ होयकर आपा[314] जलाया

ज़ुलेखा की तरह बौरी कहाई
हुआ मजनूं तब लैला जो पाई

चलो अब चलो ढूंढें दुलारा
बिना ढूंढ़े न पाय है प्यारा

अगर[315] अस्सैयै मिन्नी खाँदई तू
ज़े मेहनत पस चिरा दर मांद ई तू

करो तुम नहनो अक़रब[316] को सही रे
वही है सब जगह हाज़िर[317] वही रे

अरे लोगो तमामी[318] -जग में जूहा
मुझे बावलपने सें था बिछूहा

मेरा दिलदार था मेरे घर में
बैठा एक बात के ऊल्हे था पिनहाँ[319]

मेरा वह इश्क़ का यूरा जी लेता
सरीह जान कर बत्ता जो हुवैता

---

[314]आत्म सम्मान

[315]यदि तूने परिश्रम करने का पाठ पढ़ा है तो मेहनत से क्यों जी चुराता है।

[316]कुरान पाक का टुकड़ा हे। ईश्वर कहता है कि ऐ लोगो मैं तुम्हारे गले की रग से भी अधिक निकट हूं

[317]वह सर्वव्यापी है।

[318]सारे संसार

[319]छुपा हुआ

जो कुटिया में फिर क़ुतुब के पास दौड़ा
कि जिन का है वतन हज़रत साधौड़ा[320]

अबू सालेह कुतुब के तीसरे पूत
कमीस आज़म जी की औलाद और होत

मुझे ऊन्हों मेरे घर में बताया
ऊहां सें मैं घरों को हेर[321] आया

हुआ बैसाख आख़िर आवते घर
अगर्चे[322] उड़ चला था लाय कर पर

अरे कुतुबी सुबह को होय मेला
सबर कर एक शब[323] और फिर अकेला

ऐसे जेठ आया जेठ सों लछनां
तूने दुख के पिन्ड पाया दर्स[324] दछना[325]

क़ुतुबी तेरे नसीब[326] दुल्हा घर में पाइया
क़ुतुबुद्दीन जिन से मंगल गाइया

महीना तेरहवां जब जेठ लागा
मेरा दुख लिखते ही उस मांस भागा

---

[320]हरयाणा में एक स्थान का नाम जहां कुतुब शाह रहते थे।
[321]ढूंढना, तलाश करना
[322]यद्यपि
[323]रात
[324]दर्शन
[325]इनाम
[326]भाग्य

साघौड़े से जो पहुंचा घर के माहीं[327]
गया अन्दर महल के सेज ताहीं

बैठा देखा पलंग ऊपर जो दिलदार
सीने मान के खिले गलगल सुहे खार[328]

चरन को चूंम कर आखों लगाये
तरस और तर्क तर[329] फिर देख पाये

पाँव में गिरके बहुता कूक रोया
ऐसा रोया कि सब पाँव को धोया

मेहर[330] कर जान जानाँ[331] ने उठाया
पकड़ कर हाथ अपने गल लगाया

लगा तब कुल जनम के विसरे[332] दुख
वही दुख हो गए मिलते हीं सब सुख

खुले ----- के मियाने[333]
पाय जब दोस्त के अपने निशाने

---

[327]अन्दर

[328]कांटा

[329]तजकर

[330]कृपा

[331]जान से प्यारे

[332]भूले

[333]बीच

बैठे मिलकर दोनों यक पलंग
हुए रिल[334] मिलकर दोनों एक रंग

हुआ बोस किनार[335] आख़िर[336] मुयस्सर[337]
हज़ारां शुक्र[338] है उस दिन के ऊपर

अरे कुतुबी कुतुब के हो है कुरबानं[339]
कि जिन दिखलाया तुजकों जाने जानां[340]

उसी के लुत्फ़[341] से कश्ती हुई पार
नहीं तू ने रखा बीच मंजधार

तसद्दुक[342] हो नबी के और अली के
दिगर[343] अस्हाब[344] हर चारों वली[345] के

कि जिनके पुश्त[346] सें महबूब सुबहान
हुये पैदा खुलासा[347] जान इन्सान

---

[334]घुल मिलकर
[335]चुम्बन व गले लगना
[336]अन्त में
[337]प्राप्त
[338]धन्य
[339]निछावर
[340]प्रेमिका
[341]कृपा
[342]बलिदान
[343]दुसरे
[344]पैगम्बर मुहम्मद साहब के साथी।
[345]चारों खलीफा
[346]सन्तान
[347]सारांश

उन्हों से पहुंचा ज़न्जीरा[348] कुतुब लक
ताक़ाउत[349] नाह होवे उसमें एक दो रकब[350]

प्रेम क़िस्सा हुआ आख़िर ऐ यारो
तेरह मासा है इसमें बिचारो

बारह मांसा होय था और सब के
तेरह मांसा हुआ जाकर कुतुब के

बिकट अफ़साना[351] है यह तो मोहिया[352]
दोनो का नां दुई[353] मियाना[354]

अरे अफ़ज़ल[355] कि जिसका नाँव गोपाल
कहा है नारनोले साहिबे[356] हाल[357]

ऐसे कुतुबी कि अकरम गर[358] है मशहूर
ज़े[359] शेर[360] व इल्म[361] हर दो हस्त[362] माज़ूर[363]

---

[348]सिलसिला, कड़ी
[349]कमी, भूल
[350]पग, कदम
[351]कहानी
[352]प्रस्तुत करना
[353]दोनों
[354]बीच में
[355]बिकट कहानी का कवि
[356]मालिक
[357]पवित्र
[358]यदि
[359]से
[360]कविता
[361]ज्ञान
[362]है
[363]वंचित

किया है इश्क में दीवानगी से
मजाज़ी[364] के बिना फ़रजानगी[365] से

कहा है यह जो सब ग़ुस्सा न कर तूं
क़लम बख़शिश[366] के कान हर क़ो पर धर तूं

ख़ता[367] मेरी तुम्हें सबसे अता[368] है
व लेकिन ई ग़रीब अन्दर ख़ता है

बनी इसराइल[369] अस्त इं शेख़ जादा
रहे रोहतक शहर अज़[370] बस कि सादा[371]

हज़ार व एक सद[372] चहल[373] व[374] सुल्स[375] दीगर[376]
जो था तब सन हिजरी मुश्क अज़फ़र[377]

मुहम्मद शाह[378] की है बादशाही
लगा सन तेरह अज़ फ़ज़ले[379] इलाही[380]

---

[364]संसारिक
[365]ज्ञान से
[366]सम्मान, इनाम, मोक्ष
[367]ग़लती
[368]देन
[369]बनी इसराइल के परिवार में पैदा हुवा हूं
[370]से
[371]स्थान का नाम सांघौड़ा
[372]सौ
[373]चालीस
[374]और
[375]तीन
[376]दूसरा
[377]मुश्क जैसा सुगन्धित
[378]दिल्ली के मुग़ल बादशाह
[379]कृपा
[380]ईश्वर

क़ुतुब मेरे का जुगजुग राज रहियो
गंगा जमना में जब लक नीर बहियो

हुवल[381] मौजूद फ़ततलबनी तजिदनी
वान ततलबनी सवाएं कम तजिदनी

हुवल[382] अव्वल हुवल आख़िर हुवल्लाह
हुवज़ जा़हिर हुवल बातिन हुवल्लाह

कुतुबी पहुंचे हो रहे खोया सब भटकाओ
विरह समन्दर ऊतरे बैठ कुतुब के नाव

[381]वह हर जगह मौजूद है मुझे मांगो तुम पाओ गे मेरे सिवा किसी और को पुकारोगे जो नहीं पाओगे
[382]अल्लाह ही आरंभ है और अन्त भी वही प्रकट है और छुपा हुआ भी।

शब्दावली

उबारा	-	छुटकारा, बोझ से हल्का होना, राहत मिलना
आपा	-	अपना, घमन्ड बड़ी बहन
आगीं	-	सामने, समक्ष, आगे
आवन	-	आना, आयद, हाजिर होना
अतीत	-	प्राचीन, पुराना श्रृष्टि का पहला दिन
अझूँ	-	अब तक, अब भी
अधम	-	मझदार, मुश्किल, दुविधा
अजाँपस	-	इसके पश्चात, बाद में तत्पश्चात
अस	-	इस प्रकार, ऐसा, इसी भांति
अस्सई	-	मेहनत करना, परिश्रम करना, मुश्किल काम करना
असवज़	-	कुवाँर का महीना, भादों के बाद और कार्तिक से पहले का महीना
अश्नान	-	नहाना, स्नान, गुस्ल, पानी से बदन को धोना
अस्हाब	-	इस्लाम के चारों खलीफा, हज़रत अबु बकर रज, हज़रत उमर, फारूक आज़म रज़, हज़रत उस्मान गनी रज़, हज़रत अली रज़ी,
अग्यार	-	प्रतिद्वन्द्वि, बुरा चाहने वाला, दुश्मन
अखारत	-	अखाड़ा, लड़ने भिड़ने की जगह
आकास	-	आकाश, आसमान, नभ

अलस्तु - क्या मैं नहीं हूँ, श्रृष्टि के दिन तमाम रूहों से सवाल किया गया था

अन्त - आखिर, अन्जाम, समाप्त हो जाना

अन्दाम - शरीर, बदन, शरीर का हिस्सा

अनसमझ - नादान, मूर्ख

ओर - तरफ, दिशा, किनारा

ऊहाँ - वहाँ, उधर, उस तरफ

ऊने - उसने, उन्होंने

ऊरा - उसका, उसी का

ऊही - वही, वह ही

आहा - अफसोस, कष्ट, दर्द

ईता - इतना, इससे अधिक नहीं

ईति - इतनी ही, इतने से अधिक नहीं

ईं - इस, यह यही

ऐंडा - अन्धा, नाबीना, मस्त, बेफिक्र, लापरवाह

बादर - बादल, घटा

बाज़ी - खेल तमाशा, लड़ाई, शर्त

बालम - मित्र प्रेमी, शोहर, पति

बान - बाण, तीर, घायल करने वाला

बाँह - बाजू, हाथ, शरीर का अंग

बावरी - बावली, पगली, दीवानी

बत्ता - चुपचाप, खामोश, मौन

भाग - भाग्य, किस्मत, तक़दीर

बहुतारी - अधिक, ज़्यादा, काफी

बिचारो - सोचो, ध्यान दो, गौर करो

बिछौही - विरह, वियोग, दर्द

बिदा - अलग होना, दूर जाना, रूख्सत होना

बिधना - ईश्वर, मालिक, श्रृष्टि रचेयता

बर में - घूमना, चक्कर लगाना, टहलना

बिरवा - मित्र, दोस्त, भाई

बिरह - विरह, वियोग, दूरी, जुदाई

विसारो - भुलाना, भूल जाना, उपेक्षित करना

बसावन - मालिक, बाशिन्दा, मित्र

बगायत - हद तक, सीमा तक

बेकुशा - खिलना, कली से फूल बनना, इच्छा का पूरा होना

बलिहार - न्यौछावर, कुर्बान होना, निसार होना, वारी

बलल्ले - लापरवाह, गुम्राह

बिना - बगैर

बन्दा - गुलाम, नौकर, दास

बन्दी - गुलाम, क़ैदी

बेनुमा - जाहिर, प्रकट पैदा हो

बूझें - मालूम करना, जानना, समझें

बहभान्त - भाँति-भाँति की, तरह-तरह की

बहुता - अधिक, बहुत

बैद - वैद्य, हकीम

बैरी - दुश्मन, शत्रु, बुरा चाहने वाला

बेला - समय, वक्त, पहर

फान - फन्दा, रस्सी, फांसी

पत्याँ - चिट्ठी, पत्र, ख़त

पाछें - पीछे, बाद में

पराये - दूसरे, ग़ैर, अन्य

पसारों - फैलाव, बढ़ाव

पठाई - भेजी, पढ़ाई

पिछाड़ा - हराया, शिकस्त दी, मात दी

प्रान - प्राण, जान, जीवन, जिन्दगी

प्रन - प्रण, वचन, वादा, जान

पग - कदम, रास्ता

फूलवार - चमन, बाग़

पंछी - परिन्दा, चिड़िया, पक्षी

पूत - औलाद, लड़का

पोह - पूस का महीना

फेर - फिर, पुनः, दोबारा

पीत - प्रेम, मुहब्बत, इश्क

पीर - दुख, दर्द, तक्लीफ

पीतम - मित्र, दोस्त, महबूब

पैंडा - रास्ता, पगडन्डी

तान - जगह, मुकाम, स्थान

तजा - छोड़ा, तर्क किया, त्यागा

तद्बीर - विचार, गौरव फिक्र, हिकमत

तुज़िल्लु मन तशाऊ - जिसको चाहे रूसवा करे

तसद्दुक - कुरबान, निसार, न्यौछावर

तफाउत - फर्क़, अन्तर

तुम्हन - तुम, तुम ही

तुइज़्ज़ु मन-तशाऊ - इज्ज़त देवे जिसको चाहे

तू नो - तुम ने, तुम्हारी

थावा - हमला, धावा, आक्रमण

त्यागी - छोड़ने वाला, तर्क करना, त्यागने वाला

तेग़ - तलवार, अस्लाह

तैन - तुम, तुमने

सुलुस - तिहाई, तीसरा, तीन

सुम्मा - उसके बाद, बाद में पश्चात

ठाँव - जगह, मुकाम, स्थान

जात - जा रहा, रूख्सत होना

जार - आग, तपिश, बुखार

जान जानाँ - दोस्त, महबूब, मिस्र, प्रेमी

जान्ह - जाना, जाये

जावा - मित्र-दोस्त, महबूब

जावेद - सदैव, हमेशा, दाइमी

जतन - प्रयत्न, कोशिश, इलाज

जराये - जलाये

जस - प्रशंसा, तारीफ, नेकी

जग - दुनिया संसार

जुग-जुग - शताब्दी, सदयों, सैकड़ों

जन्तर-मन्तर - टोना, टोटका, तर्कीब, तावीज़

झिंगारे - झींगर

जनेव - गले में लटकाने वाला तागा/धागा

ज्वाला - आग, तपिश, चमक

जोहा - इन्तज़ार किया, प्रतीक्षा की

जोत - प्रकाश, रोशनी, नूर, दिव्य, चमक

जोसानी - जोश का पैदा होना

जोगी - साधु, फकीर, सन्त

जीवरा - जीवन, जान, जिन्दगी

चाम - चमड़ा, चर्म

छाया - आसेब, साया

चिरा - क्यों, क्यों कर

चरण - पाँव, पैर

चिन्ता - ख्याल, सोच

चकोसे - चखे, मज़ा लें

चन्द - चाँद, चन्द्रमा

च नाम अस्त - क्या नाम है?

छौरी - कुँवारी बिन ब्याही लड़की

चहार - चार, चारों हर तरफ

चहल - चालीस

चेत - समझ, होशियारी, चतुराई

छेक - रोक, बचना, रूक जाना

हिर्स् - लालच, मोह

ख़ार - काँटा, शूल, बदनाम

खलील आसा - हज़रत इब्राहीम की तरह, एक बड़े पैगम्बर

ख्वार/खार - बदनाम, परेशान, रूस्वा

ख्वान्दा - पढ़ा लिखा, शिक्षित

खूनी - खूँखार, खून का प्यासा, अत्याचारी

खूरिश - खुराक, खाद्यय पदार्थ

दारू - दवा, मदिरा, शराब, नशा

दाम - जाल, धोरवा, मूल्य

दाव - तरकीब, युक्ति, बहाना, हिकमत

दाह - आग, जलन

दरस - मुलाकात, भेंट, मिलना, दर्शन

दारमान्दा - परेशान, थका हारा, लाचारी

दिनाँ - दिन, रोज़, विशेष दिन

दुवारे - दरवाजे, जगह, स्थान

दूभर - कठिन, मुश्किल

दूती - जादूगरनी, टोना करने वाली

दोस - दोष, कुसूर, गलती

दून - आग, अग्नि, आतिश, जलन

धरती - पृथ्वी, ज़मीन, मिट्टी

दहर - ज़माना, काल, दुनिया, संसार

दूहला - शौहर, पति, दोस्त, मित्र

दियारे - स्थान, जगह, मुकाम

देस देसा - हर जगह, प्रत्येक स्थान, देश देश

देह - शरीर, बदन, जिस्म, गाँव

राचूँ - सवारूँ, बनाऊँ

राज़ - रहस्य, भेद, छुपा हुआ, पौशीदा

रूत - ऋतु, मौसम

रतन - बहुमूल्य पत्थर, मित्र, दोस्त

रची - बनाई, पैदा की, उत्पन्न की

रक़ीब - शत्रु, दुश्मन, प्रतिद्वन्द्वि

राद - बिजली की कड़क, भय, खौफ

रकब - पद, पग, कदम, थोड़ी दूरी

रिन्द - शराबी, मदिरा सेवन करने वाला

रहन - घर, रहने की जगह

रौज़ा - कब्र, दरगाह, जगह, समाधि

रूआऊँ - रूलाऊँ, परेशान, करूँ, दुख दिलाऊँ

रौगन - बीमारी, तकलीफ, अवस्था

रीत - परम्परा, रस्म, रिवाज़

ज़न्जीरा - परिवार का सिलसिला, खानदानी कड़ी, वंश

ज़ारी - रोना धोना, चीखना पुकारना, कष्ट

साजन - मित्र, प्रेमी, पति

सार - निचैड़, सम्बन्ध, मित्रता

सिपर - तलवार, धारदार लड़ने का औज़ार

सुद्ध - चिन्ता, होश, स्मरण

सिधारा - चला गया, विदा होना, अलग होना

सुरत - सुनना, ख़बर देना, ख्याल करना, ध्यान देना

सरपाँव - सिर से पाँव तक, ऊपर से नीचे तक

सुरन - खुशी, गीत, लय

सरनों - पनाह, छत्रछाया

सर्व - सुन्दर लम्बा, पेड़, सौन्दर्य की उपमा के लिए प्रयोग होता है।

सम्मान - आदर, इज़्जत, एहतराम

सन्देसा - खबर, जुबानी खबर, सन्देश, चिट्ठी पत्री

सिरीजन - श्री जन, मित्र, ईश्वर, संसार, जग, दुनिया

संग - साथ, संगत, मित्रता, पत्थर

सुवादा - स्वाद, लेन देन, मज़ा

सुहात - भला लगना, अच्छा लगना, सुन्दर

सौहे - भला लगना, सुन्दर लगना, प्रिय होना

सियाने - चतुर, चालाक, होशियार, ज्ञानी

सेती - से

सीसा - शीर्ष, सर, ऊपर

सीम - चाँदी, चमक, सफेद

शाद शादा - खुश खुश, प्रसन्न, मुबारक

शब - रात, अंधेरा

शुभ	-	मुबारक, अच्छा
शिताबी	-	जल्दी, शीघ्रता, अभी तुरन्त
शश पन्ज	-	दुविधा, संदेहजनक
शुनो	-	सुनो, ध्यान दो, चिन्ता करो
सद	-	सौ, सैकड़ों,
सिद्क़े दिल सैं	-	सच्चे दिल से, दिल की गहराई से
सर्रफनलउम्र फी		
लहूव लइब	-	खेल तमाशे में समय बर्बाद करना
सिफत	-	विशेषता, गुण, खूबी, अच्छाई
तूमार	-	बहुत लम्बा सिलसिला, दीर्घ
अम्बर	-	सुगन्ध, खुश्बूदार लकड़ी, आसमान
गुन्चा	-	कली, फूल
ग़ैब	-	पर्दा, हुवा-हुवा अनुपस्थित, जो दिखाई ना दे
फिदा	-	न्यौछावर, कुर्बान, बलिदान
फ़रजान्गी	-	विवेकता, चतुराई अक्लमन्दी, होशियार
फज़ले इलाही	-	ईश्वर की कृपा
फलक	-	आसमान, आकाश
फलम्मा अफला	-	फिर जब वह छुप गया
क़ाला ला	-	तो बोला मैं पसन्द नहीं करता
युहिब्बुल आफिलीन		छुप जाने वाले को
किस्साय	-	कहानी, कथा, दास्तान
क़ालू बला	-	बोले हाँ है

क़रन - मुद्दत, दस साल

क़लया - गोश्त के टुकड़े-टुकड़े करना, सालनदान गोश्त

काज - काम

कित - कहाँ कहाँ

कुदाम - कहाँ, किस जगह

कार - काम, कार्य, अमल

कारन - कारण, वजह, सबब्

कारी - जान लेवा, खतरनाक

काड़ - निकालना निचैड़ना

खातदारी - मित्रता, दोस्ती

कुनद - करता है

करेजा - कलेजा

कुवा - कुआँ

कोट - किला, सुरक्षित स्थान, महफूज़ जगह

कोर - किनारा, कोना, गोशा

कून्जू - खुश आवाज़ परिन्दा, सुन्दर आवाज़ पक्षी

कलहकूँ - मुसीबतें, कठिनाइयाँ, तकलीफें

कुन - करो, हो

किन्हें - किसे, किसी को

कूक रोया - बहुत रोया

कीता - क्या है, कितना

कीताँ - उनको, उन तक

केस - बाल, गैसू

गत्का - लाठी, डन्डा, शस्त्र, अस्लाह

गोपाल - मित्र, प्रेमी, दोस्त, महबूब

गह - कभी, किसी समय

घ्याम - तेज़ धूप

ग्रह - घर, मकान

गुस्ल - नहान, स्नान

गल - गले

गुलाल - लाल रंग का पाउडर

गौं - काम, आवश्यकता, जरूरत

गौहर - मोती

घोर/घूर - ध्यान से देखा, बेकार, मल्बा

ला तक्नतु - मायूस ना हो अल्लाह की रहमत से,

मिर्रहमतिल्लाह कुन्ठित ना हो ईश्वर की कृपा से

लजे - लाज, लज्जा, शर्मिन्दगी

लग - तक

लागा - लगना, होना

लाल - प्यारा, मित्र, दोस्त, बेटा

लालन - प्रेमी, महबूब, मित्र, दोस्त

लामकाँ - अर्श, आसमान, आकाश के ऊपर

लछनाँ - संकेत, निशान, आरोप, इल्ज़ाम

लरजा - लरज़ा, काँपना

लखन - प्रेम, मुहब्बत, प्रेमी

लगन - प्रेम, मुहब्बत, इश्क

लोन - नमक

लोहू - लहु, खून

लीना - ले लिया, बस में कर लिया

मा - हमें, मुझे

मात - अक्ल, होश, विवेक

मारीमार - मारपीट, हंगामा, शोर गुल

माँस - महीना गोश्त, खाल

माँ - मैं

मास - माह, महीना

माँह - मैं, अन्दर

महर - महरबानी, कृपा, करम, दया

मब्रावे - सड़ावे, गलावे

मथुरा लाल - श्रीकृष्ण गोपाल

मजाज़ी - सांसारिक, दुनियावी, असत्य, दिखावा

मरन - मौत, मृत्यु, अन्जाम, परिणाम

मुश्क अज़फर - बहुत तेज सुगन्ध वाला मुश्क

मक्कार - धोखा देने वाला, कपटी, छल करने वाला

मुक्त - आज़ाद, स्वतंन्त्र, निज़ात, फुर्सत

मक्तूब - खत, चिट्ठी

मुकरे - इन्कार कर दे, झूठ बोले, धोखा देना

मुख - मुंह, सूरत, शक्ल, ज़बान

मुखड़ा - सूरत, चेहरा, मुख

मन्ता - मित्र, दोस्त, महबूब

मन्गसर - अघन का महीना

मंगल - प्रसन्नता, खुशी, पीर के बाद का दिन

मघा - बादल

मो - मुझे, हम

मोह - मुहब्बत, वश में करना, लालच

मूरत - शक्ल, सूरत, मूर्ति

महुरत - शुभ घड़ी, मुबारक, अवसर

मियाना - बीच में, मध्य में

मीत - दोस्त, मित्र, महबूब

मेला - मुलाक़ात, भेंट, मिलन, किसी पर्व के अवसर पर खुशी मनाने के लिए किसी खास स्थान पर एकत्रित होना

नाँह - नहीं

नाड़ी - नब्ज़, नस, राग

नाग - साँप

नागिन - नाग की मादा, जहरीला साँप

नाँ - नहीं, इन्कार, मना करना

नब्बाज - हकीम, नब्ज देखने वाला

निपट - बिल्कुल, यक़ीनी

नहनू अक़रबू - हम उसके नज़दीक हैं

निदान - बिल्कुल, नितान्त, छुटकारा मिलना

निर्भाग - दुर्भाग्य, बद किस्मत, महरूम, वंचित

नरद नरदूँ - नस नस, रग रग

निस - रोज़, हर दिन

निकस - निकलना, नमूदार होना, प्रकट होना

नगरी - शहरी, बस्ती

निहाली - दुलाई, चादर

निहाँ - छुपा हुआ, पौशीदा

नीर - पानी, जल, आब, आँसू

नेज़ा - भाला, तेज़धार का नोकीला शस्त्र, हथियार

नैनो - आँखों, निगाहों

नेह - प्रेम, मुहब्बत, प्यार, इश्क़

वारी वार - जी जान से न्यौछावर, कुर्बान

वस्फ - खूबी, गुण, अच्छाई, प्रशंसा

वाली - मालिक, मौला

वस्ल - मिलन, मुलाक़ात, भेंट

हान - हानि, नुकसान, घाटा, क्षति

हथेली पर सरसों जमाना - असंभव को संभव करना

हज्व - बुराई, निन्दा

हमन - हमारा, अपना

होरी - होली

हुवैता - होना, होने वाला

हेर - ढूंढना, तलाश करना

संदर्भ

मुहम्मद अफ़ज़ल

मुहम्मद अफ़ज़ल की बिकट कहानी उत्तरी भारत की उर्दू शाइरी के प्रारम्भ का सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक है। अमीर खुसरों का हिन्दवी कलाम अब भी संदेहजनक और शोधकारों के बीव विवाद का विषय है। यूँ भी जो कुछ कलाम है, बिखरा हुआ है और संयोजित नहीं है और ना ही वह काव्य पुस्तक या संग्रह के रूप में है। इस प्रकार मुहम्मद अफ़ज़ल भी बिकट कहानी को उर्दू का पहला काव्य ग्रन्थ कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। जब तक इनसे पूर्व का कोई काव्य संग्रह प्राप्त नहीं होता, तब तक वही हमारे आदि कवि कहलायेंगे। मुहम्मद अफ़ज़ल 1035 हिजरी के अनुसार 1625 ई. में उनका देहान्त हुआ। अर्थात् यह बिकट कहानी जहाँगीर के शासन काल में लिखी गई। कहा जाता है कि यह अपने समय की बड़ी प्रसिद्ध कविता थी। परन्तु कवि के समय का या उनके हाथ की लिखी कोई पाण्डुलिपि अब तक प्राप्त नहीं रूकी है। सौ साल बाद हाथ की लिखी हुई पाण्डुलिपि हैदराबाद के इदारे अदीबयात के संग्रालय में प्राप्त हो सकी। यह 1240 (1824 ई.) हिजरी का लिखा हुआ नुस्खा प्राप्त हुआ है। इसकी दूसरी नक़ल इन्डिया आफिस लन्दन में सुरक्षित है। जो 1245 (1829 ई.) हिजरी में लिखा गया। इस प्रकार यह दोनों नुस्खें मुहम्मद अफ़ज़ल के देहान्त के लगभग सौ साल बाद लिखे गये। इन दोनों नुस्खों की मद्द से प्रोफेसर नूरूल हसन हाशमी और प्रोफेसर मसऊइ हुसैन खां ने विकट कहानी को सम्पादित किया। जो 1965 में हैदराबाद में प्रकाशित

हुआ। मुहम्मद अफ़ज़ल के जन्म स्थान के सम्बन्ध में शोधकारों के बीच बड़ा मतभेद रहा है। उन्हें झन्झाना पश्चिमी उत्तर प्रदेश, कोई दिल्ली, कोई हरियाणा तक का सम्बंध जोड़ा गया और गुजरात एवं पटना का भी बताया गया। परन्तु अधिकतर शोधकारों की राय में झनझाना की मान्यता प्राप्त हुई यद्यपि अकरम क़ुतुबी के तेरह मासे ने इसे भी गलत साबित कर दिया। इस प्रकार अकरम क़ुतुबी के तेरह मासे का बड़ा महत्व है। अकरम ने उर्दू के पहले शाइर के सम्बंध में बड़ी सच्चाई पेश की। और नारनौल को अफ़ज़ल का जन्म स्थान बताया और इस विवाद का निपटारा कर दिया। स्वयं क़ुतुबी का अफ़ज़ल के बारे में यह बयान एक बड़ा सबूत है कि अफ़ज़ल नारनौल हरियाणा में पैदा हुए। और उनके तखल्लुस गोपाल की भी तस्दीक़ या पुष्टि कर दी।

बिकट अफसाना है यह तो मोहिया
दोनों का नाँ दोई मियाना

उसी अफ़ज़ल जिसका नाँव गोपाल
कहा है नारनौल के साहिबे हाल

क़ुतुबी का भी जन्म स्थान हरियाणा का जिला रोहतक है। नारनौल और रोहतक में ज्यादा दूरी नहीं है। दोनों शहर राजधानी दिल्ली के निकट हैं। इन दोनों का देहली आना जाना हुआ करता था। दोनों उस समय के दिल्ली के कवियों से मिलते जुलते रहे है। शायद इसीलिए आबरू ने अपनी ब्याज (डाइरी) में क़ुतुबी की एक गज़ल नकल की है। अफ़ज़ल का दूसरा हवाला अब्दुल्ला अन्सारी ने अपने बारह मासे में दिया है। उनका बारह मासा 1823 के लगभग लिखा गया। अब्दुल्ला अन्सारी के यह दो शेर मुहम्मद अफ़ज़ल के सम्मान में लिखे गयेः

सरासर अहले इरफाँ शाह अफ़ज़ल
निहायत कामिल व यक्ता अकमल
उन्होंने एक विकट लिखी कहानी
किया जिसमें बयाँ सोज़े निहानी

शाह कादिर अमीस आज़म

अकरम क़ुतुबी धार्मिक व्यक्ति थे। और सुफी विचार के मालिक थे। उन्होंने अपनी काहानी को सूफियाना रंग दिया है। और अपने पीर व मुर्शिद से अपनी आस्था की तरफ तेरह मासे में खुल कर इशारा भी किया है। जिन्होंने सांसारिक मोह और प्रेम की ज्योति को दिल में जलाने का उपदेश दिया है। कवि ने स्वीकार किया है कि

जो कुटिया फिर कुतुब के पास दौड़ा
जिनका है वत्न हज़रत साधौड़ा

अबू सालेह कुतुब के तीसरे पूत
कमीस आज़म जी की औलाद और होत

मुझे उन्होंने मेरे घर में बताया
ऊहाँ सैं मैं घरों को फेर आया

इन दोहों मे दो इशारे बड़े महत्वपूर्ण है, एक साधौड़ा और दूसरा क़मीस आजम। साधौड़ा कस्बा है जो अब जिला यमुना नगर में है। यह अम्बाला से लगभग 60 कि.मी. उत्तर पूर्व में है। कहा जाता है कि महमूद गज़नवी के ज़माने में यह कस्बा आबाद हुआ। बाद में मुगल हुकूमत के अधीन था। यहाँ कुछ विद्धानों ने बड़ी शोहरत पाई थी। शाह कादिर कमीस आज़म

अपने समय के बड़े सूफी विद्वान और आत्मज्ञानी थे। जो 1519 ई. में बंगाल की राजधानी गौड़ (मुर्शिदाबाद) में पैदा हुए। उनके पिता का नाम शाह अबुल हयात कादरी था। और उनकी माता उस समय के बंगाल के सुल्तान शाह हुसैन की शहज़ादी थीं। शाह कमीस आजम की प्रशंसा मे कई विद्वानों अपनी किताबों में हवाले दिये हैं। कमीस आज़म के बहुत शिष्य थे। उनके कहने पर हुमाँयू बादशाह ने बहुत से पंजाब के कैदियों को आज़ाद किया। कहा जाता है 1555 मे बेरम खाँ ने उनसे बैत किया था। कुछ दिनों के बाद क़मीस आज़म अपने वतन मुर्शीदाबाद गये थे। वहीं पर उनका देहान्त हो गया। उनका ज़नाज़ा ताबूत में साधौड़ा लाया गया। जहाँ पर उनको दफन किया गया। यहीं पर उनका मज़ार है। उनका देहान्त 1584 ई. में हुआ। उनके मज़ार पर हज़ारों लोग जमा होते रहे। और वहां से आत्मज्ञान प्राप्त करते रहे। हज़रत क़मीस आज़म ने फारसी भाषा को छोड़कर उन्होनें यहां की क्षेत्रीय बोली में उपदेश का सिलसिला शुरू किया। जिसके कारण वह बहुत लोकप्रिय हुए। शायद यही कारण हो कि अकरम क़ुतुबी ने उनकी लोक शैली को अपनाया हो। क्योंकि तेरह मासा की लोकप्रियता में यह भाषा बहुत पसन्द की गई। जो उनके पीर व मुर्शिद की भाषा भी थी। और जनसाधारण के दिल की आवाज़ थी। इसीलिए अकरम क़ुतुबी ने भाषा शैली के अतिरिक्त उपदेश और आचरण के लिए अपने गुरू की पैरवी की है।

सुधार

लेखक के मत्न (Text) में किसी सम्पादक को परिवर्तन और तब्दीली का अधिकार नहीं। भाषा और कथन की लिखाई की ग़लतियों को दूर किया जा सकता है परन्तु सावधानी पूर्वक। तेरह मासे का कातिब कम पढ़ा लिखा अर्थात् अज्ञानी नहीं है। परन्तु मानवीय कमज़ोरी के अनुसार भूल चूक होना स्वाभाविक तथ्य है। कुछ दोहों में छोटी मोटी त्रुटियों को

देर करने का प्रयत्न किया गया है। क्योंकि कातिब से लिखने में कुछ अक्षर रह गये हैं। हम उसे उसकी मूल कह सकते हैं। दूसरा कारण लिखावट के नियम का भी है। जो उस समय में प्रचलित थे। यूँ भी विभिन्न लेखकों की लिखावट भी भिन्न-भिन्न होती है। पाण्डुलिपि की एक पंक्ति में अक्षर द की किताबत नहीं हो सकी है। वह पंक्ति निम्नलिखित हैः

कमीस आज़म की औला(द) और होत

एक शेर में अक्षर (साद) के साथ सौ लिखा गया है। जो सीन के सौ में बदल गया है।

बड़ी मेहनत सैं पाया मैने दिल दार
सीने उनके हुए काँटे काँटे सूँ गुलज़ार

एक और शेर में अज़ाँ पसे को ऐन से लिखा गया है। जब कि इसे अलिफ से होना चाहिएः

अज़ाँ पस ईं फलक मक्कार मुकरे

एक दूसरे पंक्ति में सदा को सीन की जगह साद से लिखा गया है। एक और शेर में कातिब कर लिखना भूल गया है। जिसे दुरूस्त किया गया है।

मकर कर जुल्फ और नैना लुभावें
अदा कर कर पराया घर लुटावें

पाण्डुलिपि के पहले पृष्ठ पर दो मिस्रो की तरतीब बदल गई है। लेकिन कातिव ने इस गलती को सुधारने के लिए मिस्रों पर नम्बर डाल दिये हैं।

जिसकी मद्द से शेर को दुरूस्त किया गया है। कातिब ने निम्न प्रकार से लिखा थाः

पाँव सैं गिर पकड़ कर मुझ उठाया
हमन उसका रहन तक ठोर पाया

मुहब्बत कर गले अपने लगाया
जन्म का दुख उनने एक पल में खोया

जहाँ तक संभव हो सका इन छोटी-मोटी कमियों को दूर करने की चेष्टा की गई। किताब में केवल दो शब्द नहीं पढ़े जा सके वहाँ बिन्दयाँ लगा दी गयीं। वैसे पाण्डुलिपि साफ सुथरी लिखावट का अच्छा उदाहरण है। परन्तु लिखावट की शैली के कारण पढ़ने में कठिनाई होती है। क्योंकि यह शैली आज प्रचलित नहीं। दूसरे विभिन्न बोलियों की शब्दावली को समझने में बड़ी कठिनाई होती है।

पाण्डुलिपियों में अन्तर

मुझे दुसरी पाण्डुलियां प्राप्त ना हो सकी। जो इन्डिया आफिस लन्दन या हाफिज़ शीरानी लाहौर के संग्रह में मौजूद हैं। तीसरा नुस्खा अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में कई साल पहले मौजूद था। लेकिन अब बहुत कोशिश के बाद भी नहीं मिल सका। जिसका मुझे अफसोस है। इसी कारणवश तेरह मासे की तैयारी में इन नुस्खों के मत्न (Text) का तुलनात्मक अध्ययन ना हो सका। लेकिन दूसरे स्रोतों से कुछ मद्द ले सके। जिससे थोड़ा बहुत फायदा उठाया गया है। हाफिज़ महमूद शीरानी उर्दू व फारसी साहित्य के बड़े मशहूर शोधक हैं। उन्होंने ओरियन्टन कालिज मैग्जीन लाहौर मे एक लेख प्रकाशित किया था। जिसका शीर्षक था हरियाणवी ज़बान में तालीफात उन्होंने लिखा थाः

"इसके (तेरह मासा) नुस्खे कामयाब हैं मुझे दो का हाल मालूम है। पहला इन्डिया आफिस के कुतुब खाने में महफूज़ है। और फहरिस्ते मखतूतात में व जैल न. 93, न. शुमारा 7 में दर्ज है। दूसरा नुस्खा मेरे पास है। जिसको इनायतुल्लाह वल्द हाफिज़ बख्श 1279 हिजरी में बमुकाम रोहतक नक़ल करता है"

हाफिज़ महमूद शीरानी ने अपने शोध पत्र में तेरह मासा के कुछ दोहे नकल किये हैं। मैने उनके लेख में मौजूद कुछ दोहों का मत्न अपने पास मौजूद पाण्डुलिपि से तुलना की है। कहीं कहीं कुछ अन्तर दिखाई देता है। जैसे निम्नलिखित शेर को देखियेः

मुहम्मद शाह की रहे बादशाही
लगा है सन तेरह अज़ इलाही

मेरे नुस्खे में दूसरा मिस्रा निम्न प्रकार हैः

लगा सन तेरह अज फज़ले इलाही

यह Text ज्यादा सही मालूम होता है। हाफिज़ महमूद शीरानी के नुस्खे में ये शेर इस तरह हैः

क़ुतुबी बड़े नसीब ढ़ोला घर में पाइया
कुतुबद्दीन हमीद जिन सैं मंगल गाइया

मेरे नुस्खें में बड़े की जगह तेरे है क़ुतुबी तेरे नसीब जिन सैं मंगल गाइया

एक और जगह शीरानी के मत्न में इस प्रकार लिखा हुआ हैः

कमीस आज़म जीव के औलाद और होत

मेरे सामने जो नुस्खा है। उसमें इस प्रकार लिखा हुआ हैः

कमीस आज़म जी की औलाद और होत

मौलाना शीरानी के नुस्खे का एक शेर और भी हैः

गवायें सोन्च और गफलत माँ अठीस
फन्सा दर दाम आँ शैतान इब्लीस

मेरे नुस्खे में मिस्रा इस प्रकार है फन्सा दर दाम इस शैतान इब्लीस मौलाना शरीनी के नुस्खे का मत्न (Text) सही लगता है। उनकी पाण्डुलिपि में नगारा लिखा हुआ है। जब कि मरे नुस्खे में नकारा लिखा हुआ है। इस शेर के बाद दूसरे शेर में भी थोड़ा सा अन्तर मौजूद है। शब्द राद दोनों मिस्रों में सही नहीं लगता। मेरे नुस्खे में दूसरे मिस्र में राद की जगह जीव है। इसे सही समझ कर मत्न में इस को प्राथमिकता दी गई है। इसके बाद का शेर है उसमें भी मेरी बिरहन और मुझे बिरहन का थोड़ा सा फर्क़ मौजूद है। एक और जगह लिखने में शायद मूल हुई हैं रिन्द को अन्द लिख दिया गया है। मौलाना शीरानी के नुस्खें में वाद की लिखावट से काम लिया गया। जब कि मेरे नुस्खे में पुरानी लिखावट मौजूद है जैसे ऊधर लिखा हुआ है शीरानी के नुस्खें में उधर है। होना भी चाहिए था क्योंकि शीरानी का नुस्खा बहुत बाद में लिखा गया। दोनों में लगभग सौ साल से भी अधिक का अन्तर है। एक और दोनों मिस्रो के अनतर का उदाहरण देखिये। लाहौर वाले नुस्खें में यह शेर इस प्रकार हैः

अरे क़ुतुबी कहा तक होय ज़ारी
मिटे नाहीं तमामी उम्र खारी

व्यक्तिगत नुस्खे में मिटे की जगह बीते है जो बहुत सटीक लगता है क्योंकि उम्र के मिटने का इस्तेमाल आम नहीं है। बोल चाल में उम्र के बीतने का प्रयोग होता है।

अरे क़ुतुबी कहा तक होय ज़ारी
बीते नाहीं तमामी उम्र ख़ारी

हाफिज़ शीरानी मरहूम ने अपने लेख में एक शेर नक़ल किया हैः

अरे आखिर हुआ आसाठ सारा
मिला नाहीं अझूँ तक प्रेम प्यारा

निजी पाण्डुलिपि में दूसरी सतर में अन्तर दिखाई देता हैः

मिला नाहीं अझूँ लक पीव प्यारा

इसी मत्न (Text) को किताब में शामिल किया गया है। एक और उदाहरण प्रस्तुत हैः

बिना ढूँढ़न न पाये पीव प्यारा

निजी नुक्सें में यह मिस्रा इस प्रकार हैः

बिना ढूँढे ना पाये है प्यारा

लाहौर की पाण्डुलिपि में निम्नलिखित शेर है। जो मेरे नुस्खे में नहीं हैः

पहले में तीरथों और जग लिया फिर
कहीं पाया नहीं हारा में आखिर

संख्या के अनुसार दो सौ अट्ठाइसवाँ शेर है। मेरे समक्ष पाण्डुलिपि में इस शेर के बदले दूसरा शेर लिखा हुआ है। यह अन्तर मत्न के अनुसार विचार पूर्वक हैः

मेरा वो इश्क का पूरा जी लेता
सरीह खार न कर बुत्ता जो है इत्ता?

और भी कई जगह मामूली अंतर दिखाई देता है। क़ुतुबी ने इसे भी बिकट अफसाना कहा है। मौजूदा नुस्खा में यह शेर हैः

बिकट अफसाना है यह तो मोहिया
दोनों का नाँ है दोई मियाना

लाहौर वाले में यह निम्न प्रकार दर्ज हैः

बिकट अफसाना का है यह तो भइया
दोनों के नाँ जना है दोइ मियाना

लाहौर का नुस्खा लगभग सवा सौ साल बाद का है। इतने समय में भाषा का रूप शब्दावली और प्रयोग के साथ लिखावट में अन्तर का होना स्वाभाविक है। जिनका अध्ययन भी आसान नहीं है। मत्न (Text) का

सुधार करना और सही मत्न (Text) का चयन करना साहित्य के शोध का सबसे कठिन कार्य है। हर पग पर गलती और गुमराह होने का सन्देह बना रहता है। मुख्य रूप से प्राचीन पुस्तकों के मत्न को संयोजित करने में प्रतिष्ठा दाव पर लगी रहती है। फिर भी जहाँ तक संभव है सम्पादक इस जोखिम भरे काम को करता है और आने वाली नस्लों के लिए स्वअवसर छोड़ जाता है। ताकि शोध के कार्यों का सिलसिला अग्रसर रहे। ताकि आने वाले समय में कोई अन्य पाण्डुलिपि के मिलने से शोध में योगदान हो सके। और बेहतर से बेहतर काम सामने आ सके। कोई भी व्यक्ति और काम संसार में पूर्ण होने का दावा नहीं कर सकता। जग में केवल ईश्वर की जाति है जो हर प्रकार से सम्पूर्ण है। बाक़ी सभी अधूरे हैं।

अध्ययन स्रोत

1. आबे ह्यात-मुहम्मद हुसैन आज़ाद- लाहौर
2. आजकल-देहली-दिसम्बर 1958 ई.
3. उर्दू-कराची, अन्जुमन तरक्क़ी उर्दू, जुलाई 1967 ई.
4. उर्दू मे बारह मासे की रिवायत-तन्वीर अहमद अलवी, देहली, 2000 ई.
5. बारह मासा नेह-मुरत्तिब नज़रूल हसन क़ादरी, रामपुर 2005 ई.
6. तारीख़े अदब उर्दू-जिल्द दोम, जमील जालबी, लाहौर 2009 ई.
7. बिकट कहानी-मुहम्मद अफ़ज़ल, मुरत्तिब नूरूल हसन हाशमी, हैदराबाद 1965 ई.
8. तज़किरा रेख़्ता गोयां-गुर्देज़ी, औरंगाबाद, 1933 ई.
9. तज़किरा शोरा-ए-उर्दू मीर हसन, देहली 1944 ई.
10. तज़ककिरा-ए-हिन्दी, मुसहफ़ी, देहली 1933 ई.
11. तेरह मासा-अकरम क़ुतुबी, मख़तूता, अब्दुल हक़ देहली
12. दीवाने आबरू-मुरत्तिब मुहम्मद हसन, नई दिल्ली 1990 ई.
13. दीवाने हातिम-मुरत्तिब अब्दुल ह़क़, देहली, 2010 ई.
14. दीवान ज़ादा-मुरत्तिब अब्दुल हक़, नई देहली, 2011 ई.
15. दीवाने सज्जाद-मुरत्तिब-शमीम अहमद, मुज़फ़्फ़रपुर 1978 ई.
16. दीवाने-फाइज़-मुरत्तिब मसऊद हसन रिज़वी, अलीगढ़ 1965 ई.
17. दीवाने यकरू-मुरत्तिब शमीम अहमद, पटना 1975 ई.
18. दीवाने शाकिर नाजी मुरत्तिब-फ़जलुलहक़ देहली 1976 ई.
19. दीवाने यक़ीन मुरत्तिब फ़रहत फ़ातिमा, नई दिल्ली

20. सरगुजिश्त हातिम-मुरत्तिब मोहयुद्दीन कादरी ज़ोर, हैदराबाद 1966 ई.
21. शेरूल अजम-शिब्ली नोमानी अलीगढ़, 1325 हिजरी
22. अयारिस्तान-काज़ी अब्दुल वदूद, पटना
23. गुले राना-अब्दुलहई, आज़मगढ 1353 हिजरी
24. मजालिसे रंगीन-साआदत यार खाँ रगींन, 1964 ई.
25. मख़ज़ने निकात-क़ायम चाँदपुरी, लाहौर-1960 ई.
26. मुआसिर पटना-1952 ई.
27. निकातुश्शुआरा-मीर तक़ी मीर, औरंगाबाद, 1935 ई.
28. दीवाने वली (मखतूता) अब्दुल हक़
29. कुल्लियाते वली मुरत्तिब-नूरूल सहन हाशमी, 1945 ई.
30. दीवाने आबरू (मखतूता) अब्दुल हक़
31. दीवाने शाकिर नाजी (मखतूता) अब्दुल हक़

تیرہ ماسہ : اکرم قطبی

[illegible]

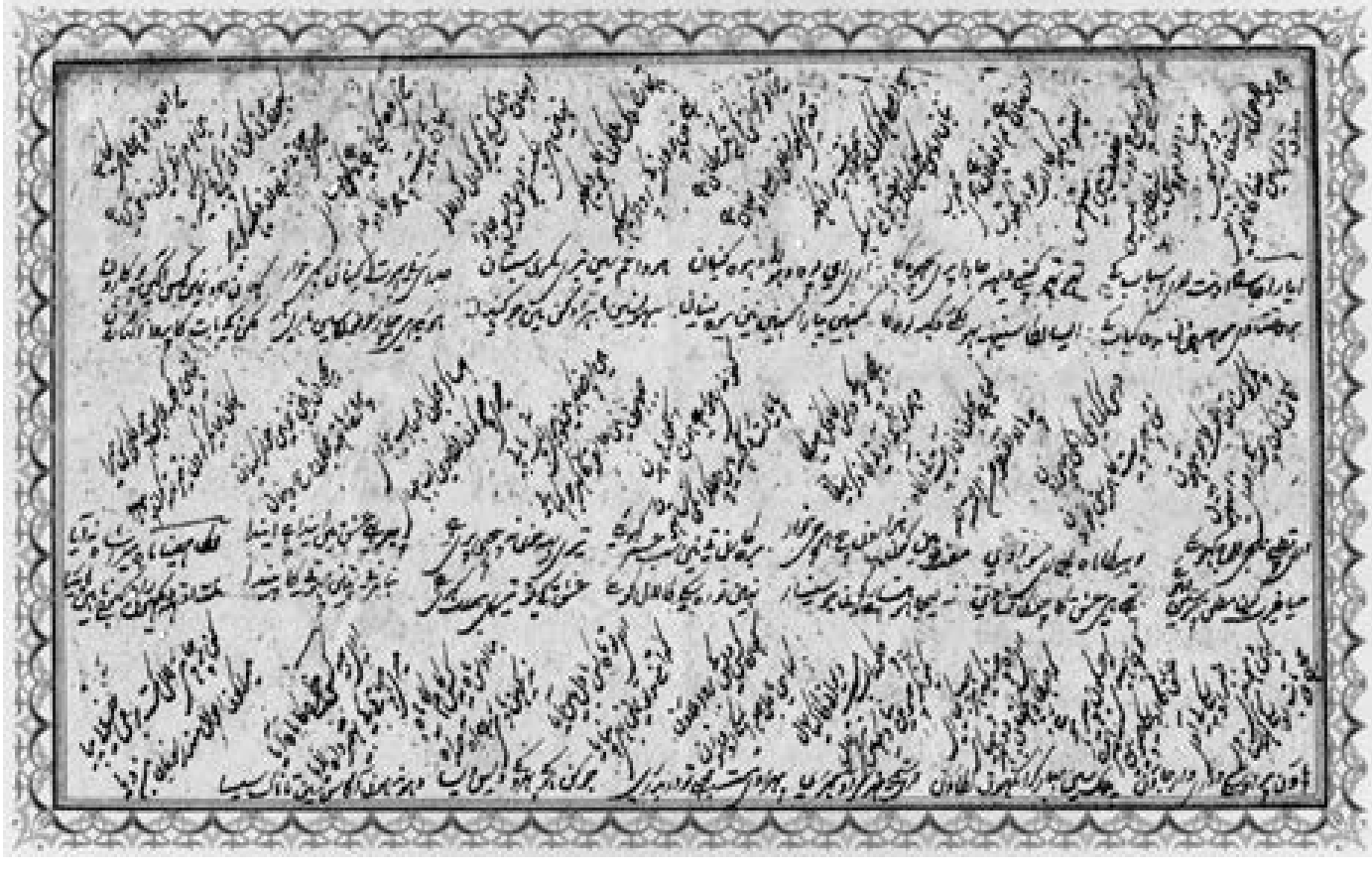

[illegible]

هو الاول هو الآخر هو
هو الظاهر هو الباطن هو

انتخاب آبرو

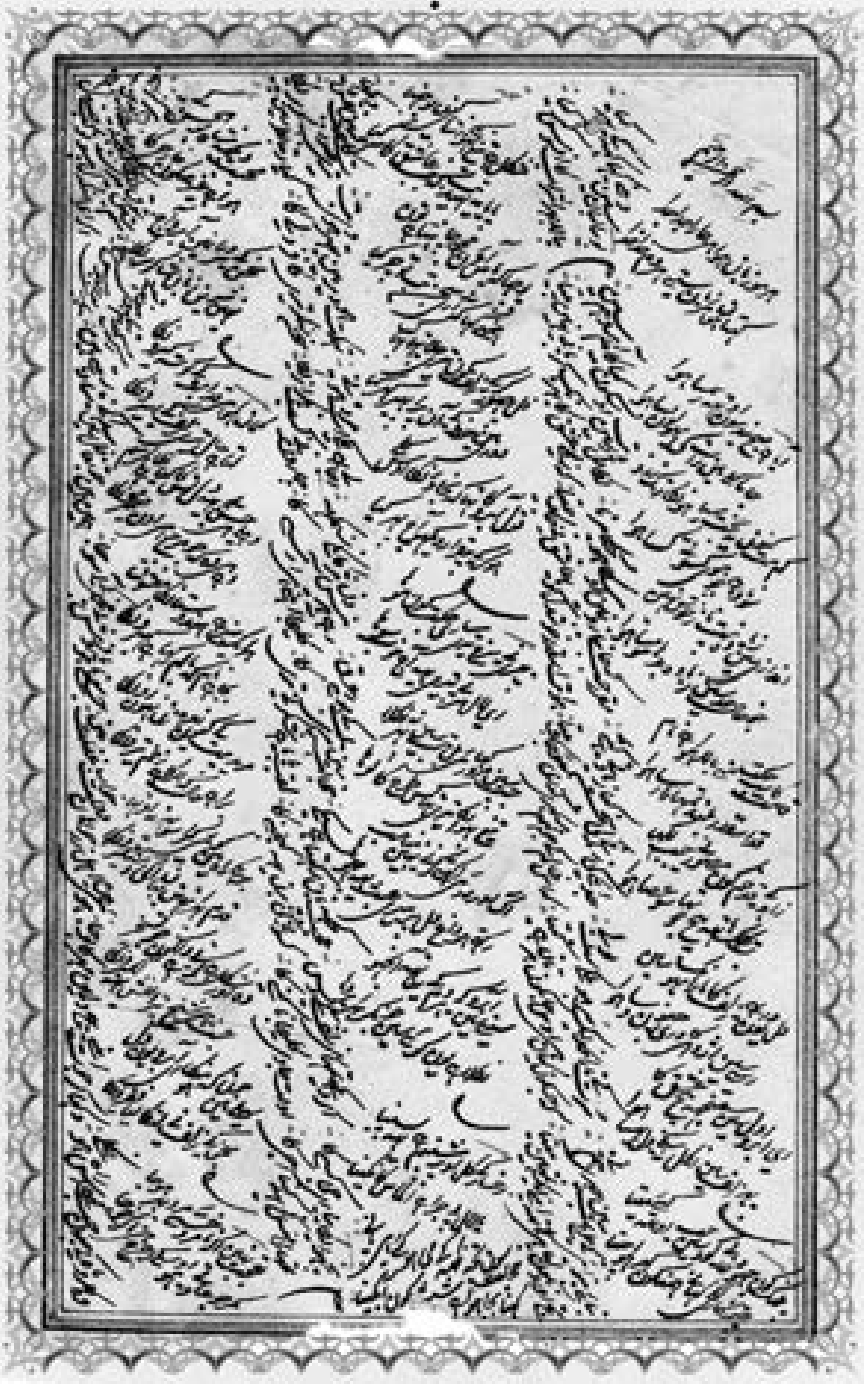

انتخاب حاتم

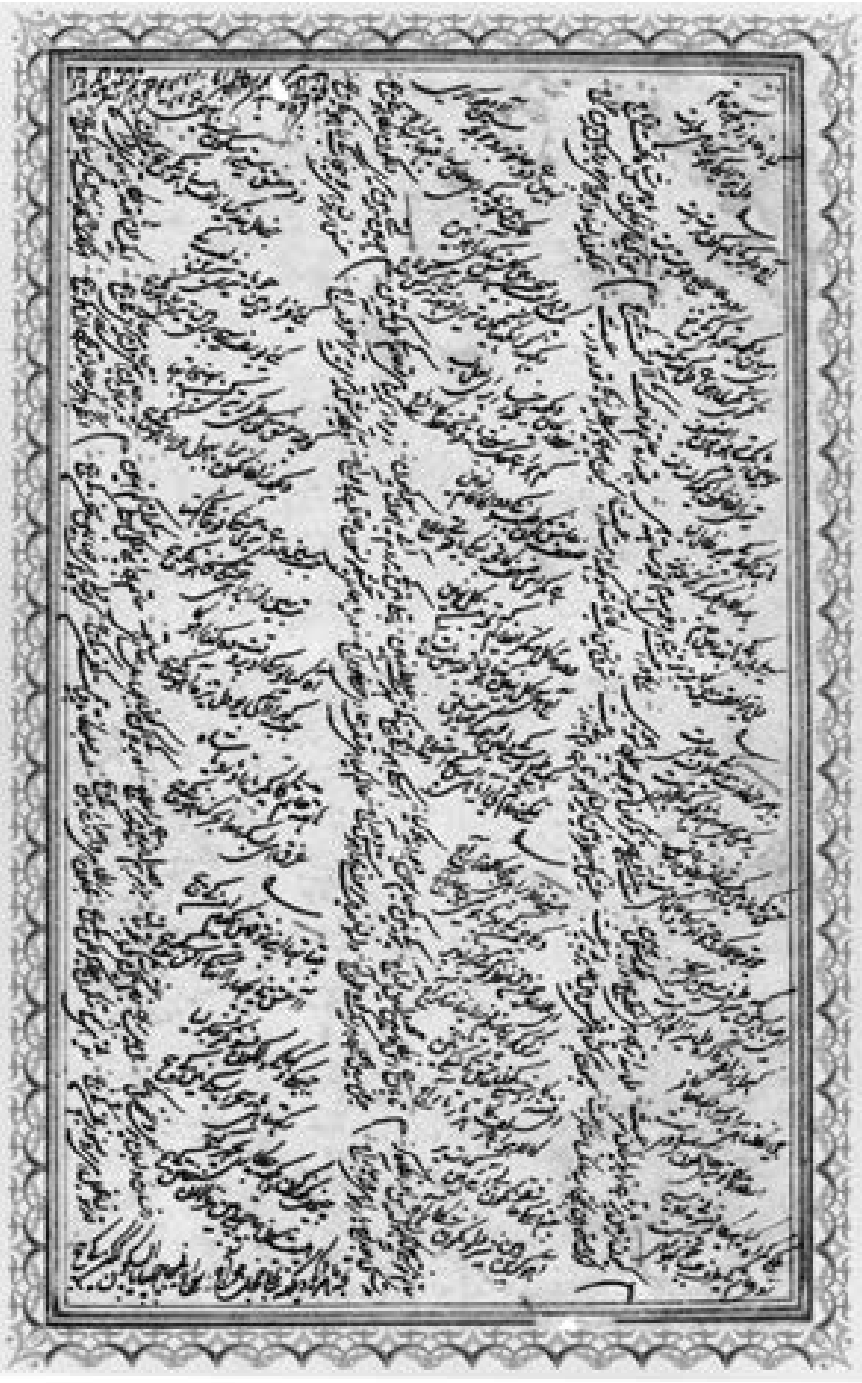

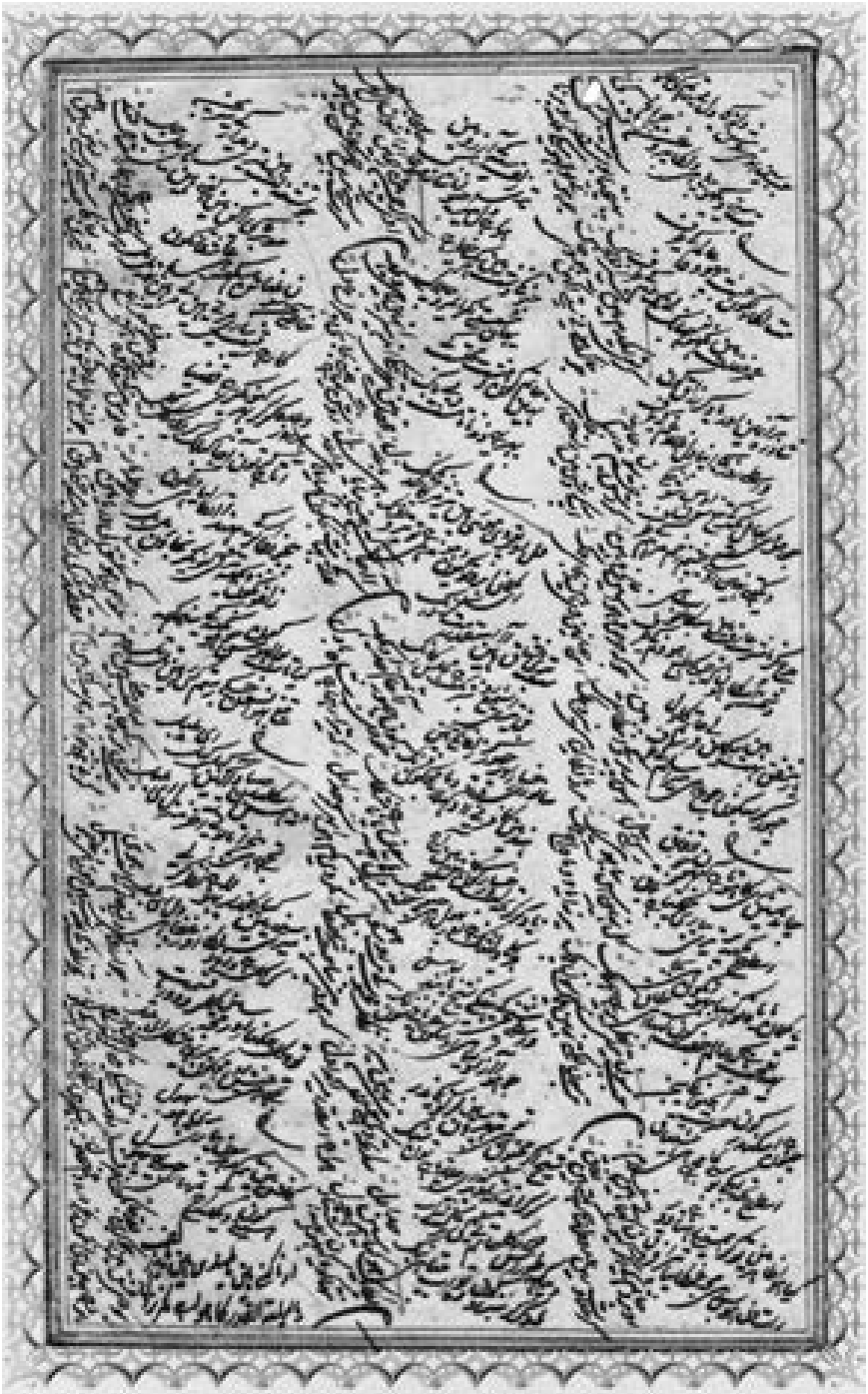

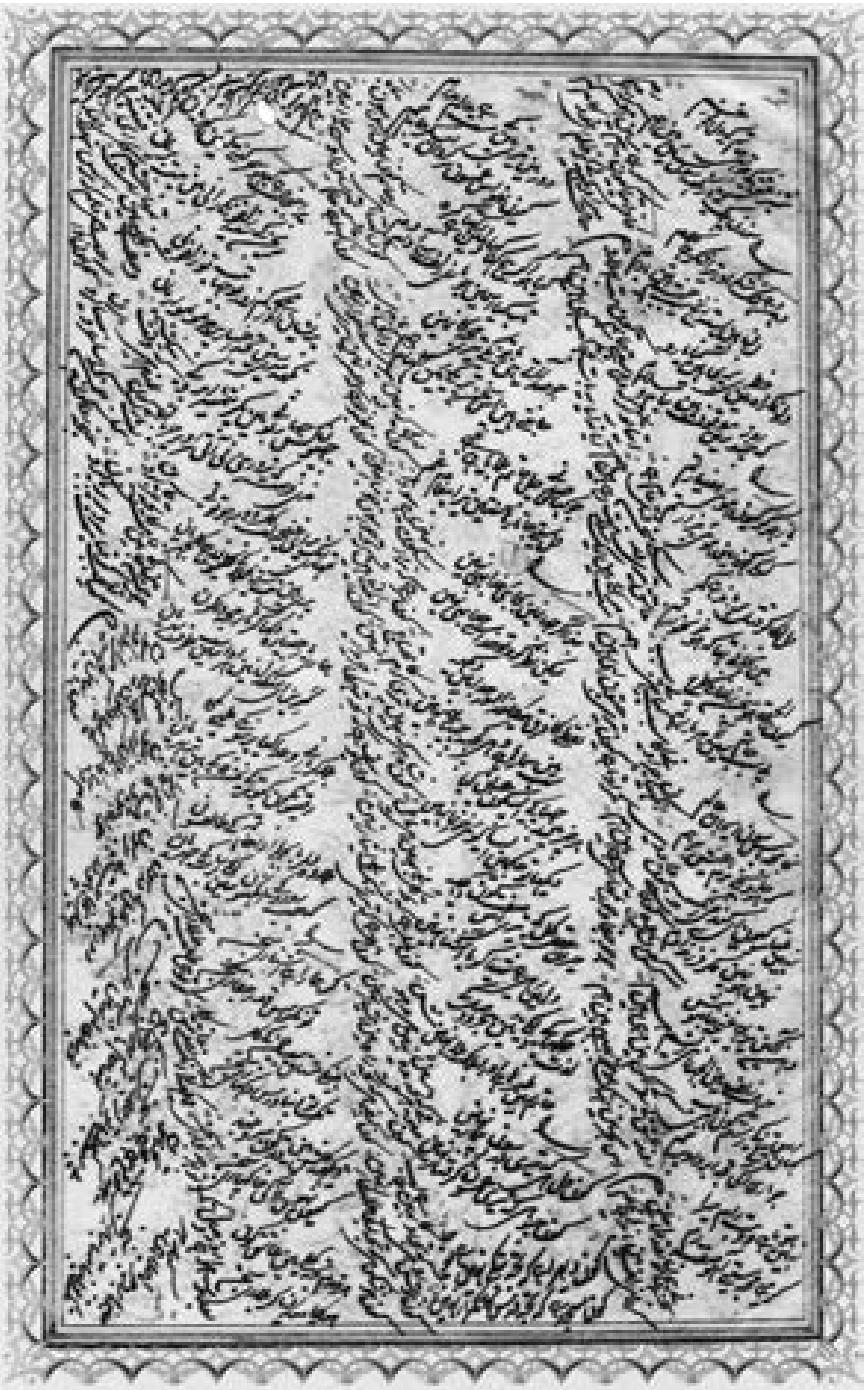

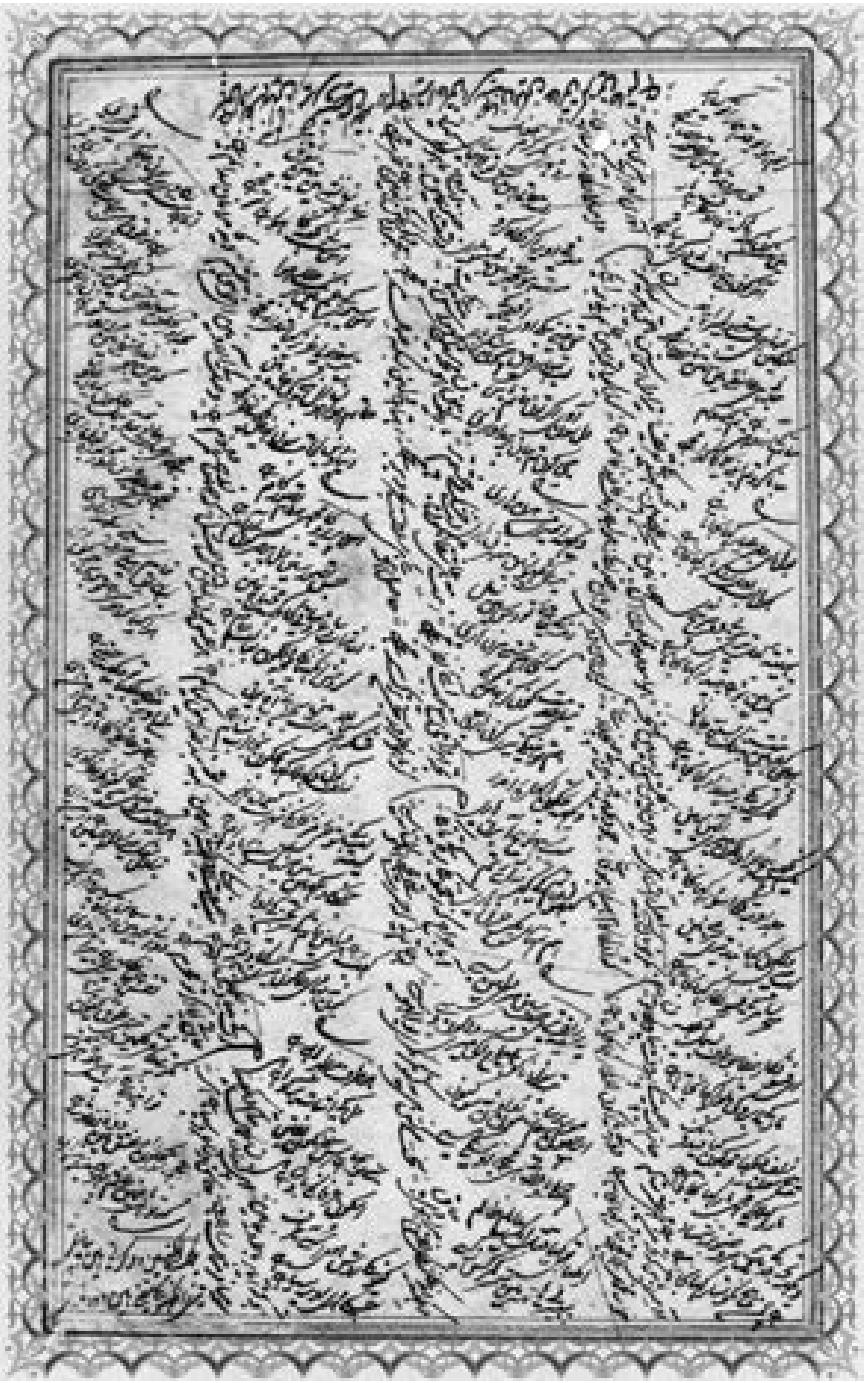

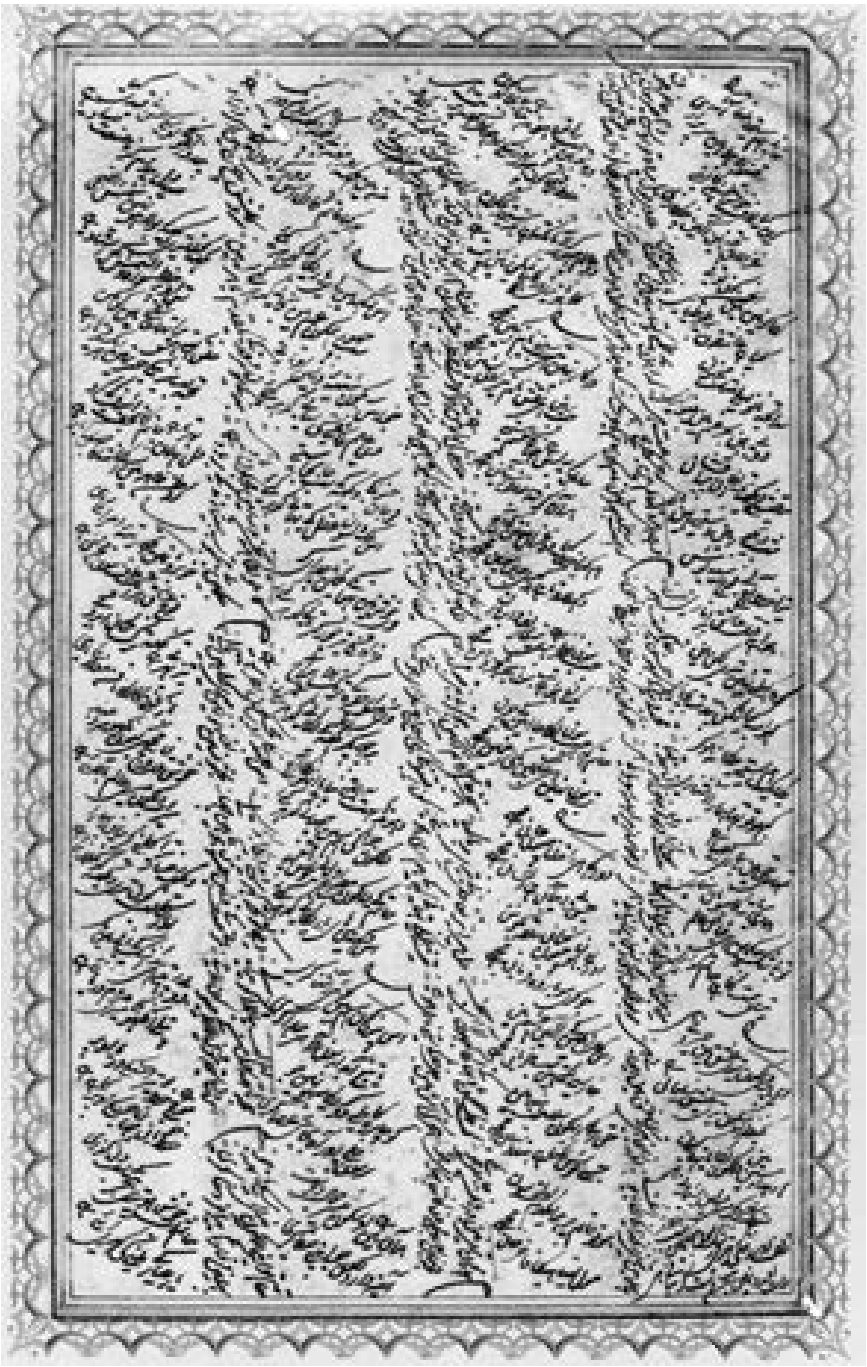

[illegible]